अर्चना

The Adorations

प.पू. आदिशक्ति माताजी श्री निर्मला देवी के १००० नाम

The 1000 Names of Her Holiness Adishakti Mataji Shri Nirmala Devi

अर्चना

The Adorations

प.पू. आदिशक्ति माताजी श्री निर्मला देवी के १००० नाम

The 1000 Names of Her Holiness Adishakti Mataji Shri Nirmala Devi

प.पू. माताजी श्री निर्मला देवी

सहजयोग संस्थापिका

विषय सूची

1	प्रार्थनायें (PRAYERS)	5
2	अर्चना (ॲडोरेशन्स) (THE ADORATIONS)	7

प्रार्थनायें
PRAYERS

ॐ त्वमेव साक्षात् श्रीगणेश साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः।

श्रीगणेशजी अपनी अबोधिता, मन की शुद्धता अवधान तथा बुद्धि हमें प्रदान करने के लिये कृपया प्रसन्न हो जायें। श्रीआदिशक्ति श्रीमाताजी के चरण कमलों पर अर्चना समर्पित करने के लिये श्रीगणेशजी हमें आशीर्वाद दे और अनुज्ञा दे।

Om Twameva Sakshat Shri Ganesha Sakshat Shri Adishakti Mataji Shri Nirmala Devyai Namo Namah.

May Shri Ganesha kindly be pleased to bestow on us His innocence, and purity of mind, attention and intellect. May He bless us and permit us to offer the adorations at the lotus feet of Shri Adishakti Shri Mataji.

ॐ त्वमेव साक्षात् श्रीजीझस-मेरी साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी - श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः।

हमारे प्रभु श्रीजीझस और माता मेरी हमें निर्विचारिता प्रदान करने के लिये प्रसन्न हो जायें। श्रीजीझस-मेरी माता श्रीआदिशक्ति श्रीमाताजी के चरणकमलों पर अर्चना समर्पित करने के लिये हमें आशीर्वाद दे और अनुज्ञा दे।

Om Twameva Sakshat Shri Jesus Mary Sakshat Shri Adi Shakti Mataji Shri Nirmala Devyai Namo Namah.

May our lord Shri Jesus Christ and Mother Mary be pleased to bestow on us thoughtlessness. May he bless us and permit us to offer the adorations at the lotus feet of Shri Adishakti Shri Mataji.

ॐ त्वमेव साक्षात् श्रीसरस्वती साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः।

देवी सरस्वतीजी हमारी वाणी शुद्ध करने के लिये प्रसन्न हो जायें। देवी सरस्वती जी श्रीआदिशक्ति श्रीमाताजी के चरणकमलों पर अर्चना समर्पित करने के लिये हमें

आशीर्वाद दे और अनुज्ञा दे।

Om Twameva Sakshat Shri Saraswati Sakshat Shri Adi Shakti Mataji Shri Nirmala Devyai Namo Namah.

May Goddess Saraswati be pleased to purify our speech. May she bless us and permit us to offer the adorations at the lotus feet of Shri Adi Shakti Shri Mataji.

समस्त देवतायें हमारे चक्रों पर उपस्थित रहने के लिये प्रसन्न हो जायें और श्रीआदिशक्ति श्रीमाताजी के चरणकमलों पर अर्चना समर्पित करने के लिये हमें आशीर्वाद दे।

May all deities be pleased to be present on our Chakras and bless us to offer the adorations at the lotus feet of Shri Adi Shakti Shri Mataji.

श्रीआदिशक्ति श्रीमाताजी प्रसन्न हो जायें और उनके चरणकमलों पर अर्चना समर्पित करने के लिये अनुज्ञा देने की कृपा करें।

May Shri Adi Shakti Shri Mataji be pleased to kindly permit us to offer the adorations at Her lotus feet.

सर्व मंगल हो जायें। हमारी कुण्डलिनियाँ सहस्रार में स्थिर हो जायें।

हमारा सामूहिक अवधान श्रीआदिशक्ति के चरणकमलों पर स्थिर हो जाये।

May all be auspicious. May our Kundalinis rest in the Sahasraras.

May our collective attention rest at the lotus feet of Shri Adi Shakti.

अर्चना
THE ADORATIONS

ॐ त्वमेव साक्षात् …… नमो नमः।

Om Twameva Sakshat.....Namo Namah. .....Our repeated grateful salutations

1. **श्रीमाताजी -** सृष्टि की पवित्र माता। सर्वशक्तिमान पिता परमेश्वर के प्रेम का आविष्कार करने के लिये आप ने सृष्टि का निर्माण किया। अपने प्रेम से, करुणा से और शक्तियों से मानवजाति को मुक्त करने के लिये आपने अवतार लिया। हजारों आत्मसाक्षात्कारी आत्मायें, जिनका अस्तित्व शुद्ध पावन हो गया है, उनकी आप निर्मल दिव्य माता हो। ये साक्षात्कारी आत्मायें निर्मलाईट्स् अर्थात् निर्मलानुयायी हैं जिन्हें आपने अपने शरीर में ग्रहण कर लिया है। जिनकी कृपा अपने बच्चों के सन्निध सदैव विद्यमान रहती है ऐसी अत्यंत प्रेममयी माता आप हैं।

   Shri Mataji - The Holy Mother of the Creation. You have created the Creation to manifest the love of God Almighty, Parameshwara, the father. You have incarnated to redeem the humankind with your love, compassion and powers. You are immaculate Divine mother of a myriad of realised souls with purified beings, the Nirmalites, to whom you have taken in your being. You are the most loving mother whose grace is eternally present with your children.

2. **श्रीमहाराज्ञी -** सृष्टि की पवित्र माता परमेश्वरी, सर्वश्रेष्ठ, परम प्रधान देवी, सर्वशक्तिमान परमेश्वर की भार्या तथा शक्ति, सृष्टि की सार्वभौम महारानी.

   Shri Maharajni - The Sovereign Empress of the Creation as Parameshwari, the Supreme Goddess, the spouse and power of Parameshwara, God Almighty.

3. **श्रीदेवकार्यसमुद्यता -** सृष्टि की पवित्र माता। देवकार्य की परिपूर्ति के लिये आपने अवतार लिया। सर्वशक्तिमान परमेश्वर की इच्छाशक्ति और

उसके पश्चात् सृजन की शक्ति, जिस का अनुसरण उत्क्रान्ति की शक्ति ने किया और अन्त में परमात्मा को प्रतिबिंबित करने के लिये आप का यह अवतार था। ईश्वरविरोधी साहसी शक्तियों से सृष्टि को बचाने के लिये आपने बाद में अनेक वार देवकार्य की परिपूर्ति के लिये अवतार लिया।

Shri Deva-kaarya-samudyataa - You have incarnated to accomplish Divine Mission. God Almighty's power of desire and then as the power of creation followed by the power of evolution, for ultimately reflecting Him. You have incarnated number of times later to accomplish Divine mission of saving the creation from anti-God forces.

4. **श्रीपरब्रह्म-स्वरूपा -** सर्वशक्तिमान् परमेश्वर अर्थात् परब्रह्म से पूर्णतया एकाकार होने से आप परब्रह्म का स्वरूप हैं।

   Shri Parabrahma-swaroopaa - You are the one whose form is Parabrahma being in absolute oneness with Parabrahma, the God Almighty.

5. **श्रीसदाशिव-हृदयस्था -** आप श्रीसदाशिव के हृदय में स्थित हैं।

   Shri Sadashiva-hridayasthaa - You are in the heart of Shri Sadashiva.

6. **श्रीसदाशिव-हृदय-धारिणी -** आप वह हैं जिनके हृदय में श्रीसदाशिव का वास है।

   Shri Sadashiva-Hridaye-Dhaarini - You are the one in whose heart Shri Sadashiva resides.

7. **श्रीपरात्परा -** आप परम से भी परम प्रभु हैं। परब्रह्म के दो रूप हैं, पर और ब्रह्म, पर केवल, परिपूर्ण शाश्वत और सृजन के पूर्व की अवस्था है। ब्रह्म यह दूसरा भाग सृष्टि निर्मिति से संबंधित है। ब्रह्म भाग का रूपान्तरण सर्वशक्तिमान परमेश्वर में और उसकी शक्ति (परमेश्वरी) में होता है। आप पर रूप से एकीकृत हैं। ब्रह्म रूप में आप ने सृजन का आविष्कार किया है।

Shri Paraat-paraa - You are Supreme of the Supreme. Parabrahma has two aspects, Para and Brahma. The Para is absolute, eternal and before creation. The Brahma is involved in the creation. The Brahma part is transformed into God Almighty (Parameshwara) and His power (Parameshwari). You are united with the Para aspect. You have manifested the creation in the Brahma aspect.

8. **श्रीअपरम्पारा -** श्रीआदिशक्ति, आप सर्वव्यापिनी और उससे भी परे हैं। आप से परे कुछ भी नहीं।

Shri Aparam-paaraa - Shri Adi Shakti, you are all pervading and beyond. There is nothing beyond you.

9. **श्रीअपारा -** अपने निर्गुण तथा निराकार अर्थात् गुणविहीन व आकार विहीन अवस्था में आप अथांग सागर के समान हैं।

Shri Apaaraa - You are like fathomless ocean in your Nirgun, Nirakar i.e. attributeless and formless state.

10. **श्रीअनाद्या -** आप आरंभरहित है क्योंकि सृजन के पूर्व भी आप विद्यमान थी।

Shri Anaadyaa - You are without beginning, as you existed even before the creation.

11. **श्रीब्रह्मबीजा -** आप ब्रह्म का बीज हैं। 'सृजन की प्रक्रिया की तुलना किसी बीज के अंकुरित होने से होती है। सृजन के प्रारंभ में उसकी प्रत्यक्ष क्रिया का आरंभ होने से पूर्व, ब्रह्म बीज बन जाता है। जिसके सारे पहलू परिपूर्ण हो, ऐसे किसी पूर्ण स्फटिक के समान वह होता है। बीज और उसकी प्रस्फुटित, अंकुरित होने की शक्ति इन दो भागों में बीज का विभाजन होता है।' (द क्रिएशन)

Shri Brahma Beeja - You are the seed of Brahma.
"The process of creation is comparable to sprouting of a seed.

In the beginning of creation, before starting its activity, Brahma becomes seed. It is like a perfect crystal with all its facets complete. The seed gets divided into the seed and its germinating power". (The Creation)

12. **श्रीआदि-ब्रह्म-नाद** - आप आदि(म) दिव्य नाद हैं। 'परब्रह्म के जागृत होने से उसकी शक्ति क्रिया में स्फुरित है। वह ब्रह्मबीज में दिव्य प्रेम की लहर को जागृत करती है। यह स्फुरण आदिम स्पंदन नाद को निर्माण करता है।' (द क्रिएशन)

Shri Aadi Brahmanaad - You are the Primordial Divine sound. "With the waking of Parabrahma his power pulsates into activity, awakening a wave of Divine love in the Brahma beeja. This pulsation creates the Primordial vibrating sound." (The Creation)

13. **श्रीआदि-वलय** - आप आदि वलय हैं। 'आदिम स्पन्दन नाद ने उसके हृदय स्थान के सभी ओर वलयाकार लहरों का उत्सर्जन किया। इन लहरों के परिणाम स्वरूप आदि वलय का निर्माण हुआ।

Shri Aadi Valaya - You are the Primordial Circle.
"The waves of Primordial Vibrating sound emitted circular waves around its nucleus. These waves resulted in creating Adi Valaya." (The Creation)

14. **श्रीआदि-बिन्दुः** - आप आदि बिन्दु है। दूसरी अवस्था में आदि वलय की स्थिति से सृजन अपनी ऊर्जा सुई के अग्रबिंदु के समान उस बिंदु पर एकाग्र कर के आदि बिन्दु में चालित हो जाता है। (द क्रिएशन)

Shri Aadi Bindu - You are the Primordial point or dot. In the second stage, the creation moves from the state of Primordial Circle into the state of Primordial Point by pin pointedly concentrating its energy into a dot." (The Creation)

15. **श्रीबिन्दुः** - अपने अहंभाव को धारण कर के जो आदिशक्ति होती ह उसका प्रतिनिधित्व करने वाला बिंदु आप है। 'आदि वलय और

पश्चात् आदि बिन्दु रूप में महाशक्ति बिन्दु और वलय में टूट जाती है।' (द क्रिएशन)

Shri Bindu - You are the dot which represents the Primordial Power having assumed her ego (Aham Bhava i.e.identity.) "Shri Mahashakti as Adi Valaya and then Adi Bindu,breaks into Bindu and Valaya."(The Creation)

16. **श्रीवलय -** आदिशक्ति की शक्ति का प्रतिनिधि होता हुआ जो वलय है, वह आप है।

Shri Valaya - You are the Circle, which represents the power of Adi Shakti.

17. **श्रीअजा -** आप अजन्मा है क्योंकि ऐसा समय-काल कभी भी नहीं था, जब आप वहाँ नहीं थी।

Shri Ajaa - You are unborn as there was never a time when you were not there.

18. **श्रीअक्षया -** आप क्षयरहित हैं।

Shri Akshayaa - You are without decay.

19. **श्रीअनन्ता -** आप अनन्त अर्थात् अन्तविहिन हैं क्योंकि सारे सृजन का अस्तित्व रुकने के बाद भी आप अपने स्वामी के साथ रहती हैं

Shri Anantaa - You are without end as you live with your lord even after the whole creation ceases to exist.

20. **श्रीआदि-गतिः -** सृजन या सृष्टि का अस्तित्व आने से पूर्व जो हुई वह आदि गति (हलचल) आप हैं।

Shri Aadigati - You are the primordial movement before the creation came into existence.

21. **श्रीआदि-विलम्ब -** सृष्टि का अस्तित्व आने से पूर्व जो आदि

समय (आदि काल) था वह आप हैं।

Shri Aadivilamba - You are the primordial time before the creation came into existence.

22. **श्रीपरमेश्वरी -** आदि पुरुष अर्थात् विराट के सहस्रार में जो वास करते हैं उन परमेश्वर की शक्ति और प्रिय पत्नी आप हैं।

Shri Parameshwari - You are the beloved spouse, the power of Parameshwara who resides in the Sahasrara of the Primordial Being.

23. **श्रीईश्वरी-** आदि पुरुष अर्थात् विराट के हृदय में वास करने वाले सर्वशक्तिमान ईश्वर की आप शक्ति हैं।

'वह सर्वशक्तिमान ईश्वर की साक्षीभूत शक्ति हैं। श्रीआदिशक्ति अपनी सृजन लीला के औचित्य की परीक्षा करने वाली और उसे निश्चित करनेवाली भी होती हैं। इस परम सर्वश्रेष्ठ शक्ति से वह मनुष्य प्राणी को बोधित करेगी या तो फिर पूरी लीला को नष्ट कर देगी।' (द क्रिएशन)

Shri Ishwari - You are the power of God Almighty residing in the heart of Primordial Being, the Virata.
"She is the witnessing power of God Almighty. With this power, Shri Adi Shakti also judges and decides on the propriety of Her play of creation. With this paramount power She may enlighten the human being with awareness or destroy the play." (The Creation)

24. **श्रीब्रह्माण्ड-जननी -** जो हजारों विश्वों से बनी हुई है ऐसी सृष्टि की आप माता हैं।

Shri Brahmaanda Janani - You are the mother of the Creation which comprises a myriad of universes.

25. **श्रीप्रणवात्मिका -** आप प्रणव में हैं। प्रणव सर्वसम्पूर्णता, सर्वज्ञता और सर्वसंघटन की शक्ति है, जो आप के अस्तित्व से निःसृत होती है।

'उनकी ईश्वरी शक्ति का तेजो वलय (औरा) ही सम्पूर्ण चेतना है। अथवा वह उनके प्रेम का श्वास-उच्छ्वास ही है। वह प्रेम की दिव्य शक्ति है। (दी क्रिएशन)

Shri Pranavaatmika - You are in the Pranava, the all integrating, all knowing and all organising power emanating from your being.

"It is the total awareness which is the aura of Her Ishwari power or which is the breathing of her love. It is the Divine Power of love. (The Creation)"

26. **श्रीप्रणव स्वरूपा -** आप वह हैं जो प्रणव का आकार या रूप हैं।

सन्तों और आत्मसाक्षात्कारी आत्माओं द्वारा दिव्य शीतल लहरी के रूप में उसकी अनुभूति या संवेदना की जाती है। समर्थ रामदास (छ.शिवाजी महाराज के गुरु) कहते हैं, 'आदिमाया ब्रह्म से आविर्भूत हुई। उन्हें आठ रूपों से बनी प्रकृति इस प्रकार से जानते हैं। तीन गुणों में और सजीव प्राणियें में वह मूर्त रूप में है। यह माया ही मन्द वायु अथवा वायु है ऐसा जान लीजिये। इस वायु में जो बोध है वही श्रीईश्वर हैं। वे सर्वेश्वर हैं अर्थात् सर्वशक्तिमान ईश्वर।' (दासबोध)

श्रीज्ञानेश्वर कहते हैं, 'मेरे शब्दों के द्वारा मैं आप को निराकार का आकार या रूप दिखाऊंगा। जो इंद्रियों से भी परे है, उसका अनुभव मैं आप को इंद्रियों पर दूंगा।' (ज्ञानेश्वरी, अध्याय ६)

Shri Pranava-swaroopaa - You are the one whose form is Pranava.

It is felt, as Divine Cool Breeze, by saints, and realized souls. Samartha Ramadas, (Guru to Chhatrapati Shiivaji Maharaj) says, "Primordial Maayaa emerged in the Brahma. She is known as the Prakruti of eight forms. She is embodied in the three Gunas and living beings. Know the Mayaa to be the breeze or wind in which the awareness is Shri Ishwara the God. He is also Sarveshwara, the Almighty God". (Dasbodh).

Shri Jnyaneshwara says, "I shall show through my words the form of the formless and shall give you the

experience on your senses of that which is beyond senses." (Jnyaneshwari Chapter 6)

27. **श्रीकेवला** - आप वह हैं जो निर्गुण, निराकार और केवल संपूर्ण अस्तित्व है।

Shri Kevalaa - You are the one who is, without attributes and forms, the absolute existence.

28. **श्रीआद्या** - जिसका कहीं भी आरंभ नहीं है, पर जो है ऐसी आदिमाता आप हैं।

Shri Aadyaa - You are the Primordial Mother, who has always been there without beginning.

29. **श्रीआदिकुण्डलिनी** - आप श्रीविराट के अस्तित्व की आदि कुण्डलिनी है।

'आदि मूलाधार में रहने वाली महाकाली शक्ति का एक घटक शुद्ध इच्छा है और आप शुद्ध इच्छा है। सृजन प्रक्रिया की दूसरी अवस्था में अपनी सृष्टि को समायोजन, विविधता तथा गति प्रदान करने के लिये श्रीआदिशक्ति आदि यंत्रणा (आदि कुण्डलिनी) का निर्माण करती है। विराट अर्थात् आदि पुरुष का हृदय निर्माण करने के बाद श्रीआदिशक्ति का तीन और आधे (साढ़ेतीन) कुण्डलों में स्थित्यन्तर हो जाता है।' (दी क्रिएशन)

Shri Adi Kundalini - You are the Primordial Kundalini of Shri Virata's being.

" She is pure desire, an aspect of Mahakali power residing in the Primordial Muladhara. In the second phase of creation, Shri Adi Shakti creates the Primordial machinery (Adi Kundalini) to render coordination, variety and speed to her creation. After creation of the heart of the Primordial being, Shri Adi Shakti moves in the three and a half coils. (The Creation)"

30. **श्री गणेशमाता -** आपने श्रीगणेश का निर्माण किया।

'विराट अर्थात् आदि पुरुष के हृदय का निर्माण करने के पश्चात् आदिशक्ति नीचे की ओर चली गयी और एक त्रिकोण का आकार ले कर, उसने अपना निवास बना लिया और कुण्डलिनी के अंतिम भाग को उसके शिखर में स्थिर और दृढ़ता से स्थापित किया। अनन्त आदिशक्ति ने श्रीगणेश का निर्माण किया और अपने निवासस्थान के अधोभाग में आदि मूलाधार चक्र में श्रीगणेश को यथाविधि प्रतिष्ठापित किया। पवित्रता और अबोधिता से रिक्त स्थान की पूर्ति करने के लिये श्रीगणेशजी का प्रथम देवता होने से इन देवता रूप गुणों का प्रदान किया गया।' (दी क्रिएशन)

Shri Ganesha-maataa -You created Shri Ganesha.
"After creating the heart Of the Primordial Being She moved downwards and taking the shape of triangle created her abode and fixed the end of the coil to its apex. Later she created Shri Ganesha and installed him at the primordial Muladhara Chakra below Her abode. He was bestowed as the first deity to fill the space with holiness and innocence which is the essence of Godliness." (The creation)

31. **श्रीमहाकाली -** आप वह हैं जो आदिशक्ति की इच्छा करने की मूड (तमोगुण) का आविष्कार करती हैं और अस्तित्व तथा विनाश की शक्ति का प्रतिनिधित्व करती हैं।

'उस का अस्तित्व प्रत्येक वस्तु में, प्रत्येक प्राणी में तथा मनुष्य प्राणी में है। अस्तित्व को नकारना का अर्थ विनाश करना है। इसलिये वह आदिशक्ति अस्तित्व तथा विनाश दोनों को अभिव्यक्त करती है। विराट की आदि इड़ा नाड़ी में वह कार्य करती है।' (दी क्रिएशन)

Shri Mahaakaali - You are the one who manifests Adi Shakti's desiring mood (Tamo Guna) and represents the power of existence and destruction.
"It exists in everything and every animal and human

being. The negation of existence is destruction. Therefore, She expresses existence as well as destruction. She acts in the Adi Ida Nadi of Virata. (The Creation)"

32. **श्रीमहासरस्वती -** आदिशक्ति की जो सृजन शक्ति है, वह आप हैं।

यह सृजन शक्ति पंचतत्त्व, सूर्य, चंद्रमा, पृथ्वी तथा अन्य ग्रह, नक्षत्र-ताराओं का निर्माण करती है। और वह सृजन की मूड (रजोगुण) को अभिव्यक्त करती है।

Shri Mahaasaraswati - You are the one who is Shri Adi Shakti's creative power, which creates the five elements, and the Sun, the Moon, the Earth and other planets and stars. And who expresses the creative mood (Rajo Guna).

33. **श्रीमहालक्ष्मी -** आप श्री आदिशक्ति की वह शक्ति हैं जो सृष्टि को धारण (धर्म) प्रदान करती है। विविध रूप और आकृतियों को आप गुणविशेष भी देती हैं।

''श्रीविष्णु के अवतरणों के द्वारा और स्वयं अवतरित होकर वह आदि सत्त्व अर्थात् विराट के मध्य नाड़ी में विराटांगना के रूप में कार्य करती है।'' (दी क्रिएशन)

Shri Mahalakshmi - You are the one who is Shri Adi Shakti's power, rendering sustenance (Dharma) to the Creation and gives different characters to various forms.

"Through the incarnations of Shri Vishnu and by incarnating Herself. She acts in the central channel of the Primordial Being, Virata in the form of Viratanganaa." (The Creation)

34. **श्रीसृष्टिकर्ती -** हिरण्यगर्भ की शक्ति हिरण्यगर्भिणी होने से आप प्रकृति की आद्य निर्माती है।

Shri Srushti-karti - You are the primordial creator of nature as Hiranya-garbhini, Hiranya-garbha's power.

35. **श्रीचराचरात्मिका** - आप वह है, जो समस्त चर-अचर अर्थात् सजीव तथा निर्जीव वस्तुओं में स्पन्दित होती हैं।

Shri Chara-achara-atmikaa - You are the one who pulsates in all moving and non-moving, i.e. animate and inanimate objects.

36. **श्रीप्राणशक्तिः** - आप मनुष्यप्राणियों की प्राणरक्षक जीवनशक्ति अर्थात् प्राण हैं।

Shri Praanashakti - You are the Praana, the vital life force in human beings.

37. **श्रीप्राणदात्री** - सजीव प्राणियों की प्राणरक्षक जीवनशक्ति अर्थात् प्राण हैं।

Shri Praana-daatri - You are the giver of vital life force to living beings.

38. **श्रीप्राणेश्वरी** - आप प्राणशक्ति की ईश्वरी (देवता) हैं।

Shri Praaneshwari- You are the Goddess of Praana Shakti.

39. **श्रीमूलप्रकृतिः** - आप आदि प्रकृति हैं। अर्थात् आदि जनक जननी में आप निर्मात्री का अंश-माता है। पुरुष व प्रकृति आदि जनक-जननी हैं।

Shri Moola-prakruti - You are the Primordial Prakruti, the creator aspect the Mother in the Primordial parents, Purusha and Prakruti.

40. **श्रीअव्यक्ता** - आप अव्यक्त अर्थात् अप्रकटित हैं।

Shri Avyaktaa - You are unmanifested.

41. **श्रीव्यक्ताव्यक्तस्वरूपिणी** - आप व्यक्त अर्थात् प्रकटित और अव्यक्त अर्थात् अप्रकटित इन दोनों रूपों में एक ही समय होती हैं।

Shri Vyakta-avyakta-Swaroopini - You are in both, Vyakta, the manifested and Avyakta, the unmanifested forms at the same time.

42. **श्रीअप्रमेया -** आप कल्पना प्रक्रिया से परे हैं।

Shri Aprameyaa - You are beyond conceptualisation.

43. **श्रीस्वप्रकाशा -** आप स्वप्रकाशित हैं जिनकी दीप्ति का प्रतिबिम्ब तथा परावर्तन सब प्रकाशमान मूर्तियों में होता है।

Shri Swaprakaashaa - You are Self-luminous whose radiance all luminous bodies reflect.

44. **श्रीआदि-अहंकारा -** आप वैश्विक अहंकार है।

'आदि पुरुष (विराट्) की विचार करने वाली शक्ति के रूप में भी श्रीमहासरस्वती कार्यनिर्वाह करती हैं। यह प्रक्रिया वैश्विक अहंकार को जन्म देती है।'

Shri Adi Ahankara - You are the Cosmic ego.
"Shri Mahasaraswati also functions as thinking power of the Primordial Being. This process generates cosmic ego." (The Creation)

45. **श्रीआदिचित्ता -** आप वैश्विक सचेतन पूर्व मन हैं।

'वह परमेश्वर की प्रज्ञा को संदेश पहुँचाने के लिये डाकिये के समान कार्य करता है। (द क्रिएशन)

Shri Adi Chitta - You are the Cosmic pre-conscious mind.
"It acts like postman carrying the messages to the intellect of the Almighty." (The Creation)

46. **श्रीमनोवाचामगोचरा -** आपको मन से और वाणी से एवं शब्दों से समझना असंभव है। आपको केवल अनन्य भक्ति से ही पाया जा

सकता है।

Shri Mano-vaachaam-agocharaa - You are imperceptible with mind and words and one can attain you only through the Anannya Bhakti.

47. **श्रीचित्शक्तिः -** जो सर्वत्र कार्य करती है ऐसी दिव्य अवधान की शक्ति आप हैं।

'देवी महात्म्य कहता है, 'वह ऐसी हैं कि जिन्होंने चिति के रूप में विश्व की सारी वस्तुओं को व्याप्त कर दिया है।' श्री शिव के चित्त की शक्ति ही चिति है।

Shri Chit-Shakti - You are the power of Divine attention which works everywhere.

Devi Mahtmya says, "She is the one who has occupied every thing in the world in the form of Chiti." Chiti is the power of Shri Shiva's attention.

48. **श्रीचेतना-रूपा -** आप के रूपों में एक रूप चेतना है।

Shri Chetanaa-roopaa - Consciousness is one of your forms.

49. **श्रीजडशक्तिः -** निर्जीव अर्थात् जड द्रव्यों में आप सूप्त ऊर्जा हैं।

'एक अणु या परमाणु में एक शरीर और एक न्युक्लियस (केंद्रस्थान) होता है। केंद्रबिंदु मस्तिष्क है और उसके अंदर चेतना होती है।' (महाशिवरात्रि पूजा, १९८४)

Shri Jadashakti - You are latent energy in the inanimate.

"In an atom or a molecule, there is the body and the nucleus. The nucleus is the brain and inside the nucleus there is spirit" (Mahashivaratri Puja 1984)

50. **श्रीजडात्मिका -** आप जड़ में विग्रह (मूर्ति) युक्त हैं। विद्युत-

चुम्बकीय शक्ति का नि:सारण करने वाले अणु के केंद्रस्थान में आपका अस्तित्व है।

Shri Jadaatmikaa -You are embodied in the inanimate. You exist in the nucleus of atoms emitting vibrations of electro-magnetic force.

51. **श्रीतत्वमयी -** आप तत्व में एकरूप हैं, जो तत्व प्रत्येक वस्तु में विद्यमान है ऐसा अर्थात् ईश्वरीय ऊर्जा का आदि तत्व हैं। 'तत्' का अर्थ है 'वह' अर्थात् ब्रह्म और त्वम् का अर्थ है तू। इससे व्यक्तिगत चेतना और वैश्विक चेतना का ऐक्य सूचित किया जाता है।

Shri Tat-tva-mayi - You are one with the Tattva, the primordial principle Divine energy, which exists in every thing. Also, "Tat" means "that" i.e. Brahma and "tvam" means you, suggesting the unison of the individual spirit and universal spirit.

52. **श्रीतत्त्वाधिका -** सर्वव्यापी आदि तत्व को उल्लंघित कर के आप उस से पार जाती हैं।

Shri Tattva-adhikaa - You transcend all-pervading primordial principle.

53. **श्रीतत्त्वमर्थ-स्वरूपिणी -** आप वह हैं जिसका रूप आदि तत्व के साक्षात्कार की स्थिति है अर्थात् जैविक (व्यक्तिगत) चेतना तथा परम चेतना का ऐक्य हैं।

''आप अपने तत्व पर उछल पड़े हैं, इसलिये आप प्रत्येक के तत्व पर कूद पड़ती है। पर आप इस तत्व से निष्ठावान रहे क्योंकि इन सबका तत्व मैं हूँ। मैं तत्व, तत्वमय हूँ।'' (कौली मनोर सेमिनार, ३१.७.८२)

Shri Tattvam-artha-swaroopini - You are the one whose form is the state of realisation of the primordial principle meaning the state of the unison of the individual spirit and the supreme spirit.

"Because you have jumped on to your principle, on to your tattwa, you jump on to everybody's tattwa. But, be dedicated to that tattwa, because I am the principle of all these. I am the tattwa, tattwamaya." (Cawly Manor seminar - 31.7.82)

54. **श्रीधर्मदायिनी** - आप धर्म का महान गुण प्रदान करती हैं। धार्मिकता आप का महालक्ष्मी घटक है।

Shri Dharma-daayini - You give sterling quality of Dharma, righteousness your Mahalakshmi aspect.

55. **श्रीविराटांगना** - आदि पुरुष विराट् की शक्ति हैं। अर्थात् महालक्ष्मी शक्ति जिसने आदि चक्रों का निर्माण किया और उत्क्रान्ति की प्रक्रिया का नेतृत्व तथा सुरक्षा करने के लिये पुरुष अवतरणों की धारणा की और उनका प्रेषण किया।

Shri Viraataangana - You are the power of Primordial being Virata, i.e. the Mahalakshmi power who created Primordial Chakras and conceived and sent incarnations to lead and protect evolutionary process.

56. **श्रीधर्माधारा** - आप वह हैं जो धर्म को आधार देती हैं और धर्म का रक्षण करती हैं।

Shri Dharma-adhaaraa - You are the one who supports and protects Dharma.

57. **श्रीधर्म-वर्धिनी** - आप धार्मिक जीवन का प्रवर्तन करती है।

Shri Dharma-vardhini - You promote Dharmic life.

58. **श्रीअवतारशक्तिः** - आप वह शक्ति हैं जो स्वयं अवतरित होती हैं और पुरुष देवताओं के अवतरण भेजती हैं।

''वे पुरुष देवताओं के अवतरण भेजती हैं। उत्क्रान्ति का नेतृत्व करने तथा धार्मिक जीवन का प्रवर्तन करने के लिये करती हैं। दैत्यों

का नाश करने के लिये अतीत में उन्होंने अनेक वार स्वयं अवतार लिये हैं। अब वे पुनः एक बार अवतरित हो गयी हैं और विराट् का सहस्रार खोल दिया है और जनसमूह को एक ही समय पर आत्मसाक्षात्कार दिया है।'' (दी क्रिएशन)

Shri Avataar-Shakti - You are the power who incarnates as well as sends incarnations of male deities.

"She sends incarnations of male deities to lead evolution and for promoting Dharmic life. She herself incarnated several times in the past to destroy demons. Now She has again incarnated and opened Sahasrara of Virata and granted en-mass self realisation." (The Creation)

59. **श्रीमहारूपा-** आप के महान सगुण (गुणों से युक्त) तथा निर्गुण (गुणविहीन) रूप हैं।

Shri Mahaaroopaa - You have great Saguna and Nirguna (with attributes and without attributes) forms.

60. **श्री महापूज्या -** देवताओं, देवों, ऋषियों और मनुष्यों द्वारा आपकी पूजा की जाती है। आप के चरण कमलों की जब हम पूजा करते हैं तो तब सभी देवताओं की पूजा करते हैं।

Shri Mahaapujyaa - You are worshipped by deities, gods, sages and human beings. We worship all deities when we offer the Puja to your lotus feet.

61. **श्रीमहा-पातक-नाशिनी -** आप महा पापों का भी नाश करती हैं। आप जिसे नष्ट नहीं कर सकती ऐसा कोई भी पाप नहीं है।

Shri Mahaa-paatak-naashini - You destroy even great sins. There is no sin which you cannot destroy.

62. **श्रीमहामाया -** आप महामाया हैं और आपने सर्वशक्तिमान् परमात्मा की साक्षात मूर्ति होने वाली इस विश्व की प्रत्येक वस्तु निर्माण की है।

अब आप पूर्ण रूपाकार तथा सर्वशक्तियों के साथ आ गयी हो। इस रूप तथा शक्तियों को आपने मानवों के हित के लिये आच्छादित कर के रखा था और इसलिये वे अन्य वस्तुओं के समान लगते थे।

''महामाया एक सूक्ष्मतर शक्ति है। वह सब में सूक्ष्मतम है। इसे आप अपने मस्तिष्क या बुद्धिद्वारा बिलकुल समझ नहीं सकते तथा उसका स्पष्टीकरण भी नहीं दे सकते। वह कार्य करती है और केवल स्तंभित कर देती है। वह उन्हें मोहित करती हैं।'' .....''महा का मतलब है बड़ी, महान क्योंकि उसके पास सभी देवताओं की शक्ति है, सभी देवताओं पर वह नियंत्रण रखती है और सभी देवताओं के ऊपर उठकर वह उनके पार जाती है। माया का प्रेम और करुणा यह दूसरा अर्थ भी होता है।'' (संदर्भ-श्रीमाताजी का भाषण)

Shri Mahaamaayaa - You are the great Maya who has created every thing in the world with God Almighty's embodiment in it. Now you have arrived in your full form and powers that you have camouflaged for benefit of human beings.

"The Mahaamaayaa being the subtler force-is the subtlest of all which you cannot understand and explain through your brains at all.It acts and just stupefies, it stupefies them." ---- "Maha means the great, because it has all the powers of all deities, it controls all the deities, it surmounts over all the deities. Maya also means love and compassion." (Ref- Shri Mataji's talk)

63. **श्रीमहाशक्तिः -** आप परब्रह्म अर्थात् सर्वशक्तिमान् परमेश्वर की शक्ति हैं।

''सर्वशक्तिमान् परमात्मा और परमात्मा की शक्ति परम अस्तित्व (वस्तु) और पुरुष तथा महाशक्ति तथा सृष्टी की मातृशक्ति, प्रकृति या होली घोस्ट इस प्रकार से रहते हैं।'' (द क्रिएशन)

Shri Mahaashakti - You are the power of Supreme God Almighty, Parabrahma.

"God Almighty and His power exist as Supreme Being and Purusha and Mahashakti as the mother power of Creation, Prakruti or Holy Ghost" (The Creation).

64. **श्रीमहैश्वर्या** - संपूर्ण सृष्टि की सर्वश्रेष्ठ सम्राज्ञी के रूप में आप के पास परम और सबसे महान ऐश्वर्य है।

Shri Mahaishwaryaa - You are the one having greatest glory as Sovereign Empress of the entire Creation.

65. **श्रीमहाबला** - आप सबसे बलवती हैं।

Shri Mahabalaa - You are the mightiest.

66. **श्रीमहाबुद्धिः** - आप सबसे महान् बुद्धि अर्थात् दिव्य बुद्धि-प्रज्ञा हैं।

Shri Mahaabuddhi - You are the greatest intelligence i.e. Divine intelligence.

67. **श्रीसुज्ञतास्थापिनी** - सृष्टी में कोई भी वस्तु का निर्माण करने से पहले आपने सुज्ञता प्रस्थापित की।

Shri Sujnyataa-Sthaapini - You have established wisdom before creating anything of the Creation.

68. **श्रीअबोधिता-स्थापिनी** - सृष्टि में कोई भी वस्तु का निर्माण करने से पहले आपने अबोधिता प्रस्थापित की।

Shri Abodhitaa-Sthaapini - You have established innocence before creating any thing of the Creation.

69. **श्रीप्रेमदायिनी** - आप प्रेम की वृष्टि (वर्षा) करती हैं।

''सर्वशक्तिमान परमात्मा की इच्छाशक्ति होने से वह परमात्मा में प्रेम की ऊर्मि जागृत करती है। इस प्रकार सृष्टि में प्रेम भरा हुआ है।''

Shri Prema-daayini- You shower love.
"She as the Power of Desire of God Almighty awakens

the wave of love in Him. Thus, love is filled into the creation."

70. **श्रीआदि-ब्रह्म-नादा** - जब क्रियाशील होने के लिये महाशक्ति स्फुरित, स्पन्दित होती है तो वह आदि नाद आप हैं।

Shri Adi-Brahma-naada - You are the Primordial Divine sound when Shri Mahashakti pulsates to become active.

71. **श्रीओंकारा** - आप आदि दिव्य नाद ओम् हैं। यह प्रणव का, श्वसन का नाद है। ओम् अर्थात् अ ऊ म्, श्रीमहाकाली, श्रीमहासरस्वती तथा श्रीमहालक्ष्मी के एकात्म, अखण्डता का प्रतिनिधित्व करता है। वह देवनागरी की ध्वनिसंबंधित अक्षरों का तथा मन्त्रों का मूल उगम स्थान है।

सात आधारभूत ध्वनियों का एकरूप अखण्ड नाद भी वह है। (द क्रिएशन)

Shri Omkara - You are the Primordial Divine sound OM the sound of Pranava, the breathing, where AUM representing, Shri Mahakali, Shri Mahasaraswati, Shri Mahalakshmi integrated.

"It is the origin of phonetic Devanagari syllables and Mantras.

Also, it is the integrated sound of seven basic sounds (Naada-brahma)" (The Creation).

72. **श्रीविष्णुतत्त्वाधिश्वरी आदि-नाभि-चक्रे** - आप आदि-नाभि चक्र में विष्णुतत्त्व की अधीश्वरी हैं।

Shri Vishnu-tattwaa-dhishwari-adi nabhi chakre - You are the Goddess of the Vishnu tattwa at the Promordial Nabhi Chakra.

73. **श्रीपूर्णशक्तिः** - आप स्वयं अपने में ही परिपूर्ण हैं और अपनी परिपूर्ति के लिये किसी अधिक वस्तु की आवश्यकता आप को नहीं है।

Shri Poorna-shakti - You are complete in yourself

and do not need any thing more for your fulfilment.

74. **श्रीपूर्णरूपा -** आप अपने परिपूर्ण रूप में हैं।

Shri Poorna-Roopaa - You are in your complete form.

75. **श्रीपूर्ण-ब्रह्म-स्वरूपिणी -** आप सर्वशक्तिमान परमात्मा अर्थात् ब्रह्म का संपूर्ण आविष्कृत रूप हैं।

Shri Poorna–Brahma-sawroopini - You are the complete manifest form of Brahma, the God Almighty.

76. **श्रीमृत्युंजया -** आप मृत्यु की विजेता हैं।

Shri Mrutunjayaa - You are the conquerer of death.

77. **श्रीमृत्युंजयेश्वरी -** जिन्होंने मृत्यु पर विजय प्राप्त की है ऐसे लोगों के ईश्वर श्रीशिव अर्थात् मृत्युंजयेश्वर की आप शक्ति हैं।

आप अमर प्राणियों की देवी हैं। पुरुषसूक्त में कहा है, ''सर्वशक्तिमान परमात्मा अर्थात् पुरुष के एक भाग से हजारों विश्व अस्तित्व में आये और तीन भागों से अमर प्राणी अर्थात् देव-देवता अस्तित्व में आये हैं।''

Shri Mrutyun-jaya-ishwari - You are the power of Mrutyun-jayeshwara, Shri Shiva the God of those who have conquered death.

You are the Goddess of immortal beings. Purusha Sukta says "From one part of God Almighty, Purusha, a myriad of universes came into existence and from three parts came immortal beings, i.e. Gods and deities"

78. **श्रीमुक्तिदायिनी -** आप अहंकार, उपाधियां तथा गतजन्मों के कर्मों के प्रतिफलों से मुक्ति प्रदान करती हैं। क्योंकि जब आप कुण्डलिनी जागृत करती हैं तब इन सब का शोषण हो जाता है। और आप की

कृपा से कुण्डलिन सहस्रार में स्थिर हो जाती है।

Shri Mukti-daayini - You grant liberation from the ego, conditionings and rewards of Karmas of past lives as these are sucked in when you awaken the Kundalini and by your grace, the Kundalini settles in the Sahasrara.

79. **श्रीमुक्तिनिलया -** आप चरम मुक्ति का निवास हैं। मुक्त आत्मायें आप के चरण कमलें को प्राप्त करती हैं।

Shri Mukti-nilayaa- You are the abode of ultimate liberation. Liberated souls attain your lotus feet.

80. **श्रीमहादेवी -** आप सब से महान् देवी, श्रीमहादेव की शक्ति हैं।

Shri Mahaadevi - You are the greatest Goddess, the power of Shri Mahadeva.

81. **श्रीअकुला -** सृष्टि के अस्तित्व के पूर्व में भी आप विद्यमान थी इसलिये आपका कोई भी कुल नहीं है।

Shri Akulaa - You have no clan as you existed even before creation came into existence.

82. **श्रीसमयान्तस्था -** आप भूत, वर्तमान तथा भविष्य के परे हैं।

आप ने ग्रहों को गतिमान किया है और उसी पर समय का निर्धारण किया जाता है। देवी-माहात्म्य कहता है, 'कलाकाष्ठादिरूपेण परिणामप्रदायिनी। विश्वस्योपरतौ शक्ते नारायणि नमोऽस्तुते।। श्रीनारायणि, आपको प्रणाम हो! आप विश्व के परे हैं और प्रत्येक क्षण में, या समय के लघुतम अंश कला और काष्ठा में परिवर्तन दर्शाती है। (कला और काष्ठा पुरातन कालमापन के एकक हैं।)

युगानुयुगों के अन्त में जब सृष्टि प्रलयकालीन जलप्लावन से पूरी तरह डूब जाती है, तब आप आप के पति प्रभु परमेश्वर के साथ विद्यमान रहती हैं।

Shri Samaya-antasthaa - You are beyond past, present and future.

You have set planets into motion based on which time is fixed. Devi Mahatmya says "Kalaa Kaashthaadi roopena parinaama pradaayini, Vishvasyoparatau shakte Narayani namostute." Salutations to Shri Narayani, who is beyond the universe, and shows changes every moment, or at every smallest division of time, Kalaa and Kashthaa (the units of time of ancient yore.)"

You are present with your Lord Parameshwara when the creation is submerged by cataclysmic floods, at the end of aeons.

83. **श्रीसमयाचारतत्परा -** समय की आवश्यकता के अनुसार आप क्रिया करने में तत्पर हैं। अपनी सन्तानों की रक्षा के लिये समय की आवश्यकता के अनुसार आप रूपों में अवतरण लेती हैं।

Shri Samaya-achaar-tatparaa- You are alert to take action according to the need of the time. You incarnate in the forms necessary according to the need of the time to protect your children.

84. **श्रीमूलाधारैकनिलया -** आदि सत्त्व विराट के आदि मूलाधार में आप निवास करती हैं।

Shri Moolaadhaaraik Nilayaa - You reside in the Adi Mulaadhaara of the Primordial Being, Virata.

85. **श्रीसर्वग्रंथिविभेदिनी -** आप ग्रन्थियों को अन्दर विद्ध कर के उनमें प्रवेश करती हैं और सांसारिक जीवन की आसक्तियों से उन्हें मुक्त करती हैं। ''अग्नि-ब्रह्म-ग्रन्थि मूलाधार चक्र, मूलाधार और स्वाधिष्ठान चक्र के बीच में है, सूर्य-विष्णु-ग्रन्थि नाभि और हृदय चक्र के बीच में है और जहाँ विशुद्धि और आज्ञा चक्र मिलते हैं वहाँ चन्द्र-रूद्र-ग्रन्थि हैं। (बीज मंत्र, लंदन १९७८)

Shri Sarva granthi Vibhedini - You pierce through the Granthis and liberate from attachments to worldly life.

"Agni-brahma-granthi is between the Moolaadhaara Chakra, the Moolaadhaara and the Swadhishthan chakras, the Surya-vishnu-granthi is between the Nabhi and the Hridaya Chakras and the Chandra-rudra-granthi is where the Vishuddhi and the Ajnya chakras meet". (Beeja Mantra London 1978)

86. **श्रीसुधाधारावभिर्षिणी -** सहस्रार चक्र में आरोहण कर, आप अमृत की वृष्टि करती है। सुधा अर्थात् प्रणव जो कि स्पंदन या चैतन्य लहरें हैं।

Shri Sudhaa-dhaara-abhivarshini - Ascending in the Sahasrara Chakra you shower the ambrosia, i.e. Pranava, which is Vibrations.

87. **श्रीभवानी -** आप सृष्टि को जीवन प्रदान करने वाली हैं। भव, श्री शिव हैं और भवानी उनकी शक्ति हैं।

Shri Bhavaani- You are the giver of life to the creation. Bhava is Shri Shiva and Bhavani is His power.

88. **श्रीभद्रमूर्तिः -** आप श्रीशिव का आविष्कार करती हैं। श्रीशिव को भद्र नाम से भी जानते हैं। उसका अर्थ मांगल्यदायक।

Shri Bhadra-murty-You manifest Shri Shiva who is also known as Bhadra the one who confers auspiciousness.

89. **श्रीभक्तिप्रिया -** आप भक्ति से आनंदित होती हैं।

Shri Bhakti-priyaa - You are delighted with Bhakti.

90. **श्रीभक्तिगम्या -** आप केवल भक्ति के द्वारा ही जानी जा सकती हैं।

Shri Bhakti-gamyaa - You can be known only with Bhakti.

91. **श्रीभक्तिवश्या -** आप भक्ति से वश होती है।

Shri Bhakti-vashyaa - You are won with Bhakti.

92. **श्रीभक्त-सौभाग्य-दायिनी -** अपने भक्तों को आप सौभाग्य प्रदान करती हैं।

Shri Bhakta-saubhaagya-daayini - You bestow good fortune on your devotees.

93. **श्रीभयापहा -** आप भय का निवारण करती हैं।

Shri Bhaya-apahaa - You are remover of fear.

94. **श्रीशारदाराध्या -** विद्या की देवता शारदा द्वारा आप की आराधना की जाती है।

Shri Shaaradaa-araadhyaa - You are worshipped by Shaaradaa, the Goddess of learning.

95. **श्रीशरदच्चन्द्रनिभानना -** आप का मुख शरद् ऋतु के चन्द्रमा के समान है।

Shri Sharad-chandra-nibhaananaa- Your face is like autumnal moon.

96. **श्रीशान्तिमती -** आप शान्त (शान्ति से युक्त) हैं।

Shri Shaantimati - You are peaceful.

97. **श्रीनिराधारा -** आप संपूर्ण सृष्टि की आधार हैं इसलिये आप स्वयं आधारविहीन हैं।

Shri Nira-adhaaraa- You are without support as you are the support of the creation.

98. **श्रीनिरंजना -** आप मूर्तिमान दिव्य आनन्द है और आप दिव्य

आनन्द का नि:सारण करती हैं। इसलिये आप को बाह्य आनन्द की आवश्यकता नहीं है।

Shri Niranjanaa - You are Divine Joy personified and you emit Divine Joy. Hence, you do not need external joy.

99. **श्रीनिर्लेपा -** आप किसी भी अशुद्धि से विहीन है।

Shri Nirlepaa - You are without any impurity.

100. **श्रीनित्या -** आप नित्य हैं।

Shri Nityaa - You are eternal.

101. **श्रीनिराकारा -** आप आकारविहीन हैं।

Shri Niraakaaraa - You are formless.

102. **श्रीनिर्मला -** आप निर्मल हैं।

Shri Nirmala - You are immaculate.

103. **श्रीनिर्गुणा -** आप गुणविहीन या किसी विशेष से विहीन हैं। आप सृष्टि के प्रत्येक वस्तु में विद्यमान हैं और सृष्टि के भी उस पार लांघ कर जाती हैं।

Shri Nirgunaa - You are without any qualities or attributes being present in every thing of Creation and also transcending the Creation.

104. **श्रीशांता -** आप शान्ति और निर्वृति हैं।

Shri Shaantaa - You are peace and tranquillity.

105. **श्रीनिष्कामा -** आप की कोई कामना नहीं है।

Shri Nishkaamaa - You have no desires.

106. **श्रीनिरुपप्लवा -** आप अविनाशी हैं।

Shri Nirupa-plavaa - You are indestructible.

107. **श्रीनित्यमुक्ता -** आप सदैव मुक्त हैं।

Shri Nitya-muktaa - You are eternally free.

108. **श्रीनिष्प्रपंचा -** आप पाँच तत्वों से बने हुए संसार के परे हैं अर्थात् पाँच भौतिक संसार के उस पार।

Shri Nish-pra-panchaa - You are beyond the world composed of five elements i.e. mundane world.

109. **श्रीनिराश्रया -** आप का कोई आश्रय नहीं क्योंकि आप ही सबका आश्रय हैं।

Shri Nira-ashrayaa - You have no shelter since you are shelter to all.

110. **श्रीनित्यशुद्धा -** आप सदैव शुद्ध हैं।

Shri Nitya-shuddhaa - You are eternally pure.

111. **श्रीनित्यबुद्धा -** आप सदैव प्रबुद्धित हैं और दूसरों को प्रबुद्धता देती हैं।

Shri Nitya-buddhaa - You are ever enlightened and give enlightenment to others.

112. **श्रीनिरन्तरा -** आप सदैव विद्यमान हैं। ऐसा कोई भी समय नहीं कि आप सहायता के लिये आसपास नहीं हैं।

Shri Nirantaraa - You are ever present. There is no time when you are not around to help.

113. **श्रीनिष्कारणा -** आप का कोई भी कारण नहीं है क्योंकि आप ही प्रत्येक वस्तु का कारण हैं। और फिर कारण न होते हुए भी आप

अनुकम्पा से युक्त है क्योंकि अनुकम्पा से युक्त होना आप का स्वभाव है। 'कोमल चित अति दीनदयाला। कारण बिन रघुनाथ कृपाला।।' - तुलसीदास। श्रीराम जो अत्यंत दयालु हैं, उनका हृदय बहुत ही कोमल है, क्योंकि बिना किसी कारण से वे कृपालु हैं।

Shri Nish-kaaranaa - You have no cause since you are the cause to every thing. Also, without any reason you are compassionate as it is your nature to be compassionate. Komal chita ati deena dayalaa kaaran bin Raghunath kripalaa- Tulsidas. Shri Rama who is extremely compassionate has very tender mind, for he is compassionate without any reason.

114. **श्रीनिरूपाधिः -** कोई भी शब्द, उपमा, रूपकादि आप का वर्णन नहीं कर सकते। आप केवल और परिपूर्ण हैं और परिपूर्ण शब्दों से परे होता है।

Shri Nirupaadhi - No words, similes, metaphors etc can describe. you. You are absolute and the absolute is beyond words.

115. **श्रीनिर्मदा -** आप गर्वरहित हैं।

Shri Nirmadaa - You are devoid of pride.

116. **श्रीमदनाशिनी -** आप गर्व का नाश करती हैं। देवी माहात्म्य ने आपका वर्णन किया है, ''जो शक्तिमान क्रूर दैत्यों के गर्व का नाश करती है वह आप हैं।''

Shri Mada-naashini - You destroy pride. Devi Mahatmya describes you "The one who destroys the pride of mighty and ferocious demons"

117. **श्रीनिश्चिंता -** आप आत्मविश्वासी होने के कारण चिन्तारहित हैं।

Shri Nishchintaa - You are without any worry as you are self- confident.

118. **श्रीनिरहंकारा -** आपको अहंकार नहीं हैं।

Shri Niraham-karaa - You are egoless.

119. **श्रीनिर्मोहा -** आप को मोह नहीं है।

Shri Nirmohaa - You have no temptation.

120. **श्रीमोहनाशिनी -** आप मोह का नाश करती हैं। सन्त एकनाथ ने उनकी 'जोगवा' नामक रचना में मोह को महिषासुर के समान कहा है। ''श्रीभवानी जो अनादि (जिस का कोई प्रारंभ नहीं) और निर्गुण (गुणविहीन) हैं वह मोह का जो कि महिषासुर है, नाश करने आ पहुँची हैं।

Shri Moha-naashini - You destroy temptation. Saint Ekanath in his Jogva has likened temptation to demon Mahishasura. " Shri Bhavani who is without beginning and attributes has arrived to destroy temptation which is demon Mahishasura"

121. **श्रीनिर्ममा -** आप किसी भी चीज़ में आसक्त नहीं हैं।

Shri Nirmamaa - You are not attached to anything.

122. **श्रीममताहंत्री -** आप आसक्ति का नाश करती हैं।

Shri Mamataahantri - You destroy attachment.

123. **श्रीनिष्पापा -** आप निष्पाप अर्थात् पापरहित हैं।

Shri Nishpaapaa - You are sinless.

124. **श्रीपापनाशिनी -** आप पापों का नाश करती हैं।

Shri Paapa-naashini - You destroy sins.

125. **श्रीनिष्क्रोधा -** आप कभी भी क्रोध नहीं करती।

Shri Nishkrodhaa - You are never angry.

126. **श्रीक्रोधशमनी -** आप क्रोध को शान्त करती हैं। आप ने पुनः पुनः क्षमा करने पर जोर दिया है। गगनगिरि महाराज के क्रोध को आप ने कैसे शान्त किया, यह आप ने हमें बताया है। क्योंकि गगनगिरि महाराज उस वर्षा को रोक नहीं सके जिससे आप पूरी भीग गयीं थीं। यह घटना सदैव हमारी पथदर्शक होगी।

Shri Krodha-shamani - You pacify anger. You have repeatedly emphasised on forgiving. You have told us how you pacified anger of Gagan-giri-maharaj, when he could not stop rain which drenched you. It will guide us for ever.

127. **श्रीनिर्लोभा -** आप बिलकुल पूर्णता से लोभ रहित हैं।

Shri Nirlobhaa - You are absolutely without greed.

128. **श्रीलोभनाशिनी -** आप लोभ का नाश करती हैं।

Shri Lobha-naashini - You destroy greed.

129. **श्रीनि:संशया -** आप को संशय नहीं है।

Shri Nis-sanshayaa- You have no doubts.

130. **श्रीसंशयाघ्नी -** आप संशय, शंकाओं का नाश करती हैं। आप साधकों को नि:संदेह संवेदना बोध की ओर ले जाती हैं।

Shri Sanshaya-ghni - You destroy doubts. You take seekers to doubtless awareness.

131. **श्रीनिर्नाशा -** आप नाशविहीन हैं।

Shri Nirnaashaa - You are imperishable.

132. **श्रीमृत्युमथनी -** आप मृत्यु का नाश करती हैं।

'आप की देखभाल करने परब्रह्म आया है। उस का अवलम्बन कीजिये। फिर तो मृत्यु को भी पीछे लौटना पडता है, तो फिर इन छोटी - छोटी बातों के संबंध में क्या?'' (कौली मनोर सेमिनार, ३१.७.८२)

Shri Mrutyumathani - You are destroyer of death.

"The Parabrahma has come to look after you. Cling on to it. Even the death has to go back, then what about these minor things" (Cawley Manor seminar-31.7.82)

133. **श्रीनिष्क्रिया -** आप क्रियाविहीन हैं। फिर भी आप प्रत्येक कार्य करती हैं।

Shri Nishkriyaa- You are without action. Yet you do every thing.

134. **श्रीनिष्परिग्रहा -** आप अपने लिये किसी भी चीज़ का स्वीकार नहीं करती परंतु अपने बच्चों को आनंदित करने के लिये भक्ति से समर्पित की गयी वस्तुओं को स्वीकार कर लेती हैं।

Shri Nish-pari-grahaa - You do not accept anything for yourself but receive the offerings made with devotions only to please your children.

135. **श्रीनिस्तुला -** आपके समान कोई भी नहीं है।

Shri Nistulaa-You are unequalled.

136. **श्रीनील-चिकुरा -** आप काले केशोंवाली हैं।

Shri Neelachikura - You are dark haired.

137. **श्रीनिरत्यया -** आप परमश्रेष्ठ हैं और आप से अधिक श्रेष्ठ ज्येष्ठ कोई भी नहीं हो सकता।

Shri Niratyayaa - You are supreme and none can be

superior to you.

138. **श्रीदुर्लभा** - आप अप्राप्य है क्योंकि भक्ति के द्वारा आपके पास कोई आ सकता है।

Shri Durlabhaa- You are unattainable as you can be attained through Bhakti.

139. **श्रीदुर्गमा** - आपके निकट आना असंभव है क्योंकि भक्ति के द्वारा आपके पास कोई आ सकता है।

Shri Durgamaa - You are unapproachable as you can be approached through Bhakti.

140. **श्रीदु:खहंत्री** - आप दु:ख निवारण करती हैं।

Shri Dukkha-hantri - You are the remover of pain.

141. **श्रीसुखप्रदा** - आप सुख देती हैं।

Shri Sukhapradaa - You confer happiness.

142. **श्रीदुष्टदूरा** - आप वह हैं जिनसे नकारात्मक तथा दुष्ट लोग पलायन करते हैं।

Shri Dushta-dooraa - You are the one from whom negative and wicked people flee.

143. **श्रीदुराचार-शमनी** - आप अनैतिक आचरण का निराकरण करती हैं।

Shri Duraachaara-shamani - You dispel immoral behaviour.

144. **श्रीअज्ञान-तिमिर-नाशिनी** - आप अज्ञान के अंध:कार का निरास करती हैं।

Shri Ajnyaana-timir-naashini - You dispel darkness of ignorance.

145. **श्रीताप-त्रय-निवारिणी** - सांसारिक जीवन की व्यथाओं तथा आधियों का आप निवारण करती हैं।

Shri Taapa-traya-nivaarini - You remove pains and anguish of worldly life.

146. **श्रीभ्रान्तिरूपेण संस्थिता** - अहंकार को प्रत्यक्ष प्रकट करने के लिये आप हेतुपूर्वक किसी को गलतियाँ करने को प्रेरित करती हैं।

Shri Bhranti- rupena-sansthitaa - You deliberately lead one to make errors to expose the ego.

147. **श्रीसर्वज्ञा** - आप सर्वज्ञ (सब जानने वाली) हैं।

Shri Sarvajnyaa - You are omniscient.

148. **श्रीकरुणा-रस-सागरा-** आप करुणा का महासगार हैं।

Shri Karunaa-rasa-saagaraa- You are the ocean of compassion.

149. **श्रीसर्वमंगलकारिणी** - आप प्रत्येक वस्तु को मंगल बनाती हैं।

Shri Sarva-mangal-kaarini - You make every thing auspicious.

150. **श्रीसर्वमंगल-मांगल्या** - जो कुछ भी मंगल हैं उन सब की मंगलता आप हैं।

Shri Sarva-mangal-maangalyaa - You are auspiciousness in all that is auspicious.

151. **श्रीसर्वेश्वरी** - आप सब की देवी (ईश्वरी) हैं।

Shri Sarveshwari - You are Goddess of all.

152. **श्रीसर्वमन्त्रस्वरूपिणी** - आप सब मन्त्रों के रूप में हैं।

Shri Sarva-mantra-swaroopini - You are in the form of all Mantras.

153. **श्रीसर्वदेवताधारिणी** - आप ने अपने शरीर में सभी देवताओं को धारण किया है।

Shri Sarva-devataa-dhaarini - All the deities are ensconced in your being.

154. **श्रीसर्वमानववासिनी** - सब मानव प्राणियों में आप निवास करती हैं।

Shri Sarva-maanava-vaasini - You reside in all human beings.

155. **श्रीषट्चक्रोपरि-संस्थिता** - आप सभी चक्रों पर रहती हैं। ''अब भवसागर को स्थापित करना है। सबसे पहले आपने अपने गुरू को जानना ही चाहिये और वह सभी चक्रों पर हैं। कल्पना कीजिये कि आपकी गुरु कितनी महान व भव्य हैं।'' (पूजा के संबंध में श्रीमाताजी का उपदेश)

Shri Shat-chakro-pari sansthitaa - You reside on all the Chakras. "Now, the Void is to be established. First of all, you must know your Guru and She is on every Chakra. Imagine what tremendous Guru you have." (Mother's advice on Puja).

156. **श्रीमाहेश्वरी** - श्रीमहेश्वर, जो कि श्रीसदाशिव हैं, उनकी शक्ति आप हैं।

Shri Maaheshwari - You are the power of Shri Maheshwara who is Shri Sadashiva.

157. **श्रीमहाभैरवपूजिता** - श्रीसदाशिव द्वारा आप का पूजन किया जाता है। श्रीसदाशिव को ही श्रीमहाभैरव नाम से जाना जाता है।

Shri Mahaa-bhairava-pujitaa - You are worshipped by Shri Sadashiva who is also known as Shri Mahabhairava.

158. **श्रीचराचर-जगन्नाथा -** चर (सजीव) तथा अचर (निर्जीव) जगत की आप स्वामिनी हैं।

Shri Chara-achara-jagan-naathaa - You are the lord of the animate and inanimate world.

159. **श्रीसहस्र-शीर्ष-वदना -** आप के हजार मस्तक और हजार मुख हैं।

''आदि सत्त्व अर्थात् पुरुष के हजार मस्तक, हजार आँखें और हजार चरण हैं। सारी पृथ्वी को व्याप्त कर के वह (पुरुष) दस अंगुल ऊपर उठ गया है।'' पुरुष सुक्त

Shri Sahasra-sheersha-vadanaa - You have a thousand heads and a thousand mouths.

"The Primordial Being, Purusha has a thousand heads, a thousand eyes and a thousand feet. Pervading the whole earth he has risen high ten units." Purusha Sookta.

160. **श्रीसहस्राक्षी -** आप की हजार आँखें हैं।

Shri Sahasra-akshee - You have a thousand eyes.

161. **श्रीसहस्रपाद् -** आप के हजार चरण हैं।

''जब आप सहजयोग में आते हैं, तो आपको यह जानना चाहिये कि जो आप की रक्षा, पालन, देखभाल कर रहा हैं, उसके कोटि कोटि हाथ हैं। अगर आप उनकी सुरक्षा का आश्रय लेंगे, तो आप, जिस से आप को पकड़ आ जाती है और आप निष्कारण ही पीड़ित होते हैं, ऐसी गलत बातें करेंगे ही क्यों? अगर आप को पकड़ आ गयी तो आसानी से आप स्वच्छ हो जाते हैं, आप की पकड़ हट जाती हैं।'' (श्रीआदिशक्ति पूजा, दिल्ली, ५.१२.१९९५)

Shri Sahasra-paad - You have a thousand feet.

"When you come to Sahaja Yoga, you should know that the one who is looking after you has crores of hands. If you go under her protection then why would you do

wrong things by which you get catches and become uselessly troubled. If you are caught, it gets cleard just like that." (ShriAdishakti Puja-Delhi 5.12.95).

162. **श्रीचक्रराज-निलया** - आप श्रीचक्र अथवा सहस्रार में निवास करती हैं।

Shri Chakra-raaj-nilayaa - You reside in the Shri Chakra or the Sahasrara.

163. **श्रीचिन्मयी** - आप ईश्वरीय चित्त हैं।

Shri Chinmayi - You are Divine attention.

164. **श्रीपरमानन्दा** - आप परम (उच्चतम) आनंद हैं।

Shri Paramaanandaa - You are supreme Bliss.

165. **श्रीध्यान-ध्यातृ-ध्येयरूपा** - आप ध्यान, ध्यान करने वाला और ध्यान का विषय इन तीनों की एकता हैं।

Shri Dhyaana-dhyaatru-dhyeya-rupaa- You are the state of oneness of the meditation, meditator and the object of meditation.

166. **श्रीधर्माधर्मविवर्जिता** - आप धर्म और अधर्म के परे हैं। अधर्म का अर्थ धर्म का विरोध। आप धर्मातीत हैं और आपने सृष्टि में धर्म की प्रतिष्ठा की है।

Shri Dharma-adharma-vivarjitaa - You transcend Dharma and Adharma (opposite of Dharma).You are dharmateet and have installed Dharma (sustenance) in the Creation.

167. **श्रीविश्वरूपा** - विश्व के रूप में जो आविष्कृत होती हैं, वह आप हैं।

Shri Vishwaroopaa - You are the one who manifests

as universe.

168. **श्रीजागरिणी** - आप जागरूक हैं और जागृत भी करती हैं। दैत्यों से युद्ध करने के लिये आपने श्रीविष्णु को निद्रा से जगाया वह आप ही हैं, जो मनुष्यप्राणी में निद्रा रूप में विद्यमान हैं और आप ही उन्हें नींद से जगाती हैं। और फिर, आप मनुष्य की कुण्डलिनी भी जागृत करती हैं। मनुष्य को सत्य का बोध देती हैं। उत्थान की आवश्यकता के लिये भी आप लोगों को जागृत करती हैं।

Shri Jaagarini - You are wakeful and also awaken. You awakened Shri Vishnu from sleep to fight demons. You are the one who exists in every human being as sleep and also awaken him from sleep. Also, you awaken his Kundalini, making him aware of truth. You awaken people to the need to ascend.

169. **श्रीस्वपन्ती** - आज स्वप्नावस्था हैं।

Shri Swapanti - You are dream state.

170. **श्रीतैजसात्मिका** - सब जीवों का सामूहिक रूप आप हैं। जीव अर्थात् सब मानवों की चेतना, बोध हैं। जब जीव स्वयं स्थूल शरीर धारण करता है और इंद्रियों के द्वारा बाह्य क्रियाओं से अनुबंधित होता है तब उसे जागरी जाना जाता है। उस व्यक्तता या पृथक्ता स्वप्नावस्था में सूक्ष्म शरीर में विलीन हो जाती है।

Shri Taijasatmikaa - You are collective form of all the Jeevas i.e. the consciousness of all human beings. Jeeva is known as Jagari when he takes upon himself the gross body and is involved in external activities through senses. His individuality is merged in the subtle body in the state of Swapna i.e.dream.

171. **श्रीसुप्ता** - आप गाढ़ी स्वप्नरहित निद्रा की अवस्था हैं।

Shri Sooptaa - You are the state of deep, dreamless sleep.

172. **श्रीतुर्या -** आप चतुर्थ अवस्था हैं।

''चौथी अवस्था तुर्या है जब आप निर्विचार में होते हैं। जब कोई भी विचार नहीं होता तो, आप को अबोध होना ही होता है। जब कोई भी विचार नहीं होता तब आप चैतन्य लहरों से युक्त होते हैं। जब कोई विचार नहीं होता, तब आप किसी में भी आसक्त नहीं हो सकते।''

Shri Turyaa - You are the fourth state.

"The fourth state is Turya in which you are in the thoughtless awareness. When there is no thought you have to be innocent. When there is no thought, you have vibrations. When there is no thought, you cannot be attached to any one."

173. **श्रीसर्वावस्थाविवर्जिता -** आप चारों अवस्थाओं से परे, ऊपर हैं।

Shri Sarva-avasthaa-vivarjitaa - You transcend all the four states.

174. **श्रीभगवती -** आप परम ईश्वरी हैं और छह रूपों से युक्त हैं : ऐश्वर्य, धार्मिकता, कीर्ति, समृद्धि, प्रज्ञा और विवेक।

देवी भागवत के अनुसार, ''वह विश्व की उत्पत्ति और लय जानती हैं, प्राणियों का आवागमन जानती हैं और परिपूर्ण ज्ञान से युक्त हैं इसीलिये उन्हें भगवती कहा जाता है।'' उसका एक अर्थ यह भी है कि सब देवतओं द्वारा उसका पूजन किया जाता है और वह उन्हें आशीर्वाद देती हैं। श्रीमाताजी के आगमन के पहले हम परमेश्वर का केवल भगवती रूप जानते थे। उनके अवतरण के बाद श्रीमाताजी ने अपने आदिशक्ति रूप का अधिक स्पष्ट रूप से विवेचन किया।

Shri Bhagavati - You are the Supreme Goddess, having six aspects, viz, the supremacy, righteousness, fame, prosperity, wisdom, and discrimination.

According to Devi Bhagwat "As She knows the origin,

and dissolution of universe, the going and coming of beings, and absolute knowledge, She is called Bhagawati." It also means, the one who is worshipped by all Gods and who blesses them. Before the advent of Shri Mataji we only knew upto Bhagawati aspect of the Supreme Goddess. After her incarnation, she explained more clearly the meaning of Adi Shakti aspect.

175. **श्रीश्रुति-संस्तुत-वैभवा** - आप के वैभव की वेदों द्वारा स्तुति की जाती है। वेदों में जो ज्ञान है उसे सम्पूर्ण, परम, माना जाता है। क्योंकि वह दिव्य ज्ञान है ऐसा वेदों के ज्ञान के बारे में कहा जाता है। और वह ऋषियों को जिस प्रकार से प्रकाशित हुआ, उस रूप में है। वह ज्ञान 'अपौरूषेय' अर्थात् किसी पुरुष या मानव द्वारा रचित नहीं है।

Shri Shruti-saunstuta vaibhavaa - Your glory is praised by the Vedas.

The knowledge in the Vedas is considered absolute as they are said to be the knowledge which has come from Divine, in the form of revelations to sages. 'Apaurusheya' i.e. not composed by any human being.

176. **श्रीपुरुषार्थप्रदा** - मनुष्य जीवन के चार उद्देश्य (पुरूषार्थ) आप प्रदान करती हैं-धर्म, अर्थ (धन), काम (इच्छा), मोक्ष।

Shri Purushaartha-pradaa - You bestow four objects of human life, Dharma-righteousness, Artha-wealth, Kaama-desire and Moksha-salvation.

177. **श्रीपूर्णा** - आप स्वयं अपने में परिपूर्ण है। आपने अपने परिपूर्ण रूप में अवतार लिया है और फिर भी आप का शेष भाग भी परिपूर्ण है। कुण्डलिनी शेष भाग की शक्ति है पर वह भी स्वयं अपने में परिपूर्ण है। पर केवल आत्मसाक्षात्कार के पश्चात् ही उसकी परिपूर्ति होती है।

Shri Poornaa - You are complete in yourself. You have incarnated in your complete form and yet your residual form is also complete. Kundalini is the residual power

but it is complete in itself, however, it is fulfilled only after the self-realisation..

178. **श्रीअम्बिका -** आप सृष्टि की माता हैं।

Shri Ambikaa - You are the mother of the Creation.

179. **श्रीहरि-ब्रह्मेन्द्र-सेविता -** श्रीहरि अर्थात् श्रीविष्णु, श्रीब्रह्मदेव तथा श्रीइन्द्र द्वारा आपकी सेवा की जाती है।

Shri Hari-Brahmendra-sevitaa - You are served by Shri Hari i.e. Shri Vishnu, Shri Brahmedeva and Shri Indra.

180. **श्रीभुवनेश्वरी -** आप सर्व भुवनों की अर्थात् विश्वों की परम ईश्वरी हैं।

Shri Bhuvaneshwari - You are the Supreme Goddess of Universes, Bhuvanas.

181. **श्रीब्रह्मरूपा -** सृष्टि के विधाता ब्रह्मदेव का आप आविष्कार करती हैं। इस प्रकार आप भी विधाता अर्थात् सृजन करने वाली हैं।

Shri Brahmaroopaa - You manifest Shri Brahmadeva, the creator of universes. Thus, you are the creator.

182. **श्रीगोप्त्री -** आप विश्वों का रक्षण करती हैं।

Shri Goptri - You are the protector of universes.

183. **श्रीगोविन्दरूपिणी -** आप श्रीगोविन्द अर्थात् श्रीविष्णु का आविष्कार करती हैं। इस प्रकार आप रक्षक हैं।

''श्रीविष्णुरूपिणी'', ललिता सहस्रनाम में यह विशेषण दिया गया है। और फिर 'गो का अर्थ वैदिक शब्द भी है। तो वह श्रीविष्णु के रूप में शब्द का व्याप्त करती हैं और शक्ति प्रदान करती है।

Shri Govinda-rupini - You manifest Shri Govinda

i.e..Vishnu, Thus you are the protector.

"Shri Vishnu-roopini," an epithet in the Lalita Sahasra naam. Also, Go means Vedic words that she, as Shri Vishnu, pervades and gives power to.

184. **श्रीरुद्ररूपा** - श्रीशिव की विनाशक अवस्था या रूप का आप आविष्कार करती हैं। इस प्रकार आप विनाशिका हैं।

Shri Rudrarupaa - You manifest Rudra the destructive aspect of Shri Shiva. Thus, you are the destroyer.

185. **श्रीक्षेत्रस्वरूपा** - आप वह हैं जो क्षेत्र के रूप में हैं। क्षेत्र अर्थात् प्रकट जगत्। क्षेत्र का एक अर्थ मनुष्य देह यह भी है और क्षेत्रज्ञ का अर्थ क्षेत्र को जानने वाला। क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ।

Shri Kshetra-swaroopaa - You are the one whose form i s Kshetra, the manifest world, the field. Kshetra also means human body and Kshetrajnya the knower of the field. The field and the knower of the field.

186. **श्रीक्षेत्रेशी** - आप क्षेत्र की ईश्वरी हैं। क्षेत्र अर्थात् प्रकट जगत्।

Shri Kshetreshee - You are the Goddess of Kshetra i.e. manifest world.

187. **श्रीक्षेत्र-क्षेत्रज्ञ-पालिनी** - आप क्षेत्र अर्थात् सृष्टि तथा क्षेत्रज्ञ अर्थात् जो क्षेत्र को जानता है, इनकी रक्षक हैं। क्षेत्र चेतना से व्याप्त है।

Shri Kshetra-kshetrajnya-paalini - You are the protector of the Kshetra i.e. creation and Kshetrajnya i.e. the one who knows the Kshetra which is pervaded by the Spirit.

188. **श्रीक्षय-वृद्धि-विनिर्मुक्ता** - आप जो कुछ हैं, और जो कुछ भी होंगी वैसी ही आप हैं, इस कारण से आप विनाश और वृद्धि से मुक्त हैं।

Shri Kshaya-vruddhi-vinir-muktaa - You are free from decay and growth as you have been and shall be what you are.

189. **श्रीविजया -** आप सदैव विजयी होती हैं।

Shri Vijayaa- You are always victorious.

190. **श्रीवन्दारु-जन-वत्सला -** आप के भक्तों से आप को बहुत वत्सलता अर्थात् प्रेम है।

Shri Vandaaru-jana-vatsalaa - You have great love for your devotees.

191. **श्रीसदाचार-प्रवर्तिका -** आप उच्च नैतिक वर्तन का प्रवर्तन करती हैं, जो सामूहिक आत्मसाक्षात्कार और आपके भाषणों द्वारा होता है।

Shri Sadaachaar-pravartikaa - You promote high moral conduct through en masse self-realisation and your talks.

192. **श्रीपशु-पाश-विमोचिनी -** आप पशुओं को बन्धनों से मुक्त करती हैं।

वह सर्पिणी के रूप में आयी। आदम और ईव को उसने ज्ञान का फल खाने के लिये स्वीकार करने पर उन्हे विश्वास दिलाया। जब उन्होंने वह फल खाया तब उन्होंने पहली बात यह की, कि उन्होंने पेड़ों के पत्तियों से अपने आपको ढ़क लिया। क्योंकि उन्हें चारित्र्यशुद्धता का बोध हो गया था। श्रीगणेशजी की प्रतिष्ठापना जो हो चुकी थी। उसने उन दोनों को तथा उनकी अगली पीढ़ियों को अपने निर्णय स्वयं लेने की स्वतंत्रता भी दी। उसने यह सब कुछ इसलिये किया, क्योंकि वह नहीं चाहती थी कि मनुष्य पशुओं के समान जिये। (श्रीमाताजी के आदिशक्ति पूजा-भाषणों पर आधारित)

Shri Pashu-paasha-vimochini - You release animals from bonds.

She came in the form of serpent and convinced Adam and Eve to eat the fruit of knowledge. When they ate the fruit, the first thing they did was to cover themselves

with leaves, as they became aware of chastity, because Shri Ganesha was established. She also granted freedom to them and their posterity to take their own decisions. She did all this because She did not want them to live like animals. (Based on Adi Shakti Puja talks.)

193. **श्रीशिवाराध्या -** श्रीशिव द्वारा आप का पूजन किया जाता है।

Shri Shiva-aradhya - You are worshipped by Shri Shiva.

194. **श्रीपंचकोषान्तर-स्थिता -** आप पाँच कोषों के अन्दर रहती हैं- शारीरिक (अन्नमय कोष), बौद्धिक (प्राणमय कोष), मानसिक (मनोमय कोष), ज्ञान (ज्ञानमय कोष) और परमानन्द (आनंदमय कोष) अर्थात् आप ही आत्मा है।

Shri Panch-kosha-antara-sthitaa -You reside inside the five beings or sheaths viz the physical (Annamay Kosha), the mental (Praanamay Kosha), the psychic (Manomay Kosha), the knowledge (Jnyanamay Kosha) and the Bliss (Anandamay Kosha) i.e. you are Spirit.

195. **श्रीनित्य-यौवना -** आप चिरतरूण हैं। आप कभी भी वृद्ध नहीं होती क्योंकि आप काल के परे हैं।

Shri Nitya-yauvanaa - You are ever young. Since, you are beyond time you never get old.

196. **श्रीवयोऽवस्थाविवर्जिता-** आप आयु तथा अवस्था विरहित हैं क्योंकि आप नित्य हैं।

Shri Vayo-avasthaa-vivarjitaa - You are without age or physical condition, being eternal.

197. **श्रीस्वाहा -** हवन में देवता को जो आहुति अर्पण की जाती है उसका स्वीकार करने वाली शक्ति आप हैं।

Shri Swaahaa- You are the power that accepts

oblations offered in a Havana to the deity.

198. **श्रीस्वधा** - आप वह शक्ति है, जो देव, गण तथा स्वर्ग में रहने वाली आत्माओं को हवन में जो अर्पण किया जाता है, उसको पहुँचाती है।

Shri Swadhaa - You are the power who takes the offerings in a Havana to Gods Ganas and souls who live in heaven.

199. **श्रीवषट्कारा** - हवन देवता को संतुष्ट करने के लिये उच्चारित मन्त्रों की शक्ति आप हैं।

Shri Vashat-kaaraa - You are the power of the mantras recited to please the deity of the Havana.

200. **श्रीअनुत्तमा** - आप (सब में) उच्चतम हैं क्योंकि आप से अधिक अच्छा कोई भी नहीं है।

Shri Anuttamaa - You are the highest as none is better than you.

201. **श्रीमहाप्रलयसाक्षिणी** - सृष्टि के जिस अंतिम विलय में जब श्री शिव, श्रीब्रह्मदेव और श्रीविष्णु भी नष्ट हो जाते हैं ऐसे महाप्रलय की साक्षिणी आप हैं।

Shri Mahaa-pralaya-saakshini - You witness final dissolution of the creation when even Shri Shiva, Shri Brahmadeva and Shri Vishnu also perish.

202. **श्रीउन्मेष-निमिषोत्पन्न-विपन्न-भुवनावली** - केवल अपनी आँखों के उन्मेष (खुलना) और निमेष (बंद होना) इन हलचल से आप भुवनों की पंक्तियों का निर्माण करती हैं (उन्मेष) और उन्हें नष्ट भी कर देती हैं (निमिष)।

मानव जाति के एक कोटि के आसपास वर्ष आदिशक्ति के आँखों के एक झपकने के समान होते हैं।

Shri Unmesha-nimishot-panna-vipanna bhuvanaavali - You create and destroy series of universes with just a flicker of your eyes.

About a million years of the world of human beings is equivalent to Adi Shakti's one flicker of eyes.

203. **श्रीपराशक्तिः -** आप परम शक्ति हैं अर्थात् परमेश्वर की शक्ति हैं, जिनसे कोई भी शक्ति श्रेष्ठ, उत्कृष्ट नहीं है।

''एक बाजू में महाकाली हैं, दूसरी बाजू में महासरस्वती हैं और मध्य में महालक्ष्मी हैं और उनसे परे आदिशक्ति हैं। उसके परे भी एक शक्ति है जो कि पराशक्ति है। वह शक्ति की जनयित्री है और इसलिये उसने परे होना ही है। (नवरात्रि पूजा)

Shri Paraashakti - You are the Supreme power, the power of Parameshwara to whom no power can be superior.

"On the one side it is Mahakali, on the other it is Mahasaraswati and in the centre it is Mahalaxmi and beyond them is Adi Shakti. Also there is power beyond, which is Parashakti, She is the generator of power and has to be beyond' (Navaratri Puja)

204. **श्रीप्रज्ञान-घन-रूपिणी -** आप प्रज्ञान ज्ञान का एकेंद्रीभूत, घनीभूत रूप हैं। यह ज्ञान अन्तरस्थ है।

''ज्ञान, सर्वशक्तिमान परमात्मा का ज्ञान, कभी भी मानसिक नहीं होता। वह आप के हृदय से शुरू होता है और आप के मस्तिष्क तक जाता है। आप के आनन्द के अनुभव से जो बाहर आता है और आपके मस्तिष्क को आच्छादित कर देती है, ऐसी कोई चीज़ है। इससे आप का मस्तिष्क उसे और अधिक नकार नहीं सकता।'' (शिवपूजा १९.२.९१)

Shri Prajnyaana-ghana-roopini - You are concentrated form of Divine knowledge, the knowledge which is innate.

"The pure knowledge, the knowledge of God Almighty is not mental. It starts from your heart and goes to your

brain. Some thing that comes out of your experience of joy and covers your brain,so that your brain cannot deny any more." (Shiva Puja-19.2.91)

205. **श्रीमातृकावर्ण-रूपिणी** - आप वह हैं जिसका रूप संस्कृत अक्षरों का वर्ण या गुण हैं। इन अक्षरों का उद्‌गम ओम् से हुआ है और देवनागरी लिपि के ये वर्णाक्षर हैं। वे सोलह स्वर और चौतीस व्यंजनों से बने हुये हैं। जब कुण्डलिनी चक्रों में प्रवेश करती है, तो ये नाद/ध्वनि उत्पन्न होते हैं।

देवी अथर्वशीर्ष के अनुसार देवी मन्त्रो की मातृका शक्ति (प्रकृति) है।

Shri Maatrukaa-varna-rupini - You are the one whose form is the coefficient of Sanskrit syllables that have originated from Om and are letters of Devanagri script. They comprise sixteen vowels and thirty four consonants. These syllables are sounds produced when the Kundalini enters the Chakras.

According to Devi Atharvasheersha, Devi is the Matrukaa power of Mantras(Coefficient).

206. **श्रीमहा-कैलास-निलया** - आप श्रीसदाशिव के साथ महाकैलास में निवास करती हैं।

'सहस्रार से भी ऊपर (महाकैलास)' ऐसा भी इसका अर्थ है।

Shri Mahakailaas-nilayaa - You reside in the great Kailasa with Shri Sadashiva.

It also means above the Sahasrara.

207. **श्रीहृदयस्था** - आप प्रत्येक हृदय में आत्मा के रूप में रहती हैं।

Shri Hrudayasthaa - You reside in every heart as Spirit.

208. **श्रीआत्मविद्या** - आप नाड़ियों का, चक्रों का और चैतन्य का ज्ञान हैं।

Shri Atmavidyaa - You are the knowledge of the Nadis, Chakras and as well as the knowledge of spirit.

209. **श्रीमहाविद्या** - आप शुद्धतम तथा महत्तम (सब से शुद्ध और सब से महान) ज्ञान अर्थात् परमेश्वर का ज्ञान है।

Shri Mahaavidyaa - You are the purest and greatest knowledge, i.e. knowledge of God.

210. **श्रीश्रीविद्या** - आप देवी के संबंध में सब से शुद्ध तथा सब से पवित्र ज्ञान हैं।

Shri Shrividyaa - You are the purest and most sacred knowledge about Devi.

211. **श्रीशिरःस्थिता** - आप आदि अस्तित्व अर्थात् विराट के मस्तक में सर्वशक्तिमान परमेश्वर की शक्ति के रूप में है और इस प्रकार सब अवतरणों की संचालक हैं। (द क्रिएशन)

Shri Shirah-sthitaa - You reside in the head of the Primordial Being as the power of God almighty and thus the anchor of all incarnations (Based on "The Creation")

212. **श्री चन्द्रनिभा** - आप चन्द्रमा के समान शान्त तथा प्रसन्न हैं।

Shri Chandra-nibhaa - You are soothing like Moon.

213. **श्रीआह्लददायिनी** - आप आनन्ददायिनी हैं।

''राधा जो कि आह्लाददायिनी है, वह आनंद देने वाली है। उसे केवल देखने से ही लोग आनंदित होते हैं। वह फूलों में होती है, छोटे बच्चों में होती है और आप में भी प्रकट हो सकती हैं। गहनता आने तक यह शक्ति शाब्दिक रहेगी।'' (दिल्ली, होली उत्सव, २८.२.९१)

Shri Alhaad-daayini - You are the giver of joy.

"Radha who is Allhad Daayini, is the giver of joy. Just by seeing her people feel joyous. She is in flowers, in children and can manifest in you too. Till the depth comes this shakti will remain verbal." (Holi celebrations in Delhi 28.2.91)

214. **श्रीगुणनिधिः** - आप गुणों का भंडार हैं।

Shri Guna-nidhi - You are the treasure of virtues.

215. **श्रीअमेया** - आप नापी नहीं जा सकतीं।

Shri Ameyaa - You are immeasurable.

216. **श्रीअज्ञेया** - आप का ज्ञान नहीं हो सकता क्योंकि श्री ब्रह्मदेव जैसी देवता को भी आप का स्वरूप अज्ञात है।

Shri Ajnyeyaa - You cannot be known as your form (swaroop) is unknown, even to deities like Shri Brahmadeva.

217. **श्रीअलक्ष्या** - आप का कोई गन्तव्यस्थान नहीं है क्योंकि आप के परे कुछ भी नहीं

Shri Alakshya- You have no destination since there is nothing beyond you.

218. **श्रीदिव्यविग्रहा** - आप का रूप दिव्य गुणों से युक्त हैं और उससे स्पन्दनों का निःसारण होता है।

Shri Divya-vigrahaa - Your form has Divine coefficient, which emits vibrations.

219. **श्रीवेद्यवर्जिता** - आप केवल तथा परिपूर्ण हैं इसलिये जो ज्ञेय अर्थात् ज्ञान का विषय है आप उससे ऊपर और श्रेष्ठ हैं।

Shri Vedya-varjitaa - You transcend all that is to be known, as you are absolute.

220. **श्रीअष्टमूर्तिः** - आप की आठ मूर्तियाँ अथात् रूप हैं। वे हैं सूर्य, चन्द्र, पंचतत्व (पंच महाभूत) और आत्मा। आप एक वैश्विक आत्मा हैं, जो अलग-अलग गुणों का आविष्कार करती हैं।

Shri Ashta-murti - You have eight forms that are, the

sun, the moon, five elements and spirit. You are one universal spirit manifesting different qualities.

221. **श्रीनिर्द्वैता** - आप द्वैतरहित हैं।

Shri Nirdvaitaa - You are devoid of dualities.

222. **श्रीद्वैतवर्जिता** - आप द्वैत में विद्यमान नहीं हैं क्योंकि द्वैत अहंकार या उपाधियों के निर्माण हैं।

जीवन के द्वैत से पार ऊपर उठ कर और निर्विचार अवस्था में हो कर उसके पश्चात् ही साधक आपके चरण-कमलों को प्राप्त कर सकता है।

Shri Dvaita-varjitaa- You do not exist in dualities because they are products of ego or conditionings.
A seeker can attain your lotus feet only after rising above dualities of life in the thoughtless state.

223. **श्रीअन्नदा** - आप अन्न देने वाली हैं। धरती माता आप का ही आविष्कार है। आप की अमृतमय चैतन्य लहरों के अन्न से भी आप हमें परिपुष्ट करती हैं।

Shri Annadaa - You are the giver of food. The mother earth is your manifestation. You also nourish us with the food of your ambrosial vibrations.

224. **श्रीवसुदा-** आप संपदा देने वाली हैं।

Shri Vasudaa- You are the bestower of wealth.

225. **श्रीभाषारूपा** - आप भाषाओं का रूप हैं।

जैसा कि इस के पूर्व ही उल्लेख किया गया है मातृका जिनसे शब्द बनते है वे देवी की प्रकृति, सहभाविनी हैं। ध्वनि या नाद के रूप में रहने वाले स्वर और व्यंजन (थोडे से भिन्न होते हुए भी) सब भाषाओं में समान या सामान्य हैं। भले ही वर्ण अलग हैं।

''कुण्डलिनी जब चलन करती हैं तब वह नाद करती है, तो कुण्डलिनी के चलन-वलन से ही 'संस्कृत' शब्द निकला है। महान सन्तों ने इस सब का रिकॉर्ड किया। और इसी प्रकार से प्रत्येक चक्र के स्वर और व्यंजन होते हैं और वे पंखुडियों की संख्या के अनुसार होते हैं। और इन सब से संस्कृत भाषा के वर्णाक्षर बने हैं। यह भाषा पवित्र बनायी गयी। पहले तो वह केवल एक भाषा थी जिससे दो भाषाओं का जन्म हुआ। एक लेटिन और जिसे पवित्र बनाया गया, वह संस्कृत भाषा। (नवरात्रि पूजा, १७.१०.८८, प्रतिष्ठान)

Shri Bhaashaa roopaa - You are of the form of languages.

As mentioned earlier, the Matrukaas that constitute words are Devi's coefficient. The vowels and consonants as sounds are common-with some variations- in all languages although letters are different.

"The word Sanskrit has come out of Kundalini's movements when she makes a sound. All was recorded by great saints and like that every Chakra has got vowels and consonants according to the number of sub-plexuses i.e.petals they have and all of them make all the alphabets of the Sanskrit language. This language was made holy. First it was one language out of which two languages were born, was Latin and the one which was made holy was Sanskrit." (Navaratri Puja 17 Oct 1988, at Pratishthan)

226. **श्रीशोभनासुलभा-गतिः -** आप मोक्ष के प्रति सब से सुलभ पथ हैं।

श्रीमाताजी के कृपा से सहजयोग में जागृत की गयी कुण्डलिनी सौम्यता और स्वेच्छा से स्वाभाविक रूप से ही साधक की सुषुम्ना के अन्दर से, किसी प्रकार का दु:ख न देते हुए ऊपर चढ़ती है।

Shri Shobhanaa-sulabhaa gatih - You are the easiest path to salvation.

The Kundalini, awakened in Sahaja Yoga, by Shri Mataji's grace gently and spontaneously ascends through the seekers' Sushumna Nadi without causing any discomfort.

227. **श्रीशिवज्ञानप्रदायिनी** - आत्मसाक्षात्कार के द्वारा आप शिव (आत्मा) का ज्ञान प्रदान करती हैं।

Shri Shiva-jnyaana-pradaayini - You bestow the knowledge of Shri Shiva (Spirit) through self realisation.

228. **श्रीसर्वार्थदात्री** - आप भाग्य की परिपूर्ति प्रदान करती हैं।

Shri Sarva-artha-daatri - You bestow the fulfilment of one's destiny.

229. **श्रीक्षराक्षरात्मिका** - आप क्षर अर्थात् चेतन और जड़ जगत् में हैं। इसी तरह आप अक्षर अर्थात् जो शाश्वत है और क्षर के अंतरतम में गहनता में है, वह भी हैं।

भगवद् गीता में कहा गया है, 'जगत् में पुरुष के दो रूप हैं, आदि पुरुष अर्थात् क्षर तथा अक्षर। क्षर अर्थात् सब जन्मे हुए प्राणी, भूतजात और अक्षर उनके अर्थ गूढता में रहता है।''

Shri Kshara-aksharaat-mikaa - You are in the Kshara i.e. animate and inanimat world as well as in the Akshara which is eternal and resides deep within the Kshara.

Bhagvat Geeta says "In the world there are two aspects of the Purusha, the primordial being viz Kshara and Akshara. Kshara is all living beings and Akshara exists deep within".

230. **श्रीयुगंधरा** - आप युगचक्र का निर्माण करती हैं और उसको धारण कर के आधार देती हैं। उत्क्रान्ति-प्रक्रिया की रक्षा के लिये तथा उसकी प्रगति के लिये प्रत्येक युग में आप ने अवतार लिया।

Shri Yugandharaa- You create and sustain the cycle of Yugas i.e.ages or aeons. You incarnated in each of the Yugas to protect and progress the evolutionary process.

231. **श्रीदेशकालातीता** - आप अवकाश अर्थात् देश और काल से परे हैं।

'धारणा' की परिभाषा करते हुए पतंजलि ने चक्रों के सन्दर्भ में 'देश' शब्द का प्रयोग किया है। 'देशबन्धश्चितस्य धारणा'। देश - अर्थात् चक्र पर अवधान स्थिर रखना यह धारणा है। श्रीआदिशक्ति सब चक्र (देश) और नाड़ियों से ऊपर हैं। नाड़ियाँ काल-वर्तनाम, भूत, भविष्य अर्थात् काल देती हैं। इसलिये देश काल अर्थात् चक्र और नाड़ियाँ। फिर यह भी है, कि देश और काल के अस्तित्व में आने के पूर्व ही आदिशक्ति परमेश्वरी के रूप में विद्यमान थी।

Shri Desha-kaalaa-teetaa - You are beyond space and time. Patanjali refers to Desha in the context of Chakras when he defines Dhaaranaa "Deshabandhash-chittasya Dhaaranaa, meaning keeping attention steady on Desha i.e.Chakra is Dhaaranaa. Shri Adi Shakti transcends all the Chakras (Desh) and Nadis that give time, the present, past and future i.e. space and time. Also Adi Shakti as Parameshwari was present with God Almighty even before space and time came in existence.

232. **श्रीत्र्यम्बिका -** आप की तीन आँखें हैं - सूर्य, चन्द्र और अग्नि।

और आप श्रीविष्णु, श्रीब्रह्मदेव तथा श्री शिव का निर्माण करती हैं।

आप श्री शिव की शक्ति है और शिव को त्र्यम्बक रूप में जाना जाता है।

Shri Tryambikaa- You have three eyes the sun, the moon and the fire.

Also, you are the creator of Shri Vishnu, Shri Brahmadeva and Shri Shiva. Also, you are the power of of Shri Shiva who is known as Tryambaka.

233. **श्रीत्रिगुणात्मिका -** आप सत्व, रज और तम होती हैं। ये तीन गुण सृष्टि का आविष्कार या प्रकटीकरण करते हैं। आप में इन तीन गुणों का सन्तुलन है, जो श्रीमहाकाली, श्रीमहासरस्वती और श्रीमहालक्ष्मी हैं।

Shri Triguna-atmikaa - You become the three Gunas, the Sattwa, the Raja and theTama manifesting the creation. The three Gunas are balanced in your being

as Shri Mahakali, Shri Mahalakshmi and Shri Mahasaraswati.

234. **श्रीओजोवती** - आप में महान ओज है।

Shri Ojovati - You have great vigor.

235. **श्रीसर्वशस्त्रधृतांवरा** - जो शस्त्र धारण करते हैं, उनमें आप सर्वश्रेष्ठ हैं।

Shri Sarva-shastra-drhutaam-varaa- You are most superior among all those who wield weapons.

236. **श्रीपरंज्योतिः**- आप शाश्वत और सर्वोत्तम ज्योति हैं, जो चमकने वाली तेजस्वी वस्तुओं को (ग्रह, नक्षत्र, चंद्र, सूर्य, अग्नि आदि) प्रकाश देती हैं।

Shri Param-jyotih - You are eternal and supreme flame, which gives light to luminous bodies.

237. **श्रीपरमधाम** - आप वह सर्वोच्च शाश्वत निवास हैं, जहाँ जाने की सब ऋषि, संत और साधक आकांक्षा करते हैं।

'उस अवस्था को पहुँचने के बाद कोई भी लौटता नही वह मेरा सर्वोच्च सर्वश्रेष्ठ धाम है।' भगवद् गीता

Shri Param-dhaam - You are the supreme eternal abode where all sages, saints and seekers, aspire to go.

"After reaching that state one does not return, that is my supreme abode." Bhagwat Geeta

238. **श्रीपरमाणुः** - सर्वव्यापी ईश्वरीय प्रेम शक्ति के रूप में आप सूक्ष्मतम से भी सूक्ष्मतर हैं, परमाणु से भी अधिक सूक्ष्म।

Shri Parama-anuh - You are subtler than the subtlest subtler than even sub atomic particles- as all pervading Divine power of love.

239. **श्रीमूर्ता** - स्वयंभू मूर्तियां, छायाचित्र और उसी प्रकार संपूर्ण सृष्टि के द्वारा आप आविष्कृत होती हैं।

Shri Moortaa - You have manifested in forms through Swayambhoo idols, photographs, as well as the entire creation.

240. **श्रीअमूर्ता** - आप निराकार, अरूप हैं और ईश्वर के सर्वव्यापी प्रेम की शक्ति हैं।

Shri Amurtaa- You are without forms, and all pervading power of God 's love.

241. **श्रीअनित्यतृप्ता** - आप आत्मसंतुष्ट हैं और भक्ति से समर्पित अनित्य वस्तुओं से प्रसन्न होती हैं। 'पत्रं, पुष्पं, फलं, तोयं...' (पत्ता, फूल, फल, पानी, कुछ भी जो मुझे भक्ति से देता है, उसको मैं ग्रहण करता हूँ - भगवद् गीता)

Shri Anitya-truptaa - You are self-satisfied and pleased with the offerings of the perishable, e.g. "Patram, pushpam phalam toyam" with devotion.

242. **श्रीसत्यरूपा** - आप परिपूर्ण, केवल सत्य का रूप हैं।

Shri Satya-roopaa - You are of the form of absolute truth.

243. **श्रीसर्वान्तर्यामिणी**- आप सब के अन्तरतम में वास करती हैं।

Shri Sarva-antar-yaamini- You reside in the inner beings of all.

244. **श्रीबुधार्चिता** - प्रबुद्ध जीवों द्वारा आप का पूजन किया जाता है।

Shri Budhaarchitaa - You are worshipped by enlightened souls.

245. **श्रीछन्दःसारा** - आप काव्य (वेदों) का सार हैं।

Shri Chhandah-saaraa - You are the essence of

poetry.

246. **श्रीशास्त्रसारा-** आप पवित्र धर्मग्रंथों का सार हैं। जो शास्त्र अंतिम की खोज करते हैं, उनका सार भी आप ही हैं।

Shri Shaastra-saaraa - You are the essence of scriptures. Also, you are the essence of sciences that search for the ultimate.

247. **श्रीमन्त्र सारा -** आप पवित्र मंत्रों का सार हैं।

Shri Mantra-saaraa - You are the essence of (holy) mantras.

248. **श्रीकान्तार्धविग्रहा -** आप के पति अर्थात् परमेश्वर की आप अर्धांगिनी हैं।

Shri Kaantaardha-vigrahaa - You are the half body of your husband i.e. Parameshwara.

249. **श्रीपंचभूतेशी -** आप पंचमहाभूतों पर शासन करती हैं।

Shri Pancha-bhuteshi- You are the ruler of five elements.

250. **श्रीशाश्वती -** आप नित्य (अस्तित्व में) हैं।

Shri Shaashwati - You are ever existent.

251. **श्रीशाश्वतैश्वर्या -** आप का ऐश्वर्य नित्य हैं।

Shri Shaashwat-aishwaryaa - Your glory is ever existent.

252. **श्रीलीलाविनोदिनी -** जिस प्रकार नाटक बनाने का और देखने का आनन्द लिया जाता है उसी प्रकार से आप सृजन की लीला का आनन्द उठाती हैं क्योंकि वह आप के चित्त की लीला अर्थात् चिद्विलास है। आप मानव के रूप में अवतार लेती हैं और इस संसार के जीवन को साक्षीरूप से देखती हैं जैसे कि आप एक नाटक

देख रही हैं।

Shri Leelaa-vinodini - You enjoy the play of the Creation like making and watching a drama since it is the play of your attention, Chidvilas. You incarnate in the human form and witness worldly life as if you watch a drama.

253. **श्रीसर्व-अवताराणां शक्तिः -** जिन्होंने नकारात्मक शक्तियों का विनाश किया ऐसे अवतरणों की आप शक्ति हैं।

'तो इस बात का आकलन होना चाहिये कि पुरुष हलचल या गति से उत्पन्न होने वाली वस्तु है। मेरे कहने का अर्थ है कि पुरुष अवतरण गत्युत्पादित पक्ष हैं। संचित ऊर्जा तो स्त्री ऊर्जा ही है। इसलिये कृष्ण ने भी कंस का वध करना था, तो उनकी सहायता के लिये उन्होंने राधा से पूछा। तो शक्ति ऐसी होती है। शक्ति के बिना उन का कोई अस्तित्व ही नहीं। यह ऐसा ही है, जैसा कि प्रकाश के बिना दीप का कोई अस्तित्व ही नहीं। तो ये पुरुष रूप में हैं पर उनके पीछे शक्तियाँ ही हैं, जिन्होंने ये सारे कृत्य किये हैं।' (नवरात्रि पूजा भाषण, प्रतिष्ठान, १८.१०.१९८८)

Shri Sarva avataaraa-naam Shakti - You are the Shakti of incarnations who destroyed negative forces.

"So one has to realise that the man is the kinetic thing. I mean the male Avataras are the kinetic side. The potential energy is the female energy. So, even when Krishna had to kill Kansa, he had to ask Radha to help him. So is the Shakti. Without Shakti they have no existence. It is like, without light the lamp has no existence. So these are male forms but behind them are the Shaktis which have performed all these acts." (Navaratri Puja talk at Pratishthan on 18 Oct 1988)

254. **श्रीविश्वार्तिहारिणी -** आप विश्व की पीड़ाओं का निवारण करती हैं।

Shri Vishvaarti-haarini - You remove sufferings of the Universe.

255. **श्रीविश्वेश्वरी -** आप विश्व की ईश्वरी हैं।

Shri Vishweshwari - You are the Goddess of the Universe.

256. **श्रीजगदाधारा -** आप जगत् का आधार हैं।

Shri Jagata-adhaaraa - You are the support of the world.

257. **श्रीजगन्माता -** आप जगत् की माता हैं।

Shri Jagan-maataa - You are the mother of the world.

258. **श्रीअनन्तवीर्या -** आप अनन्त बल से युक्त हैं।

Shri Ananta-veeryaa - You are the one with unending strength.

259. **श्रीविश्वस्यबीजा -** आप विश्व का बीज अर्थात् उद्गम स्थान हैं।

Shri Vishwasya-beejaa - You are the seed i.e. the source, of the Universe.

260. **श्रीदाक्षायणी -** राजा दक्ष की पुत्री के रूप में सती नाम से आप आयी और श्रीशिव से आप का विवाह हुआ।

Shri Daakshaayani - You came as the daughter of King Daksha known as Sati and married to Shri Shiva.

261. **श्रीदक्षयज्ञविनाशिनी -** राजा दक्ष द्वारा किये जा रहे हवन के विध्वंस का कारण सती रूप में आप ही थी।

दक्ष को अपनी उपाधि 'प्रजापति' पर बहुत गर्व था। जब निमंत्रण न होते हुए भी सती यज्ञ स्थान पर आयी तब दक्ष ने शिव की भर्त्सना की। शिव का अपमान सहने में असमर्थ होते हुए सती हवनकुंड की अग्नि में कूद पड़ी। अपनी पत्नी की मृत्यु के कारण क्रोधावेश में श्रीशिव ने दक्ष

के हवन का नाश किया। यह दर्शाता है कि आत्मा से विमुख होने पर अहंकारी व्यक्ति अपने विनाश को निमंत्रित कर सकता है।

Shri Daksha-yajnya-vinaashini - You, as Sati, caused destruction of the Havan being performed by King Daksha.

Daksha was proud of his title Prajapati. He denounced Shri Shiva when Shri Sati visited the site of the Havan, uninvited. Unable to bear Shri Shiva's insult Sati jumped into the fire. Shri Shiva wrathful by his wife's death, destroyed Daksh's Havana. It shows that an egoist turning away from spirit can invite his destruction

262. **श्रीपार्वती -** तत्पश्चात् आप हिमवान् अर्थात् हिमालय पर्वत की पुत्री के रूप में आयी।

Shri Parvati - Next you came as the daughter of Parvata, the mountain as the daughter of King Himvan, i.e. the Himalaya.

263. **श्रीअपर्णा -** श्रीशिव की प्राप्ति के लिये तपस्या करते समय आप ने बिल्व अर्थात् बेल की पत्तियां खा कर ही जीवित धारण किया।

Shri Aparna- You survived only by eating the Bilva leaves while in the penance to achieve Shri Shiva.

264. **श्रीगौरी -** आप ने श्री शिव की पूजा की और आप गौर वर्ण की हैं।

आज वह दिन है जिस दिन कन्या गौरी श्रीशिव की पूजा करने बैठी थी। उन्होंने एक शिवलिंग बनाया और अपना सिंदूर उस पर डालते हुये बैठी थी कि, 'आप इस का ध्यान रखे क्योंकि आपसे मेरे मिलन का यह चिह्न है। उस का ध्यान रखने के लिये मैंने आपके पास यह छोड़ दिया है।' (लंदन में 'कुमारी' इस विषय पर)

Shri Gauri - You worshipped Shri Shiva. Also, you are the one of white complexion.

"Today is the day when the virgin Gauri sat down to

worship Shri Shiva. She made a Shivalinga and was sitting and putting her sindur (Kumkum) on that. " That you look after this, `which is the mark of my union to you. I leave it to you to look after." (Seminar in London on virgin).

265. **श्रीकामारिवल्लभा** - प्रेम की देवता मदन का नाश करने वाले (श्रीशिवजी) की आप प्रियतमा हैं।

Shri Kaamaari-vallabhaa - You are the beloved of the destroyer of Madana the God of love.

266. **श्रीशम्भुमोहिनी** - आप श्रीशिव को मोहित कर रही थी।

Shri Shambhu mohini - You were bewitching to ShriShiva.

267. **श्रीहेमाभा** - आप का वर्ण सुवर्ण या हिम के समान है।

Shri Hemaabhaa - You have the complexion which is like gold or snow.

268. **श्रीकुमारी-पूजन-रता** - कुमारी के रूप में आप श्री शिव की पूजा करने में मग्न थीं।

Shri Kumari pujana-rata - As virgin you were engrossed in worshipping Shri Shiva.

269. **श्रीकुमारीव्रतचारिणी** - आपने कुमारी का व्रत करने के लिये आप ने माता-पिता के गृह का त्याग किया।

Shri Kumari vrata-chaarini - You left your parents's house to practise the austerities of virgin to please Shri Shiva.

270. **श्रीकुमारीभक्तिसुखिनी** - आप कुमारियों की भक्ति से आनंदित होती हैं।

Shri Kumari bhakti-sukhini - You are happy with devotion of virgins.

271. **श्रीकुमारीपूजकप्रीता** - जो कुमारियों का पूजन करते हैं उनसे आप प्रेम करती हैं।

Shri Kumari pujak-preeta - You love those who worship the virgin.

272. **श्रीधूर्जटा** - आप अपनी जटाओं को हिलाती हैं। देवी की जटायें उनकी श्रीशिवजी से एकात्मकता दिखाती हैं। श्री शिव धूर्जटि नाम से जाने जाते हैं।

Shri Dhurjataa - You shake your matted hair. The matted hair of Devi shows her oneness with Shri Shiva who is known as Dhurjatah.

273. **श्रीशिवसमर्पिता** - आप श्रीशिव के प्रति समर्पित हैं।

Shri Shiva samarpitaa - You are dedicated to Shri Shiva.

274. **श्रीशिवरूपा** - आप श्रीशिव का आविष्कृत रूप हैं।

Shri Shivaroopa- You are the manifest form of Shri Shiva.

275. **श्रीकामेश्वर-मुखालोक -कल्पित श्री-गणेश्वरा** - श्रीशिव के मुख का केवल अवलोकन कर के आप ने श्रीगणेश का निर्माण किया।

Shri Kaameshwar-mukhaaloka-kalpit-Shri Ganeshwara - You created Shri Ganesha, merely by looking at the face of Shri Shriva.

276. **श्रीमहात्रिपुरसुंदरी** - आप सब त्रिमूर्तियों की महाराज्ञी हैं जैसे कि श्रीब्रह्मदेव, श्रीविष्णु, श्रीमहेश और इसी प्रकार से अन्य त्रिमूर्तियां जैसे ध्यान-ध्यातृ-ध्येय जैसे कि ध्यान, ध्यान करने वाला और ध्यान का विषय; या शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक अस्तित्व।

Shri Mahaa-tripur-sundari - You are the great empress of all triads, e.g. the Trimurits, Shri Brahmaedeva, Shri Vishnu and Shri Shiva, as well as

others like, Dhyan, Dhyatru and Dhyeya i.e meditation, the meditator and the object of meditation, the physical, mental and psychic beings etc.

277. **श्रीविकचचन्द्रचूडामणिः** - आप श्रीशिव का वैश्विक स्वरूप हैं। आप चमकते हुए चंद्र का आभूषण मस्तक में धारण करती हैं।

Shri Vikacha-chandra-choodaamani - You are Shri Shiva's cosmic form. It also means, 'you weld the luminous moon on your head as an ornament.'

278. **श्रीमुख-समुल्लासिता** - आप का मुख चमकता हुआ और प्रसन्न हैं।

Shri Mukha-samullasitaa- You are the one with joyous and brilliant face.

279. **श्रीलास्यप्रिया** - विश्वों की सृजनकर्ती के रूप में आप को लास्य बहुत प्रिय है। (द क्रिएशन)

Shri Laasya-priyaa - You, as the creatrix of universes, are fond the creation. (Based on 'The Creation')

280. **श्रीअष्टभैरवी** - आप आठ भैरवों की शक्ति हैं।

Shri Ashta-Bhairavi - You are the power of the eight Bhairavas.

281. **श्रीचित्तस्वरूपा** - चित्त अर्थात् श्रीमहासरस्वती शक्ति, आपका एक स्वरूप है।

Shri Chitta-swaroopaa - You are of the form of Chitta, Shri Mahasaraswati Shakti.

282. **श्रीसत्त्वस्वरूपा** - सत्व गुण अथवा श्रीमहालक्ष्मी तत्व का सार आपका एक रूप हैं।

Shri Sattwa-swaroopaa - You are of the form of Sattwa Guna or the essence of Shri Mahalakshmi Shakti.

283. **श्रीआनन्दस्वरूपा** - आनंद अर्थात् श्रीमहाकाली शक्ति आपका एक रूप हैं।

Shri Ananda-swaroopaa - You are of the form of joy, Shri Mahakali Shakti.

284. **श्रीपरावाणी** - आप वाग्देवी अर्थात् वाणी की देवता का सूक्ष्मतम और अन्तिम रूप हैं। उसका स्थान नाभि में हैं।

Shri Paraa vaani - You are the subtlest, and ultimate form of Vaagdevi, the Goddess of speech. Its place is in the Naabhi.

285. **श्रीपश्यन्ती-वाणी** - आप वाणी की देवता का अन्तरालस्थ अर्थात् मध्यवर्ती रूप हैं। यह वाणी परावाणी से जड़, स्थूल है और हृदय में इसका स्थान है।

Shri Pashyanti vaani - You are the intermediate form of Goddess of speech, grosser than the Paraa vaani, located in the heart.

286. **श्रीमध्यमा-वाणी** - आप वाणी की देवता का द्वितीय मध्यवर्ती रूप हैं, जो पश्यन्ती वाणी से स्थूल है और कण्ठ में इसका स्थान है।

Shri Madhyamaa vaani - You are the second intermediate form of the Goddess of speech grosser than the Pashyanti vaani located in the throat.

287. **श्रीवैखरी-वाणी** - शब्दों के उच्चारण के माध्यम से जो प्रकट होता है ऐसा वाणी का बोला गया रूप आप हैं।

''परावाणी का प्रारंभ यहाँ से होता है। (अपनी नाभि पर हाथ रख कर श्रीमाताजी ने स्पष्ट किया)। जो शांत है ऐसी ध्वनि परावाणी है। बाद में वह हृदय में आती है जब वह अनाहत बन जाती है। उसे पश्यन्ती कहते हैं क्योंकि वह केवल साक्षी होती है। वाणी, वाणी की वह ऊर्जा, उस ध्वनि की ऊर्जा की पश्यन्ती साक्षी है और वह अनाहत अवस्था में है। फिर वह यहाँ अर्थात् विशुद्धि के स्तर पर

आती है। इसलिये उसे मध्यमा कहते हैं। क्योंकि वह अभी भी मध्य अवस्था में है जो ऊपर कण्ठ तक है। पर जब वह मुख में आती है, तो वह वैखरी होती है। तब वह बोलती है, बोलती है।

परावाणी वह है कि जब ईश्वर को कुछ बोलना होता है, तो ईश्वर परावाणी में ही कहते हैं जो कि आप सुन नहीं सकते। उसी प्रकार से आप के अन्दर आप की परावाणियाँ हैं। निश्चित रूप से यह मानवी है। पर हमने कहना चाहिये कि मानवी परावाणी ईश्वर की परावाणी का प्रतिबिंब है जिसे आप सुन नहीं सकते। आप अपने पेट में उस वाणी को सुन नहीं सकते। पर जैसे कि आप के पेट में कुछ पीड़ा होती है, विशेष रूप से कर्करोग (कैन्सर) या ऐसीही कोई व्याधियाँ, तब आप के लिये समस्या हो जाती है और फिर आप के अन्दर उसका स्पन्दन या स्फुरण शुरू हो जाता है।

जब तक आपको आपकी परावाणी की संवेदना, अनुभूति, बोध नहीं होता, तब तक ईश्वर क्या कहते हैं, आप सुन नहीं सकते। इसलिये ईश्वर को स्वयं धरती पर आना पडता है और अपनी सारी बातें आपको बताने के लिये ईश्वर को अपनी वैखरी का उपयोग करना पड़ता है। तो उससे (वैखरी से) आप नीचे जाना प्रारंभ करते हैं और मध्यमा अवस्था में आते हैं जहाँ आप शांति और मौन का अनुभव लेते हैं। उसके बाद आप पश्यन्ति में आते हैं। वहाँ आप अपने साक्षी अवस्था का आनन्द लेते हैं। अब आप परावाणी में आते हैं। जहाँ आप को ध्वनि प्राप्त होता है। या आप कह सकते हैं कि आपको बोध, केवल सूचना मिलती है। पर उसका कोई ध्वनि नहीं होता। केवल बोध जैसा कि बिना आवाज का विचार। इसलिये आपको प्रेरणा परावाणी से ही आती है। (नवरात्रि पूजा भाषण, प्रतिष्ठान, १८.१०.१९८८)

Shri Vaikhari-vaani - You are the spoken form of speech manifested through pronunciation of words.

"Paraavaani starts from here (Shri Mataji explained keeping Her hand on the Nabhi), is the sound which is silent.

Then it comes to the heart when it becomes Anahat. It is called as Pashyanti because it just witnesses. The Vaani, that energy of Vaani, the energy, the energy of that sound, just witnesses and is Anahat state. Then it comes here (Vishuddhi level). So, it is called Madhyamaa, still in the middle stage, up to the throat, but when it comes to the mouth, it becomes Vaikhari, then it speaks, speaks.

"Paraavani is, say if God has to say something then He says it in the Paraavaani which you cannot hear it. In the same way, you have got your Paraavaanis within you which is, of course, the human, reflection of the same, we should say, the same Paraavaani, which you cannot hear. You cannot hear the Vaani in your stomach, but say, you get some trouble, specially, Cancer or any such diseases, you get a problem then in you it starts throbbing."

"Unless and until you have felt your Paraavaani you cannot hear what God is speaking. So God Himself has to come on the earth and has to use His Vaikhari to explain His things to you. So, by that you start going down and come to Madhyamaa state where you enjoy your silence. Then you come to Pashyanti. There you enjoy your witness state and you come to Paraavaani where you get the sound or you can say you get the information, just information, but it has no sound, just the information like the thought without sound. So the inspiration comes to you from Paraavaani." (Navaratri Puja, Pratishthan-18 Oct 88)

288. **श्रीअनन्तरूपा -** आप के अनन्त रूप हैं।

Shri Ananta-roopaa - You have unending forms.

289. **श्रीअनन्तस्था -** जो अनन्त अर्थात् अन्तहीन हैं ऐसे सर्वशक्तिमान परमात्मा से आप एकरूप हैं।

Shri Anantasthaa - You are one with God Almighty who is Ananta .i.e. without end.

290. **श्रीअनन्तअवतारधारिणी -** आप अनन्त अवतार लेती हैं। सन्त,

ऋषि और अबोध लोगों की रक्षा के लिये वह (देवी) मुख्य और गौण अवतरणों में हजार बार आयीं। (दि क्रिएशन)

Shri Ananta-avataar-Dhaarini - You take unending incarnations. "She came one thousand times in major and small incarnations to protect saints, sages and innocent people." (The Creation).

291. **श्रीकराङ्गुली-नखोत्पन्न-नारायण-दशाकृतिः -** श्रीविष्णु के दस अवतार आप की हाथों की उंगलियों से बाहर निकलते हैं।

Shri Karaanguli-nakhot-panna-Narayana dashaakruti - The ten incarnations of Shri Vishnu emerge from your finger nails.

292. **श्रीअनन्त-नाम्ने-संज्ञाता-** आप के रूप और अवतरणों के अनुरूप आपके अनन्त नाम हैं।

Shri Ananta-naamne-sanjnyaataa - You have unending names, corresponding to your forms and incarnations.

293. **श्रीनारायणी -** आप श्रीनारायण की शक्ति हैं। नर का अर्थ है मानव प्राणी और अयनी निवास (स्थान) है। तो आप मनुष्य प्राणियों का निवासस्थान या अंतिम अग्रभूमि (प्राप्तव्यस्थान) हैं।

Shri Narayani - You are the power of Shri Naaraayana. Nara means human being and ayani is abode. So, you are the abode or final destination of human beings.

294. **श्रीईशानी -** आप सभी बातों पर नियंत्रण रखती हैं और उन्हें नियमित करती हैं।

Shri Ishaani - You control and regulate every thing.

295. **श्रीपृथ्वी-तत्त्व-ईश्वरी -** पृथ्वी माता तत्त्व की आप देवी हैं।

Shri Pruthvi tattwa ishwari - You are the Goddess

of the mother earth element.

296. **श्रीजल-तत्त्व-ईश्वरी -** आप जल तत्त्व की देवी हैं।

Shri Jal tattwa ishwari - You are the Goddess of the water element.

297. **श्रीअग्नि-तत्त्व-ईश्वरी -** आप अग्नि तत्त्व की देवी हैं।

Shri Agni tattwa ishwari- You are the Goddess of the fire element.

298. **श्रीवायु-तत्त्व-ईश्वरी -** आप वायु तत्त्व की देवी हैं।

Shri Vaayu tattwa ishwari - You are the Goddess of the air element.

299. **श्रीआकाश-तत्त्व-ईश्वरी -** आप आकाश तत्त्व की देवी हैं।

Shri Akasha tattwa ishwari - You are the Goddess of the ether element.

300. **श्रीहंसयुक्तविमानस्था -** हंसोंद्वारा उडाये जाने वाले रथ पर आप आरूढ होती हैं।

Shri Hansa-yukta-vimaanastha - You ride in the chariot flown by Swans.

301. **श्रीब्रह्माणि -** आप श्रीब्रह्मदेव की शक्ति हैं।

Shri Brahmaani - You are the power of Shri Brahmadeva.

302. **श्रीकौशाम्भ-क्षरिका-** राक्षसों का नाश करने के लिये आप अपने कमण्डलु से चैतन्य लहरों से भारित पानी छिटकती हैं।

Shri Kaushaambh-ksharikaa - You sprinkle vibrated water from your Kamandalu, to destroy demons.

303. **श्रीत्रिशूलचंद्राहिधरा** - आप त्रिशूल, चन्द्रमा और सर्प को धारण करती है।

Shri Trishul-chandra-ahi-dharaa - You are the one who carries the trident, the moon and the snake.

304. **श्रीमहावृषभवाहिनी** - आप महावृषभ पर बैठी हैं।

Shri Mahaa-vrushabh-vaahini - You are seated on the great bull.

305. **श्रीमाहेश्वरी** - आप श्रीमहेश की शक्ति हैं।

Shri Maaheshwari - You are the power of Shri Mahesha.

306. **श्रीमयूर-कुक्कुट-वृता** - आप मोर और मुर्गे के समेत होती हैं और उनके द्वारा आप की सेवा की जाती है।

Shri Mayur-kukkuta-vrutaa - You are attended by the peacock and the cock.

307. **श्रीअनघा** - आप पापरहित (निष्पाप) हैं।

Shri Anaghaa - You are sinless.

308. **श्रीमहाशक्तिधरा** - आप सर्वोच्च शक्तियाँ धारण करती हैं।

Shri Mahaa-shakti-dharaa - You are the one who wields supreme powers.

309. **श्रीकौमारी** - आप कार्तिकेय की शक्ति हैं।

Shri Kaumaari - You are the one who is Shakti of Shri Kartikeya.

310. **श्रीशंखचक्रगदाशाङ्र्गगृहीता** - आप शंख, चक्र, गदा और धनुष्य धारण करती हैं।

Shri Shankha-chakra-gadaa-shaaranga gruhitaa - You are the one who holds the conch, the discus the club and the bow.

311. **श्रीवैष्णवी -** आप श्रीविष्णु की शक्ति हैं।

Shri Vaishnavai - You are the Shakti of Shri Vishnu.

312. **श्रीउग्र-महाचक्र-गृहीता -** आप भयंकर महाचक्र को पकड़ती हैं।

Shri Ugra-mahaa-chakra-gruhitaa - You are the one who holds huge formidable discus.

313. **श्रीवसुंधरा-दंष्ट्र-उद्धृता -** आपने दंष्ट्रा से पृथ्वी को ऊपर उठाया है। (पृथ्वी का उद्धार किया है)

Shri Vasundharaa-danshtra-udhrtutaa - You are the one who uplifted the earth with the tusk.

314. **श्रीवराह-रूपिणी -** पृथ्वी को जलप्रलय से बाहर निकालने के लिये आप वराह का रूप लेकर आयी।

Shri Varaaha-rupini - You are the one who came in the form of boar to extricate the earth from cataclysmic flood waters.

315. **श्रीनृसिंहरूपा -** हिरण्यकश्यपु दैत्य का वध करने के लिये आपने आधा मानव और आधा सिंह ऐसा रूप धारण किया।

Shri Nrusinha-roopaa- You are the one who took the form of the half man and half lion to kill demon Hiranya-kashyapu.

316. **श्रीत्रैलोक्य-त्राण-सहिता -** तीनों लोगों के हित आप बनाये रखती है।

Shri Trailokya traan sahitaa- You are the one who takes care of benevolence of the three worlds.

317. **श्रीकिरीटिनी** - आप इंद्र के मुकुट से भूषित, सुशोभित हैं।

Shri Kireetini- You are adorned with the crown of Indra.

318. **श्रीमहावज्रा** - आप वज्र (नाम का) शस्त्र धारण करती हैं।

Shri Mahaa-vajraa- You weild Indra's weapon thunder bolt.

319. **श्रीऐन्द्री** - आप इन्द्र की शक्ति है।

Shri Aindri - You are the one who is the power of Indra.

320. **श्रीशिवदूती** - आप श्रीशिव की दूत हैं।

Shri Shiv-dooti - You are the messenger of Shri Shiva.

321. **श्रीघोररूपा** - नकारात्मक बलों को भयभीत करने के लिये आप भयानक रूप धारण करती हैं।

Shri Ghora-roopaa - You take the terrible form to frighten negative forces.

322. **श्रीमहारवा** - शत्रुओं को भयभीत करने के लिये आप भयभीत करने वाली महाध्वनि करती हैं।

Shri Mahaa-ravaa - You makes frighteningly loud sound to strike fear in the enemy.

323. **श्रीहत-दैत्य-महाबला** - महाबलवान दैत्यों के समूह का नाश करने वाली आप सबसे महान बलवती हैं।

Shri Hatadaitya-mahabalaa - You are the strongest one who slew hosts of mighty demons.

324. **श्रीचामुण्डा** - आप ने चण्ड दैत्य का वध किया।

Shri Chaamundaa - You are the killer of demons Chanda.

325. **श्रीमुण्डमथनी** - आप ने मुण्ड दैत्य का वध किया।

Munda-mathani - You are the killer of demon Munda.

326. **श्रीध्रुवा** - आप दृढ़ता से स्थिर हैं जिन्हें विचलित नहीं किया जा सकता।

Shri Dhruvaa - You are unshakable.

327. **श्रीमहारात्री** - आप महारात्री हैं।

Shri Mahaa-raatri - You are the great night.

328. **श्रीमेधा** - आप मेधा अर्थात् बुद्धि हैं।

Shri Medhaa - You are intelligence.

329. **श्रीतामसी** - आप काले वर्ण की हैं।

Shri Taamasi - You are dark hued.

330. **श्रीनियतिः** - आप अंतिम नियति हैं।

Shri Niyati- You are the final destiny.

331. **श्रीसर्वशक्तिसमन्विता** - आप के अन्दर ही आपकी सारी शक्तियाँ हैं।

Shri Sarva-shakti-saman-vitaa - You have all the powers within yourself.

332. **श्रीलोचनत्रयभूषिता** - आप तीन आँखों से सुशोभित हैं।

Shri Lochana-traya- bhushitaa - You are the one with three eyes.

333. **श्रीसौम्यवदना** - आप का मुख सौम्य है।

Shri Saumya-vadanaa- You are with benign countenance.

334. **श्रीशैलपुत्री** - आप हिमालय की पुत्री हैं और आप का विवाह श्रीशिव से हुआ है। आपको हिमानी नाम से भी जाना जाता है।

Shri Shaila-putri - You are the daughter of the Himalayas married to Shri Shiva also known as Himaani.

335. **श्रीब्रह्मचारिणी** - सर्वशक्तिमान ईश्वर का साक्षात्कार आप प्रदान करती हैं। आप कुमारी हैं।

Shri Brahma-chaarini - You confer the realisation of Brahma. Also, it means virgin.

336. **श्रीचन्द्रघण्टा-** आपके हाथ में जो घंटा है उसमें चंद्र है।

Shri Chandra-ghantaa- You are the one with moon in the bell in your hand.

337. **श्रीकुष्माण्डा** - आप की सन्तानों को आराम देने के लिये आप अपने उदर में सांसारिक जीवनों की पीड़ायें रखती हैं।

Shri Kushmaandaa - You are the one who keeps pains of worldly lives in your belly to relieve your children.

338. **श्रीस्कन्दमाता** - आप श्रीकार्तिकेय की माता हैं।

Shri Skanda-maaataa - You are the mother of Shri Kartikeya.

339. **श्रीकात्यायनी-** आप प्रसन्न मुख हैं।

Shri Kaatyaayani - You are the one with pleasant face.

340. **श्रीकालरात्री** - आप विनाश की काली रात हैं।

Shri Kaala-raatri - You are the dark night of

destruction.

341. **श्रीमहागौरी** - आप ने तपस्या के द्वारा गौर वर्ण प्राप्त किया है। और फिर आप महान कुमारी कन्या हैं।

''कुमारी की शक्तियाँ क्या होती हैं? कि वह क्रिस्त के जैसे महिमायुक्त सन्तान को जन्म दे सकती है, कि अपने स्वयं के शरीर से श्रीगणेश का सृजन कर सकी, कि वह अबोध, कार्यप्रवण, निरहंकारी, जो अहंकार से अनभिज्ञ है, ऐसे संतानों की रक्षा कर सकी। कुमारी ऐसी कल्पना या धारणाओं का स्वीकार नहीं कर सकती जो वैश्विक नहीं है क्योंकि कुमारी स्वयं वैश्विक है।'' (कुमारी-कार्यशाला में श्रीमाताजी का उपदेश - लंदन, डिवाईन कुल ब्रीज, वॉल्यूम ६, अंक १ और २)

Shri Mahaa-gauri - You have achieved white complexion through the penance. Also, you are great virgin.

"What are the powers of Virgin? That She can bear child of that magnitude that was Christ, that She could create Shri Ganesh out of Her own body, that she could protect innocent, dynamic force of Her children who are egoless who have not known what is ego." " Virgin cannot accept ideas which are not universal, because she is universal by nature" (Mother's advice in the Virgin's workshop in London-Divine Cool breeze Vol VI issues 1and 2)

342. **श्रीसिद्धिदात्री** - आप सिद्धि यश प्रदान करने वाली-विशेष रूप से मोक्ष प्राप्ति में सिद्धि प्रदान करने वाली हैं।

Shri Siddhi-daatri- You are the bestower of success, especially in achieving salvation.

343. **श्रीजयन्ती** - आप नित्य विजयिनी हैं।

Shri Jayanti - You are ever victorious.

344. **श्रीकाली-** रक्तबीज दैत्य का रक्तप्राशन और उसका विनाश करने के लिये देवी से प्रकट होने वाली आप कृष्ण वर्ण और भयानक रूप वाली हैं।

Shri Kaali - You are the one who is dark hued in the ferocious form manifested from the Goddess to drink the blood of Raktabeeja and destroy him.

345. **श्रीभद्रकाली -** जो मांगल्य और शुभ देती हैं ऐसी काली का आविष्कार आप हैं।

Shri Bhadra-kaali - You are the one who is the manifestation of Kaali who confers auspiciousness.

346. **श्रीकपालिनी-** दैत्यों का विनाश करने के बाद उनके कपालों की (मस्तक की अस्थियों का समूह) माला आपने धारण की थी।

Shri Kapaalini - You are the one who wore the garland of skulls of demons after destroying them.

347. **श्रीदुर्गा -** आप ने दुर्गम नाम के राक्षस का वध किया। अपने बच्चों के मध्य हृदय में वास कर के आप उनकी रक्षा करती हैं।

Shri Durgaa - You are the Goddess who killed demon Durgam. Also, you who protect your children by residing in their Center hearts.

348. **श्रीशिवा -** आप कल्याण प्रदान करने वाली हैं।

Shri Shivaa- You are the bestower of benevolence.

349. **श्रीधात्री -** धरतीमाता के रूप में जो आधार देती हैं, रक्षा करती हैं और पोषण करती हैं वह आप ही हैं।

Shri Dhaatri - You are the one who supports, protects and nourishes in the form of mother earth.

350. **श्रीशर्वरी** - आप विनाश की रात्रि हैं। शर्वरी पति यह श्रीशिव का एक विशेषण या उपाधि है।

Shri Sharvari - You are the one who is the night of destruction. Sharvaripati is an epithet of Shri Shiva.

351. **श्रीअव्यया** - आप वह हैं जिसका कभी व्यय नहीं होता।

Shri Avyayaa - You are the one who never diminishes.

352. **श्रीविन्ध्याचलनिवासिनी** - आप विन्ध्यपर्वत में निवास करती हैं।

Shri Vindhyaachal-nivaasini - You are the one who dwells in the Vindhya mountains.

353. **श्रीअयोनिजा** - आप का जन्म योनि से नहीं हुआ।

Shri Ayonijaa - You are the one who was not born from a womb.

354. **श्रीरक्तदंतिका** - दैत्यों का भक्षण करने से आप के दाँत रक्तवर्ण अर्थात् लाल हो गये।

Shri Rakta-dantikaa - You are the one whose teeth became red by devouring demons.

355. **श्रीशताक्षी** - आप की सौ आँखें हैं।

Shri Shata-akshi - You are the one with a hundred eyes.

356. **श्रीशाकंभरी** - पौधे और सागों (शाकों) के जगत का आलंबन और भरण-पोषण आप करती हैं।

Shri Shaakam-bhari - You are the one who sustains life of the plant and vegetable kingdom.

357. **श्रीभीमादेवी** - आप का शरीर भव्य, विशाल तथा सामर्थ्य संपन्न है।

Shri Bheemaa-devi - You are the one having huge mighty being.

358. **श्रीभ्रामरी** - राक्षसों का विनाश करने के लिये आपने भंवरों की झूंड का रूप धारण किया।

Shri Bhraamari - You are the one who took the collective form of beetles (Bhramar) to destroy demons.

359. **श्रीभद्रा** - पवित्रता तथा मांगल्य प्रदान करने वाले श्रीशिव अर्थात् भद्र की आप शक्ति हैं।

Shri Bhadraa - You are the power of Bhadra, Shri Shiva the bestower of auspiciousness.

360. **श्रीज्योत्स्ना** - आप चंद्रप्रकाश हैं क्योंकि चंद्र को आप प्रकाशित करती हैं।

Shri Jyotsnaa - You are the moonlight since your light illumines the moon.

361. **श्रीइन्दुरूपिणी** - आप चंद्रमा का रूप हैं।

Shri Indu-rupini - You are of the form of the moon.

362. **श्रीसुखा** - आप आनंद, सुख की साक्षात् मूर्ति हैं अर्थात् आप से आनंद नि:सृत होता है।

Shri Sukhaa - You are happiness personified, meaning your being emits happiness.

363. **श्रीकल्याणी** - आप कल्याण की साक्षात् मूर्ति हैं क्योंकि कल्याण लानेवाली आप की जो कृपा है वह आपसे नि:सृत होती है।

Shri Kalyaani - You are welfare personified since your being emits your grace which brings welfare.

364. **श्रीऋद्धिः** - आप वृद्धि और समृद्धि की साक्षात् मूर्ति हैं क्योंकि आप की कृपा से परिपूर्ण वृद्धि और समृद्धि आती है।

Shri Riddhi - You are growth and prosperity personified as your grace brings about all round growth and prosperity.

365. **श्रीशर्वाणी** - आप श्रीशिव अर्थात् शर्व की पत्नी है। श्री शर्व अंतिम विनाश के समय सब भूतजात को अपने अन्दर खींच लेते हैं।

Shri Sharvaani - You are the consort of Shri Shiva who is Sharva the one who withdraws all beings into himself at the time of final destruction.

366. **श्रीदुर्गपारा** - आप अपने बच्चों को समस्याओं से पार ले जाती हैं।

Shri Durga-paaraa - You take your children across difficulties.

367. **श्रीसारा** - आप सार हैं अर्थात् सृजन के अस्तित्य का पहलू हैं।

Shri Saaraa - You are the essence i.e. the existence aspect, of the Creation.

368. **श्रीसर्वकारिणी** - आप प्रत्येक कार्य घटित करती हैं।

Shri Sarva-kaarini - You are the doer of every thing.

369. **श्रीख्यातिः** - सारासार विवेक का ज्ञान आप हैं।

Shri Khyaati - You are the knowledge of discrimination.

370. **श्रीकृष्णा** - आप का वर्ण कृष्ण-नील हैं।

Shri Krishnaa - You are the one who has blue-black complexion.

371. **श्रीधूम्रा** - आप का रूपदर्शन धूम्र (कोहरे) के समान हैं।

Shri Dhoomraa - You are the one who has mist–like appearance.

372. **श्रीअतिसौम्या अतिरौद्रा -** आप अत्यंत सौम्य (अपने बच्चों के लिये वात्सल्य और अनुकंपा से युक्त) और अत्यंत क्रोधित (अपने बच्चों की ईश्वरविरोधी तत्वों से रक्षा करने के लिये) एक ही समय पर होती हैं।

Shri Ati-saumyaa-ati raudraa - You are extremely gentle (loving and compassionate to your children) and extremely angry (with anti God elements to protect your children) at the same time.

373. **श्रीजगत्प्रतिष्ठा -** संसार के अस्तित्व के पीछे विद्यमान शक्ति।

Shri Jagat-pratishthaa - You are the one who is the power and energy behind the existence of the world.

374. **श्रीकृतिः -** सृजन में प्रत्येक वस्तु में जो घटित होती हैं, वह कृति आप हैं।

Shri Krutih - You are the action in every thing that happens in the creation.

375. **श्रीविष्णुमायेतिशब्दिता -** आप वह हैं जिसका वर्णन सब मानवजाति श्रीविष्णुमाया के रूप में करते हैं।

Shri Vishnu-maayaa-iti-shabditaa- You are the one whom all human beings describe as Shri Vishnu-maayaa.

376. **श्रीचेतनाइतिअभिधीयते -** आप वह हैं जिन्हें सारे मानव प्राणी चेतनारूप में जानते हैं।

Shri Chetanaa-iti-abhi-dhiyate- You are the one whom all human beings know as consciousness.

377. **श्रीसुबुद्धिरूपेण संस्थिता** - शुद्ध बुद्धि के रूप में आप सब मनुष्य प्राणियों में निवास करती हैं।

Shri Subuddhi rupena sansthitaa- You are the one who resides in all human beings in the form of pure intelligence.

378. **श्रीनिद्रारूपेण संस्थिता** - निद्रा के रूप में आप सब मनुष्य प्राणियों में रहती हैं।

Shri Nidraa rupena sansthitaa - You are the one who resides in all human beings in the form of sleep.

379. **श्रीक्षुधारूपेण संस्थिता** - भूख के रूप में आप मनुष्य प्राणियों में रहती हैं।

Shri Kshudhaa rupena sansthitaa- You are the one who resides in all human beings in the form of hunger.

380. **श्रीशक्तिरूपेण संस्थिता** - बल वा ऊर्जा के रूप में आप सब मनुष्य प्राणियों में रहती हैं।

Shri Shakti rupena sansthitaa- You are the one who resides in all human beings in the form of strength or energy.

381. **श्रीतृष्णारूपेण संस्थिता** - आप सब मनुष्य प्राणियों में तृष्णा के रूप में रहती हैं। पानी की आवश्यकता के शारीरिक प्रकटन के अतिरिक्त, तृष्णा शब्द का प्रयोग उत्कट साधना भी सूचित करता है।

Shri Trishnaa rupena sansthitaa - You are the one who resides in all human beings in the form of thirst. Besides physical manifestation of need for water, the word Trishna is also used to indicate one's intense seeking.

382. **श्रीक्षमारूपेण संस्थिता** - आप क्षमा के रूप में सब मनुष्य प्राणियों में रहती हैं।

Shri Kshamaa rupena sansthitaa- You are the one

who resides in all human beings in the form of forgiveness.

383. **श्रीजातिरूपेण संस्थिता** - अंतर्जात दिव्य तत्व अर्थात् कुण्डलिनी के रूप में आप सब मनुष्यप्राणियों में रहती हैं।

Shri Jaati rupena sansthitaa - You are the one who resides in all human beings in the form of in-born divine principle i.e. Kundalini.

384. **श्रीलज्जारूपेण संस्थिता** - आप लज्जा अर्थात् विनय, शालीनता के रूप में सब मनुष्यप्राणियों में रहती हैं।

Shri Lajja rupena sansthitaa- You are the one who resides in all beings in the form of modesty.

385. **श्रीशांतिरूपेण संस्थिता** - आप वह हैं जो सब मनुष्यप्राणियों में शान्ति के रूप में रहती हैं।

Shri Shaanti rupena sansthitaa - You are the one who resides in all human beings in the form of peace.

386. **श्रीश्रद्धारूपेण संस्थिता** - आप वह हैं जो मनुष्यप्राणियों में श्रद्धा के रूप में रहती हैं।

Shri Shraddha rupena sansthitaa - You are the one who resides in all human beings in the form of faith.

387. **श्रीलक्ष्मीरूपेण संस्थिता** - आप वह हैं जो मनुष्यप्राणियों में श्रीलक्ष्मी के रूप में रहती हैं। लक्ष्मी अर्थात् पवित्रता, मांगल्य, समृद्धि, उदारता, आतिथ्यशीलता, समाधान या संतोष और सत्य तथा असत्य में विवेक प्रदान करने वाली दिव्य शक्ति हैं।

Shri Lakshmi rupena sansthitaa - You are the one who resides in all human beings in the form of Shri Lakshmi, the Divine power which bestows; auspiciousness, wealth, generosity, hospitality, satisfaction and discrimination between the truth and untruth.

388. **श्रीस्मृतिरूपेण संस्थिता** - आप वह हैं जो मनुष्यप्राणियों में स्मृति अथवा स्मरण के रूप में रहती हैं।

Shri Smriti rupena-sansthitaa- You are the one who resides in all human beings in the form of memory.

389. **श्रीदयारूपेण संस्थिता** - आप वह हैं जो मनुष्यप्राणियों में दया अर्थात् अनुकंपा के रूप में रहती हैं।

Shri Dayaa rupena sansthitaa - You are the one who resides in all human beings in the form of compassion.

390. **श्रीमातृरूपेण संस्थिता** - आप वह हैं जो मनुष्यप्राणियों में माता अर्थात् मातृप्रेम (माँ का प्यार) के रूप में रहती हैं।

Shri Matru rupena sansthitaa - You are the one who resides in all human beings in the form of mother, meaning motherly love.

391. **श्रीक्षांतिरूपेण संस्थिता** - आप वह हैं जो मनुष्यप्राणियों में सहिष्णुता (सहनशीलता) के रूप में रहती हैं।

Shri Kshaanti rupena sansthitaa - You are the one who resides in all human beings in the form of patience.

392. **श्रीतुष्टिरूपेण संस्थिता** - आप वह हैं जो मनुष्यप्राणियों में तुष्टि अर्थात् संतोष या समाधान के रूप में रहती हैं।

Shri Tushti rupena sansthitaa - You are the one who resides in all human beings in the form of satisfaction.

393. **श्रीप्रीतिरूपेण संस्थिता** - आप वह हैं जो मनुष्यप्राणियों में प्रेम के रूप में रहती हैं।

Shri Preeti rupena sansthitaa - You are the one who resides in all human beings in the form of love.

394. **श्रीइन्द्रियाणाम्-अधिष्ठात्री** - आप वह हैं जो मनुष्यप्राणियों में शक्ति के रूप में रहती हैं। वह शक्ति कि जो कर्मेन्द्रिय तथा ज्ञानेन्द्रियों के कार्य का निर्वहन करती हैं।

Shri Indriyaa-naam–adhishtaatri - You are the one who resides in all human beings in the form of power that carries out the functioning of the organs of action and cognitive sense organs.

395. **श्रीचितिरूपेण जगद्-व्यापिनी** - आप वह हैं जिन्होंने चिति के रूप में पूरे संसार को व्याप्त किया है। चिति अर्थात् श्रीशिव का चित्त। ''श्रीशिव का चित्त सर्वत्र और प्रत्येक वस्तु पर नेर रखने वाले साक्षी के रूप में होता है। ब्रह्मचैतन्य, जो कि देवी की शक्ति है, चिति को जानती है और प्रत्येक कार्य चिति की ओर देखते हुये करती है क्योंकि उन्हें श्रीशिव को प्रसन्न करने की इच्छा होती है। श्रीशिव अर्थात् चिति।'' (दिल्ली, १९९१, श्रीमाताजी के शिवरात्रि पूजा भाषण से चिति अंश का सारांश)

Shri Chiti roopena jagat vyaapini - You are the one who has pervaded the whole world as Chiti, the power of Shri Shiva's attention "Shri Shiva's chitta the attention is everywhere as witness and watching every thing. Brahma chaitanya which is Devi's power knows the Chiti and works out every thing looking at the Chiti because She wants to please Shri Shiva, i.e. Chiti. (summary of the part on Chiti from Shri Mataji's Shivaratri Puja talk in Hindi Delhi. 1991)."

396. **श्रीरामार्चिता** - रावण से युद्ध करने के पहले श्रीराम द्वारा आप की पूजा की गयी थी।

Shri Rama-architaa - You were worshipped by Shri Rama before his war with Ravana.

397. **श्रीराम-वर-दायिनी** - आपने श्रीराम को वर दिया।

Shri Rama-varadaayini - You blessed Shri Rama.

398. **श्रीसोम-सूर्याग्निलोचना -** चंद्र, सूर्य और अग्नि आप के तीन आँखें हैं।

Shri Soma-Surya-Agni-lochanaa - Your three eyes are, the Sun, the Moon and the fire.

399. **श्रीदेवमाता -** आप देवों की माँ हैं।

Shri Devamata - You are the mother of Gods.

400. **श्रीश्रीकृष्ण-संस्तुता -** आप की श्रीकृष्ण द्वारा स्तुति की गयी।

Shri Shrikrishna sanstutaa - You were praised by Shri krishna.

401. **श्रीअचिंत्य-रूप-चरिता -** आप के रूप तथा कार्य पद्धतियों को बुद्धि से नहीं समझ सकते।

Shri Achintya roopa charitaa - Your form and ways are uncontemplable.

402. **श्रीअन्नपूर्णा -** आप ऐसा अन्न देती हैं जो आरोग्य दायी है। आप का नाम लेकर पकाया गया अन्न कभी भी कम नहीं होता।

श्रीअन्नपूर्णेश्वरी के स्तोत्र में आदि शंकराचार्य ने ईश्वरविषयक ज्ञान और वैराग्य की भिक्षा की याचना की है। अंतिम श्लोक में आचार्य कहते हैं, ''श्रीपार्वती मेरी माता हो, श्रीशिव पिता हो, श्रीशिव के भक्त मेरे बांधव हो और त्रैलोक्य मेरा स्वदेश हो।'' श्रीमाताजी की एक पूजा में जब ये श्लोक गाये गये, तो अंतिम श्लोक पर उन्होंने अभिप्राय दिया, यही सहजयोग है।

Shri Annapoornaa - You give food, which bestows the well being. Also, the food cooked taking your name is never short whatever may be the number of persons to eat.
Adi Shankaracharya in his hymns to Shri Annapurneshwari asks for alms of achieving the Divine

knowledge and detachment (Vairagya). In the last stanza, he says, " May Shri Parvati be my mother, Shri Shiva my father, devotees of Shri Shiva my brothers and sisters. May the three worlds be my country," When the Hymns were sung in a Puja to Shri Mataji She remarked on the last stanza, "This is Sahaja Yoga".

403. **श्रीनित्यानन्दकरी -** आप नित्य आनंद प्रदान करती हैं।

Shri Nitya-anand-kari - You bestow joy for ever.

404. **श्रीवराभयकरी -** आप एक हाथ से वर देती हैं और दूसरे हाथ से सुरक्षा अर्थात् अभय।

Shri Vara-abhay-kari - You bestow boons with one hand and protection with the other.

405. **श्रीसौंदर्य-रत्नाकरी -** आप सुंदरता का महासागर हैं।

Shri Saundarya-ratnaa-kari - You are the ocean of beauty.

406. **श्रीरिपु-क्षयकरी -** आप शत्रुओं का विनाश करती हैं।

Shri Ripu-kshaya-kari - You are the destroyer of enemies.

407. **श्रीकृपावलम्बनकरी -** आप अपने बच्चों को उदारता से वरदान और कृपा प्रदान करती हैं।

Shri Krupa-avalamban-kari -You generously confer blessings and grace on your children.

408. **श्रीधर्मैक-निष्ठाकरी -** धार्मिक जीवन पद्धति के लिये आप निष्ठा प्रदान करती हैं।

Shri Dharmaika-nishtthaa-kari- You confer adherence to Dharmic way of life.

409. **श्रीत्रैलोक्य-रक्षाकरी -** आप तीनों लोकों की रक्षा करती हैं।

Shri Trailoya-rakshaa-kari - You are the protector of the three worlds.

410. **श्रीतपःफलकरी -** आप तपस्या का फल प्रदान करती हैं।

Shri Tapah-phala-kari- You confer the rewards of penance.

411. **श्रीकैलासाचलकन्दरालयकरी -** कैलास पर्वत की गूफाओं में आप रहती हैं।

Shri Kailaasaa-chal-kandaraalaya-kari- You live in caves of Mount Kailasa.

412. **श्रीनिगमार्थ-गोचर-करी -** आप वेदों के ज्ञान का अनुभव देती हैं। आप की कृपा से मध्य-मज्जा-संस्था पर सत्य, ज्ञान की अनुभूति होती है। वह प्रणव के स्पंदनों के रूप में होती है। प्रणव अर्थात् सर्वशक्तिमान परमेश्वर के प्रेम की सर्वज्ञ तथा सर्वसंघटक शक्ति।

Shri Nigama-artha-gochara-kari- You give experience of the knowledge of the Vedas. By your grace the true knowledge is felt on one's central nervous system in the form of vibrations of Pranava, the all knowing and all organising power of God Almighty's love.

413. **श्रीविभूति-वाहन-करी -** आप वह हैं जो विभूतियों का अर्थात् सन्तों का तथा ऋषियों का पालन करती हैं।

Shri Vibhuti-vaahan-kari - You are the one who takes care of Vibhutis i.e. saints and sages.

414. **श्रीब्रह्माण्ड-भाण्डोदरी -** आप वह हैं जिन्होंने अपने पेट (अर्थात् भवसागर) में संपूर्ण सृष्टि को धारण कर के रखा है।

Shri Brahmaand-bhando-dari - You are the one who has

held entire creation in her stomach (The void, Bhavasagara)

415. **श्रीउर्वी -** आप श्रेष्ठ आदर्श हैं।

Shri Urvee - You are ideal.

416. **श्रीसर्वजनेश्वरी -** आप सब लोगों की देवी हैं।

Shri Sarva-janeshwari - You are the Goddess of all the people.

417. **श्रीनित्यान्नदानेश्वरी -** आप वह देवी हैं जो उदारता से नित्य अन्नदान करती हैं।

Shri Nitya-anna-daneshwari - You are the Goddess who generously distributes food.

418. **श्रीभक्ताभीष्टकरी -** आप भक्तों के कल्याण का ध्यान रखती हैं।

Shri Bhakta-abhishta-kari - You take care of the welfare of devotees.

419. **श्रीसर्व-अशुभ-नाशिनी -** जो कुछ भी अशुभ है उस सब का आप नाश करती हैं।

Shri Sarva-ashubha-naashini - You destroy all that is inauspicious.

420. **श्रीक्षत्र-त्राण-करी-** आप क्षत्रियों का (अर्थात् जो नकारात्मक शक्तियों से लड़ते हैं उनका) रक्षण करती हैं।

Shri Kshatra-traan-kari - You protect warrior. (who fight negative forces.)

421. **श्रीअश्रित-कल्पवल्ली -** आप शरणागतों के लिये कल्पलता अर्थात् ऐसी लता जो इच्छायें पूर्ण करती हैं। यह दिव्य अर्थात् स्वर्ग में होती है।

Shri Ashrit-kalpa-valli - You are the one who is like

the heavenly wish fulfilling tree to those who surrrender.

422. **श्रीअहंभाव-उच्छेदिनी -** आप अहंकार को हटा देती हैं। प्रचण्ड दैत्य-दर्पघ्ने बलवान दैत्यों के दर्प का नाश करने वाली हे देवी...।

Shri Ahambhaava-uchchhedini - You remove the ego."Prachanda daitya darpaghne, O the one who destroys the pride of mighty demons."

423. **श्रीअमृत-दृष्टिः -** आप की दृष्टि अमृत है।

Shri Amrut drushti - Your glance is like nectar.

424. **श्रीविष्णु-अर्धांगिनी -** आप श्रीविष्णु की अर्धांगिनी हैं।

Shri Vishnu ardhaangini - You are Shri Vishnu's half being.

425. **श्रीमधु-सूदन-कामिनि -** मधु दैत्य का वध करने वाले श्रीविष्णु की आप पत्नी हैं।

Shri Madhu-soodan-kaamini - You are the spouse of Shri Vishnu, the killer of demon Madhu.

426. **श्रीमाधवी -** माधव अर्थात् श्रीविष्णु की आप शक्ति हैं। श्रीविष्णु ज्ञान के अधिपति हैं और मौन और ध्यान के द्वारा जाने जा सकते हैं।

Shri Maadhavi - You are the power of Maadhava. i.e. Shri Vishnu, the lord of knowledge and can be known through mauna and dhyaana i.e. silence and meditation.

427. **श्रीचन्द्र-सहोदरी -** आप चंद्र की भगिनी है क्योंकि आप दोनों ही समुद्र से निकले हैं।

Shri Chandra sahodari-You are the sister of moon as both came out of the ocean.

428. **श्रीमुनि-गण-मण्डिता -** मुनियों के समूहों से आप शोभित हैं।

Shri Muni-gana-manditaa - You are the one who is adorned by hosts of sages.

429. **श्रीमंजुलभाषिणी -** आप का भाषण या बोलना अत्यंत मंजुल होता है।

Shri Manjul bhaashini - You are the one whose talk is very melodious.

430. **श्रीपंकजवासिनी -** आप कमल में निवास करती हैं।

Shri Pankaja vaasini- You are the one who resides in the lotus.

431. **श्रीदेव-सुपुजिता -** देवों द्वारा आपकी पूजा की जाती है।

Shri Deva-supoojitaa - You are worshipped by Gods.

432. **श्रीसद्गुण-वर्षिणी -** आप वह हैं जो सद्गुणों की वर्षा करती हैं।

Shri Sadguna-varshini - You are the one who showers virtues.

433. **श्रीशन्तियुता -** आप स्वयं अपने आप में शान्तिपूर्ण हैं और दूसरों को भी शान्तिपूर्ण बनाती हैं।

Shri Shaanti-yuta - You are peaceful within yourself and also make others peaceful.

434. **श्रीदेव-गणाश्रित-पादयुता -** सब देवतायें, देव और गण आपके चरण कमलों का आश्रय लेते हैं।

Shri Deva-gana-ashrit-paadayutaa - All deities, gods, and ganas take shelter at your lotus feet.

435. **श्रीज्येष्ठा -** आप सबसे बड़ी हैं।

Shri Jyeshthaa - You are eldest.

436. **श्रीश्रेष्ठा -** आप सर्वोच्च तथा सर्वश्रेष्ठ हैं।

Shri Sreshthaa - You are the most superior.

437. **श्रीसर्वादि -** सृष्टि के सृजन का कारण होने से सबसे प्रथम आप थी।

Shri Sarvaadi - You preceded every thing being the cause of the creation.

438. **श्रीअमृतोद्भवा -** आप वह हैं जो अमृत से बाहर आयी हैं। सौन्दर्य लहरी स्तोत्र में आदि शंकराचार्य कहते हैं - अमृत के सागर से घिरे हुये मणिद्वीप में आप दिव्य चिन्तामणियों से जड़ित गृह में रहती हैं।

Shri Amritod-bhava - You are the one who has come out of the ambrosia. Shri Adi Shankaracharya says in " Saundarya Lahari " You live in the house of celestial Chintamani gems in Manidweepa island surrounded by the ocean of ambrosia"

439. **श्रीसुविशालाक्षी -** आप की आँखें सुन्दर और विशाल हैं।

Shri Su-vishal-akshi - You have beautiful wide eyes.

440. **श्रीसागराम्बुजा -** आप सागर के कमल में निवास करती हैं।

Shri Saagar-ambujaa - You resides in the lotus of the ocean.

441. **श्रीवरारोहा -** सर्वोच्च श्रेष्ठ ध्येय। सब साधक आप के चरण कमलों को प्राप्त करने की अभिलाषा करते हैं।

Shri Varaa-rohaa - The supreme goal. All seekers aspire to attain your lotus feet.

442. **श्रीवैकुण्ठ-वासिनी -** आप वैकुण्ठ में निवास करती हैं।

Shri Vaikuntha-vaasini - You reside in Vaikuntha.

443. **श्रीदेव-देवता -** आप देवों की देवता हैं।

Shri Deva-devataa - You are the Goddess of Gods.

444. **श्रीभुवन-मातृका -** जगत् की माता।

Shri Bhuvan-maatrukaa - The mother of the world.

445. **श्रीनित्य-प्रकाशिनी -** आप नित्य प्रकाश देती हैं।

Shri Nitya-prakaashini - You eternally give light.

446. **श्रीस्व-प्रकाशा -** आप का रूप आत्मा का प्रकाश हैं।

Shri Swa-prakaashaa - Your form is the light of Spirit.

447. **श्रीमहा-कन्यका -** आप महान् कन्यका अर्थात् कुमारी हैं। ''वह श्रीमहागौरी हैं। पृथ्वी तत्व से उन्होंने श्रीगणेश का सृजन किया। बाद में उन्होंने कितने सारे अवतरण लिये। श्रीमेरी ने स्पष्ट रूप से कुमारी रूप की सारी शक्तियाँ दिखायी हैं। जो माता को इतनी उन्नत करती हैं कि केवल इच्छा से ही शिशु को गर्भ में धारण कर सकती हैं।'' (दी क्रिएशन)

Shri Mahaa-kanyakaa - You are the great virgin. "She is Shri Mahaa-gauri.She created Shri Ganesha from the earth element. Later she took a number of incarnations. Mary has clearly shown the powers of virginity that raise a mother to such an exalted position that she can conceive a child by desire alone." (The Creation)

448. **श्रीब्रह्मविद्या-प्रदायिनी -** ब्रह्म अर्थात् सर्वशक्तिमान परमात्मा के ज्ञान को आप प्रदान करती हैं। साधक के मध्य मज्जासंस्था पर ज्ञान के अनुभव द्वारा आप साधक को ज्ञानी बनाती हैं। वेदों में कहा गया है, जो ब्रह्म को जानता है, वह ब्रह्म ही हो जाता है। ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति।

Shri Brahma-vidyaa pradaayini - The bestower of the knowledge of Brahma, the Almighty God. You make the seeker knowldgeble through the experience

of the knowledge on his central nervous system.It is said in the Vedas, "One who knows Brahma becomes the Brahma. Brahmavid Brahmaiva bhavati"

449. **श्रीअरूपा -** आप वह हैं जिनका रूप ही अरूप है।

Shri Aroopaa - You are the one with the formless form.

450. **श्रीबहु-रूपा -** आप वह हैं जिनके अनेक रूप हैं।

Shri Bahu-rupaa- You are the one with a myriad of forms.

451. **श्रीहिरण्य-वर्णा -** आप का वर्ण सोने जैसा है।

Shri Hiranya-varnaa - You are the one with golden complexion.

452. **श्रीदुर्गति-नाशिनी -** आप लोगों की पीड़ाओं का विनाश करती हैं।

Shri Durgati naashini - You destroy sufferings of the people.

453. **श्रीतापनिवारिणी-पादयुता -** आप वह हैं जिनके चरण कमल सांसारिक जीवन के ताूव तथा पीड़ाओं को दूर करते हैं।

Shri Taap nivaarini paadayutaa - You are the one whose lotus feet remove tensions and pains of worldly life.

454. **श्रीरागविवर्धिनी -** आप प्रेम की वृद्धि करती हैं।

Shri Raaga vivardhini - You enhance love.

455. **श्रीसद्गतिः -** आप के चरण कमल सब साक्षात्कारी आत्माओं का गन्तव्य स्थान है।

Shri Sadgatih - Your lotus feet are the destination all realised souls.

456. **श्रीधनाध्यक्षा** - आप धन की ईश्वरी हैं। धन के देव कुबेर भी आपकी पूजा करते हैं।

Shri Dhana-adhyakshaa- You are the ruler of wealth. Kubera, the God of wealth also worships you.

457. **श्रीइन्दिरा** - आप इन्द्र की शक्ति हैं।

Shri Indiraa - You are the power of Lord Indra.

458. **श्रीपद्माक्षी** - आप वह है जिनकी आँखें कमल के समान सुन्दर हैं।

Shri Padma-akshi - You are the one whose eyes are beautiful like lotus.

459. **श्रीपद्मवासिनी** - आप वह हैं जो कमल में निवास करती हैं।

Shri Padma-vaasini - You are the one who resides in lotus.

460. **श्रीपद्म-वक्त्रा**- आप का मुख सुंदर कमल के समान हैं।

Shri Padma-vaktraa - You are the one with beautiful lotus-like face.

461. **श्रीपद्म-हस्ता**- आप एक हाथ में कमल धारण करती हैं।

Shri Padma-hastaa - You hold a lotus in one hand.

462. **श्रीपूर्णेन्दु-बिम्ब-वदना** - आप का मुख पूर्ण चन्द्रमा के समान है।

Shri Purnendu-bimba-vadanaa - Your face is like full moon.

463. **श्रीसर्वभूत-हित-प्रदा**- सर्व प्राणियों का आप हित करती हैं। 'हित का अर्थ है, जो आप की आत्मा के लिये अच्छा है।' (आदिशक्ति पूजा, ६.६.९३)

Shri Sarva-bhoota- hita-pradaa - You do

benevolence to all beings.

"Benvolence means whatever is good for your spirit." (Adi Shakti Puja 6.6.93)

464. **श्रीधर्म-निलया** - आप धर्म में स्थित हैं। अर्थात् जो धर्मनिष्ठ हैं उनके साथ आप रहती हैं।

Shri Dharma-nilayaa - You abide in the Dharma meaning, you reside with adherents to Dharma.

465. **श्रीबुद्धि अनघा** - आप शुद्ध बुद्धि हैं।

Shri Buddhi-anaghaa- You are pure intellect.

466. **श्रीइन्दु-शीतला-** आप वह हैं, जो चन्द्रमा के समान शान्ति तथा शीतलता देने वाली हैं।

Shri Indu sheetalaa- You are the one who is soothing and cooling like moon.

467. **श्रीधन-धान्य-करी-** आप धन और धान्य देती हैं।

Shri Dhana-dhaanya-kari - You bestow wealth and food.

468. **श्रीजन-रंजनी** - आप लोगों को परमानन्द और हर्ष देती हैं।

Shri Jana-ranjani - You are the giver of bliss and joy to people.

469. **श्रीलोक हितैषिणी** - आप जगत् का हित करती है।

Shri Loka-hitaishini - You are benevolent to world.

470. **श्रीआद्य-लक्ष्मी:-** आप आदि लक्ष्मी हैं।

Shri Aadyaa Lakshmi - You are the Primordial Lakshmi.

471. **श्रीविद्या-लक्ष्मीः -** आप ज्ञान की लक्ष्मी हैं।

Shri Vidyaa Lakshmi - You are the Lakshmi of knowledge.

472. **श्रीगृह-लक्ष्मीः -** आप पत्नी के द्वारा प्रकट की गयी पारिवारीक सुसंबंध और संपत्ति की लक्ष्मी हैं।

Shri Gruha Lakshmi - You are the Lakshmi of household expressed through the wife.

473. **श्रीराज-लक्ष्मीः -** आप धनवैभव की लक्ष्मी हैं।

''श्रीराजलक्ष्मी के आशीर्वाद गरिमा या प्रतिष्ठा प्रदान करते हैं, जो गरिमा दूसरों के लिये प्रेम से परिपूर्ण है। श्रीराजलक्ष्मी धर्म पर अधिष्ठित हैं और धार्मिक व्यक्ति की रक्षा के लिये या उसे बचाने के लिये पूरे प्रयास करती है। ऐसा व्यक्ति जो प्रकृति या स्वभाव से ही राजा है, उस पर श्रीराजलक्ष्मी के आशीर्वाद रहते हैं।'' (राजलक्ष्मी पूजा, हिंदी, दिल्ली, दिसंबर ९३)

Shri Raja Lakshmi - You are the Lakshmi of wealth.

" Shri Rajalaxmi's blessings give dignity which is full of love for others. She stands on Dharma and will go out to save a Dharmic person.A person who is innately king has her blessings.(Rajalaxmi Puja-Hindi –Delhi Dec 93.)

474. **श्रीगज-लक्ष्मीः -** आप गजों पर आरूढ होने वाली लक्ष्मी हैं, जिनके द्वारा राज्य की समृद्धि तथा शासक राजा की परोपकारिता, कल्याणवृत्ति आविष्कृत होती है।

Shri Gaja Lakshmi - You are the Lakshmi riding on elephants manifesting kingdom's prosperity and the ruler's benevolence.

475. **श्रीयोग-लक्ष्मीः -** आप योग अर्थात् आत्मा और परमात्मा की एकता देने वाली लक्ष्मी हैं।

Shri Yoga Lakshmi- You are the Lakshmi who gives Yoga, i.e. unison of Spirit and Supreme Spirit.

476. **श्रीविजय-लक्ष्मी: -** आप विजय प्रदान करने वाली लक्ष्मी हैं।

Shri Vijaya Lakshmi- You are the Lakshmi who bestows victory.

477. **श्रीधैर्य-लक्ष्मी: -** आप धैर्य प्रदान करने वाली लक्ष्मी हैं।

Shri Dhairya Lakshmi - You are the Lakshmi who bestows courage.

478. **श्रीसन्तान-लक्ष्मी: -** आप सन्तानों के रूप में आशीर्वाद देने वाली लक्ष्मी हैं।

Shri Santaan Lakshmi - You are the Lakshmi who blesses with children.

479. **श्रीसत्य-लक्ष्मी: -** आप सत्य (आत्मा का) का साक्षात्कार प्रदान करने वाली लक्ष्मी हैं।

Shri Satya Lakshmi - You are the Lakshmi who bestows realisation of truth (spirit).

480. **श्रीअमृत-लक्ष्मी: -** आप अमृत देने वाली लक्ष्मी हैं।

Shri Amruta Lakshmi- You are the Lakshmi who bestows ambrosia.

481. **श्रीमोक्ष-लक्ष्मी: -** आप मोक्षदायिनी लक्ष्मी हैं।

Shri Moksha Lakshmi - You are the Lakshmi who confers salvation.

482. **श्रीभोग्य-लक्ष्मी: -** आप वह लक्ष्मी हैं जो अनासक्त रह कर समृद्धि का उपभोग लेने के लिये समर्थ बनाती हैं। सर्वशक्तिमान्

परमेश्वर अर्थात् परमात्मा, ही भोक्ता अर्थात् उपभोग लेने वाले हैं।

दीप और समृद्धि का प्रतीक होने वाली जल में खड़ी लक्ष्मी इन दोनों का क्या समन्वय है? जानवरों का उत्कर्ष या समृद्धि नहीं होती पर केवल मनुष्य प्राणी ही समृद्ध हो सकता है। मनुष्य के बोध में ही यह पहले से ही निहित, रचित है कि मानव समृद्ध हो सकते हैं। जानवरों की अपनी मर्यादायें होती हैं। यदि उन्हें (मनुष्यों को) अपनी मर्यादाओं का भान नहीं हैं तो यह बात उनके लिये और सारे संसार के लिये विध्वंस करने वाली है। अतः दीप इसलिये हैं कि जिन्हें लक्ष्मी के आशीर्वाद हैं उनके पास अपनी अनुभूति तथा मर्यादाओं के दीप अवश्य होने चाहिये। (दीवाली पूजा, २०००)

Shri Bhogya Lakshmi - You are the Lakshmi who enables one to enjoy prosperity in a detached way. God almighty, the Spirit is the Bhokta the enjoyer.

"What is the combination of lights and Lakshmi who stands in water as a symbol of prosperity? Animals cannot prosper only the human being can. It is built in human awareness that they can prosper. Animals have their maryadas. If they (human beings) have no sense of their own maryadas then it is ruinous for them and for the whole world. So, the lights are there that those who have Lakshmi's blessings they must have lights of their own awareness and maryadas"(Diwali Puja 2000)

483. **श्रीसंकल्प-सिद्धा-** आप वह हैं जो भक्तों के संकल्पों को वास्तव में लाती हैं। (संकल्पों की सिद्धि करती हैं।)

Shri Sankalpa siddhaa - You are the one who brings devoties' volitions to reality.

484. **श्रीस्थिति-वृद्धि-ध्रुवा-गतिः -** आप वह हैं जो जन्म, वृद्धि और धारणा हैं।

Shri Sthiti-vruddhi-dhruvaa-gatih - You are the one who is birth, growth, and sustenance.

485. **श्रीमणि-द्वीप-निवासिनी-** आप वह हैं जो नाभिचक्र में निवास करती हैं। मणिद्विप का अर्थ ग्रीस देश है, जो जगत् की नाभि है।

Shri Manidweepa nivaasini - You are the one who resides in the Nabhi Chakra, Manidweep meaning the country of Greece the Nabhi of the world..

486. **श्रीअथिना-** आप देवी अथिना अर्थात् ग्रीस में अथेन्स की देवता हैं।

Shri Athena - You are the Goddess Athena, the deity of Athens in Greece.

487. **श्रीमहायोगेश्वरावृता-** आप ने महायोगेश्वर अर्थात् श्रीसदाशिव को आवृत किया है। श्रीसदाशिव की सर्वव्यापी उपस्थिति के मूर्त रूप के साथ सृष्टि का सृजन आप का आविष्कार है।

Shri Mahaa-yogeshwara-avrutaa - You have covered Mahayogeshwara i.e. Shri Sadashiva. The Creation is your manifestation with embodiment of Shri Sadashiva's all pervading presence.

488. **श्रीयोगेश्वर-प्रिया-** आप योगेश्वर की प्रिय हैं। श्रीकृष्ण को योगेश्वर के नाम से जाना जाता है और श्रीमहालक्ष्मी ने उनकी प्रिया के रूप में अवतार लिया।

Shri Yogeshwara-priyaa - You are Yogeshwara's beloved & Shri Krishna is known as Yogeshwara Shri Mahalakshmi incarnated as his beloved.

489. **श्रीभक्तानुग्रहकारिणी-** आप अपने भक्तों को कृपा, आशीर्वाद, प्रेम तथा रक्षा प्रदान करती हैं।

Shri Bhakta-anugraha kaarini - You bestow grace, blessings and love and protection on your devotees.

490. **श्रीसिद्धलक्ष्मी: -** आप यश देने वाली (यशोदा) हैं।

Shri Siddha Lakshmi - You are the bestower of success.

491. **श्रीसर्व-मंत्र-फल-प्रदा -** आप सर्व मन्त्रों का पठन का फल देती हैं।

Shri Sarva Mantra phala pradaa - You are the one who confers rewards of recitation of all Mantras.

492. **श्रीदारिद्रय-विध्वंसिनी-** आप दरिद्रता का विनाश करती हैं।

Shri Daaridrya vidhwansini - You are the destroyer of poverty.

493. **श्रीसर्व-मोहिनी-** आप सबको मोहित करती हैं।

Shri Sarva Mohini - You entice all.

494. **श्रीध्यान-गोचरा-** आप अपनी विशेषताओं का पूर्ण आविष्कार ध्यान में करती हैं।

Shri Dhyaana gocharaa - You fully manifest your attributes in the meditation.

495. **श्रीखग-वाहिनी-** श्रीविष्णु की शक्ति के रूप में आप गरूड पर (आरूढ होकर)उड़ान भरती हैं।

Shri Khaga Vaahini - You are the one who flies on the eagle as the Shakti of Shri Vishnu.

496. **श्रीसत्य-ज्ञानात्मिका -** आप सत्य के आकलन तथा साक्षात्कार में हैं।

सत्य शब्द का उद्‌गम सत् अर्थात् अपरिवर्तनीय सत्य इससे हुआ है। अपरिवर्तनीय सत्य तो आत्मा है। सत्य को जान लेने का अर्थ सत्य होना है। यह आत्मसाक्षात्कार के पश्चात् आता है।

Shri Satya jynaanaat-mikaa - You are in the realisation of truth (satya).

The word "satya" has originated from "sat" meaning unchangeable truth, which is spirit. Knowing the truth is

becoming the truth, which comes after self-realisation.

497. **श्रीविष्णु-वक्षः-स्थल-स्थिता** - आप श्रीविष्णु के वक्षःस्थल (छाती) पर विराजमान होती हैं।

Shri Vishnu-vaksha-sthala-sthitaa - You reside on the chest of Shri Vishnu.

498. **श्रीतुष्टिः** - आप संतोष, समाधान, तृप्ति हैं।

Shri Tushti - You are contentment.

499. **श्रीसर्व-अभिलाषा-पूर्णेच्छा** - आप सब अपेक्षा तथा आकांक्षाओं को पूर्ण करती हैं।

Shri Sarva-abhilashaa-purnechhaa - You fulfil all expectations and aspirations.

500. **श्रीसरस्वती** - आप ज्ञान (विद्या) की देवता हैं।

Shri Saraswati - You are the Goddess of knowledge.

501. **श्रीशास्त्रमयी** - आप शास्त्रों में (विद्यमान) हैं।

ब्रह्माण्ड पुराण के अनुसार देवी ने अपने श्वास से वेदों का निर्माण किया और अपनी 'अहंता' या अहंभाव से महामन्त्रों का सृजन किया।(संदर्भ - पृ.२७९, ललिता सहस्रनाम, अड्यार ग्रंथालय) अपने वर्तमान अवतरण में उन्होंने पराशास्त्र का निर्माण किया है।

Shri Shaastramayi - You are in sciences.

According to Brahmand Puran, the Goddess created the Vedas from her breath and the great mantras from Her "I-ness" or egoism (abhimaan) etc. (Ref-page 279 Lalita Sahasranam (Adyar Library). In Her present incarnation She has created the metascience.

502. **श्रीचतुराननस्य-गृहिणी** - आप ब्रह्मदेव की पत्नी हैं।

Shri Chatur-aananasya-gruhini - You are Shri Brahmadeva's wife.

503. **श्रीवाग्देवी -** आप वाणी की देवता है।

Shri Vaagdevi - You are the Goddess of speech.

504. **श्रीगायत्री -** आप गायत्री मंत्र हैं।

Shri Gaayatri - You are the Gayatri mantra.

505. **श्रीशारदा -** शारदा अर्थात् संगीत की देवता आपका एक स्वरूप हैं।

Shri Shaaradaa - You are the one whose form is Shaaradaa, the deity of music.

506. **श्रीहंसवाहिनी -** आप सरस्वती हैं जिनका वाहन हंस हैं।

Shri Hansa-vaahini - You are Saraswati whose vehicle is the swan.

507. **श्रीशुद्ध-ज्ञान-दायिनी -** आप शुद्ध ज्ञान अर्थात् आत्मा का ज्ञान देती हैं।

Shri Shuddha jnyaan daayini - You bestow the pure knowledge the knowledge of Atma.

508. **श्रीवीणा-पुस्तक-धारिणी -** आप वीणा (एक तंतुवाद्य) और पुस्तक धारण करती हैं।

Shri Veenaa-pustak dhaarini - You hold the Veena, a string instrument and book.

509. **श्रीवरदहस्ता -** आप एक हाथ से वर देती हैं।

Shri Varada-hastaa - You grant boons with one hand.

510. **श्रीकण्ठस्था -** आप वह हैं जो कण्ठ में निवास करती हैं।

Shri Kanthhasthaa- You are the one who resides in the throat.

511. **श्रीश्वेत-पद्मासना -** आप सरस्वती हैं जो श्वेत कमल में विराजमान होती हैं।

Shri Shweta-padma-aasanaa - You are Saraswati who sits in the white lotus.

512. **श्रीश्वेत-पुष्पशोभिता -** आप श्वेत पुष्पों से शोभित होने से आप कीर्तिमती तथा विख्यात है।

Shri Shweta pushpa shobhitaa - You are glorious having been adorned with white flowers.

513. **श्रीश्वेत-चन्दन-चर्चिता -** आप वह है जिन्हें श्वेत चन्दन के गंध का लेप दिया जाता है और उससे आप का पूजन किया जाता है।

Shri Shweta chandan charchitaa - You are the one who is worshipped with the offering of white sandalwood paste.

514. **श्रीशुक्ल-वस्त्रा -** आप वह हैं जो की सरस्वति रूप में शुभ्र वस्त्र धारण करती हैं।

Shri Shukla vastraa - You are the one who is wearing white clothes as Shri Saraswati.

515. **श्रीसिद्ध-गंधर्व-ऋषिभि:स्तुता -** सिद्ध (आध्यात्मिक दृष्टि से परिपूर्ण आत्मायें), ऋषि और गंधर्वों द्वारा आप की स्तुति की जाती है।

Shri Siddha gandharva-rushibhih-stuta - You are praised by the Siddhas (spiritually perfect souls), sages, and Gandharvas.

516. **श्रीसर्व-देव-सेविता -** सब देवों द्वारा आप की सेवा की जाती है।

Shri Sarva deva sevitaa - You are served by all Gods.

517. **श्रीशारदेन्दु-सम-प्रभा -** शरद् ऋतु के चंद्रमा के समान आप का मुख तेजस्वी है।

Shri Shaarada-indu-samaprabhaa - You are the one whose face is glorious like the autumnal moon.

518. **श्रीमनोहरा -** आप मन को मोहित करती हैं जिससे वे आप से जुड़ जाते हैं।

Shri Manoharaa - You entice the mind wherby they are attached to you.

519. **श्रीजगद्-दीपा -** आप जगत् का दीप है, जो ज्ञान का प्रकाश देता है।

Shri Jagad-deepaa - You are the lamp of the world which gives the light of knowledge.

520. **श्रीसन्मतिदा -** आप सन्मति अर्थात् सुज्ञता देती हैं।

Shri Sanmatidaa - You bestow wisdom.

521. **श्रीवरदा -** आप वर देती हैं।

Shri Varadaa - You bestow boons.

522. **श्रीमंत्र-प्रिया -** आप मंत्र पठन से प्रसन्न होती हैं।

Shri Mantra-priyaa - You are pleased with recitation of mantras.

523. **श्रीकुमति-विध्वंसिनि -** आप दुष्ट बुद्धि का विनाश करती हैं।

Shri Kumati-Vidhwansini - You destroy the wicked mind.

524. **श्रीअज्ञान-तिमिरापहा** - आप अज्ञान के अंध:कार को दूर करती हैं।

Shri Ajnyaan timira-apahaa - You dispel the darkness of ignorance.

525. **श्रीकवित्व-प्रदायिनी** - कविता रचने के लिये आप प्रेरणा प्रदान करती हैं।

Shri Kavitva pradaayini - You are the one who bestows inspiration to compose poetry.

526. **श्रीवाङ्मय-प्रतिभा-दायिनी** - आप वह हैं जो साहित्य लेखन के लिये प्रेरणा तथा प्रतिभा, स्फूर्ति प्रदान करती हैं।

Shri Vaang-maya pratibhaa daayini - You are the one who bestows inspiration and flare for literary writing.

527. **श्रीवक्तृत्व-प्रदायिनी** - आप वक्तृत्व प्रदान करती हैं।

Shri Vaktrutwa-pradaayini - You are the one who bestowes oratory.

528. **श्रीसंगीत-प्रावीण्य-दायिनी** - आप वह हैं जो संगीत में प्रवीणता - निपुणता प्रदान करती हैं।

Shri Sangeeta praavinya daayini - You are the one who bestows proficiency in music.

529. **श्रीशुभा** - आप शुभता का रूप हैं।

Shri Shubhaa - You are of the form of auspiciousness.

530. **श्रीशुभगा** - आप जहाँ कहाँ जाती हैं, वहाँ प्रत्येक वस्तु (सब कुछ) शुभ/पवित्र बनाती हैं।

Shri Shubhagaa - You make every thing, wherever you go, auspicious.

531. **श्रीपरम-ज्ञान-प्रदायिनी -** आप परम का ज्ञान प्रदान करती हैं।

Shri Param jnyaana pradaayini - You bestow the knowledge of Supreme.

532. **श्रीसप्त-स्वरात्मिका -** आप संगीत के सात सुरों में विद्यमान हैं।

Shri Sapta-swaraat-mikaa - You are in the seven notes of music.

533. **श्रीसुरभिः -** सुरभि अर्थात् पवित्र स्वर्गीय धेनु (कामधेनु) आप का प्रथम अवतरण था। (संदर्भ - दी क्रिएशन)

Shri Surabhi - Surabhi, the holy celestial cow, was your first incarnation.(Ref- The Creation)

534. **श्रीशीतला-देवी -** अपनी दिव्य शीत लहरों से आप उष्णता के कारण निर्माण हुई व्याधियों को शान्त कर देती हैं।

Shri Sheetalaa Devi - You cure ailments caused by heat with your Divine Cool breeze.

535. **श्रीधन्वंतरि-स्वरूपा -** देवों के वैद्य धन्वंतरि आपका रूप हैं।

Shri Dhanvantari swaroopaa - You are of the form of Shri Dhanvantari, the doctor of Gods.

536. **श्रीअश्विनी-कुमार-स्वरूपा -** आपका अश्विनी कुमार का रूप हैं। (ये जुड़वा भाई हैं) वे देवों के चिकित्सक, वैद्य हैं। पर उन्हें अमृत का अंशभाग ग्रहण करने की अनुज्ञा नहीं है।

Shri Ashwini kumaar swaroopaa - You are of the form of Ashwini Kumaras. (They are twin brothers). They are doctors of Gods but are not authorised to partake of ambrosia.

537. **श्रीअनसूया -** आप ने सती अनसूया के रूप में अवतार लिया।

अनसूया, अत्रि ऋषि की पत्नी और श्रीदत्तात्रेय की माता थी। इस शब्द का अर्थ है कि वह (स्त्री) जो असूया अर्थात् मत्सरविहीन है।

''वह त्रेतायुग में श्रीमहासरस्वती का अवतरण थी। उन्होंने श्रीविष्णु, श्रीब्रह्मदेव तथा श्रीशिव के सत्वों से श्रीदत्तात्रेय का पुनर्निर्माण किया।'' (दी क्रिएशन)

Shri Anasuyaa - You incarnated as Sati Anasuya, the wife of sage Atri and the mother of Shri Dattatraya. This word means one who is devoid of jealousy.

"She was Shri Mahasarswati's incarnation in the Treta Yuga. She recreated Shri Dattatraya from the essences of Shri Vishnu, Shri Brahmadeva and Shri Shiva." (The Creation)

538. **श्रीमंदोदरी -** रावण की पत्नी। आप के महाकाली रूप का वह अवतरण है। उन्होंने अंत तक, अपने मार्ग आचरण को बदलने के लिये रावण का अनुनय किया।

Shri Mandodari - Ravana's wife, the incarnation of your Mahakali aspect who tried, till the end, to persuade Ravana to change his ways. (Based on 'The Creations)

539. **श्रीसीता -** श्रीराम की पत्नी। धरती माता से यह अकस्मात उत्पन्न हुई।

आप के महालक्ष्मी अंग का अवतरण। हवन की वेदि बनाने के लिये राजा जनक जब धरती पर हल चला रहे थे तब वह अचानक हल की रेखा से उद्भूत हुई। सन्तान की प्राप्ति के लिये राजा जनक हवन करना चाहते थे।

Shri Seetaa - Shri Rama's wife, who sprang up from mother earth. The incarnation of your Mahalaxmi aspect. She sprang up from a furrow when King Janaka was ploughing the ground for making the altar for Havan. He wanted to perform the Havan for getting progeny.

540. **श्रीजानकी -** आप सीता थी और जनक की पुत्री होने से जानकी

नाम से जानी जाती थी। राजा जनक गुरू तत्व का अवतार थे।

Shri Jaanaki - You were Seeta and also known as Jaanaki being the daughter of King Janak, an incarnation of Guru Principle.

541. **श्रीवैदेही -** विदेह देश के राजा जनक की युवराज्ञी।

Shri Vaidehi - The Princess of the country Videha ruled by King Janak.

542. **श्रीभूमि-कन्या -** भूमाता की पुत्री।

Shri Bhoomi kanyaa - The daughter of mother earth.

543. **श्रीराम-प्रिया -** श्रीराम की प्रिय पत्नी।

Shri Raamapriyaa - The beloved spouse of Shri Ram.

544. **श्रीराम-अर्धांगिनी -** जो श्रीराम की पत्नी होने के कारण श्रीराम के आधे देह के समान थी।

Shri Ram-ardha-angini - The one who was like Shri Rama's half body, the better half, being his wife.

545. **श्रीरावण-विनाशिनी -** वह जो कि राक्षस रावण के मृत्यु का कारण थी।

श्रीहनुमान ने अपने कंधों पर श्रीसीता को रख कर श्रीराम के पास ले जाने का निवेदन रूप प्रस्ताव श्रीसीता से किया था। पर श्रीसीता ने इस प्रकार हनुमान के साथ यात्रा करना स्वीकार नहीं किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया और आग्रह किया कि रावण की हत्या कर के श्रीराम ने स्वयं उन्हें (श्रीसीता को) मुक्त करना चाहिये था। नकारात्मक बाधाओं को निरस्त कर संसार या जगत् को मुक्त करना उनका उद्देश्य था।

Raavana vinaashini - The one who was the cause of the destruction of demon Ravana.

Shri Seeta did not agree to travel with Hanumana who offered to carry her, on his shoulder, to Shri Rama. She insisted that Shri Ram should have personally liberated her after killing Ravana.It was her mission to clear the world of negativity.

546. **श्रीश्रेष्ठ-पत्नी -** आप आदर्श पत्नी हैं।

श्रीसीता ने श्रीराम के वनवास के पूरे जीवन काल में उनका साथ दिया। अग्नि में प्रवेश कर के अपनी शुद्धता को सिद्ध करने के लिये और बाद में वाल्मिकी ऋषि के आश्रम में निर्वासदन में रहने के लिये उन्होंने श्रीराम की आज्ञा स्वीकार की।

Shri Sreshthha patni - You are the ideal wife. Shri Seeta accompanied Shri Ram all though his life in wilderness. She also accepted his order to prove Her purity by entering in the fire and later to live in exile in the Ashram of sage Valmiki.

547. **श्रीअग्निना-अदह्या -** आप वह है जिसे अग्नि ने नहीं जलाया।

Shri Agnina-adahyaa - The one whom the fire did not burn.

548. **श्रीश्रेष्ठ-माता -** आप वह है जो मातृत्व का आदर्श थीं।

उन्होंने वाल्मिकी ऋषि के आश्रम में अपने बच्चों का पालनपोषण और शिक्षण किया जिससे वे महान योद्धा, पंडित (विद्वान) और संसार के उद्धार कर्ता तथा मुक्तिदाता बने। श्रीराम के विरोध में उन बच्चों का मन बिलकुल कलुषित न करते हुये श्रीसीता ने यह सब किया। लव यूरोप में गये और कुश चीन में गये।

Shri Sreshthha-maataa - You are the one who was ideal of motherhood.

Seeta brought up and trained, Her children in the Ashram of sage Valmiki to become great warriors, scholars and saviours of the world, without polluting their minds against Shri Rama. Luv went to Europe and

Kush went to China.

549. **श्रीहनुमत्-सेविता -** आप को माता मान कर श्रीहनुमान् ने आपकी सेवा की।

Shri Hanumat-sevitaa - Shri Hanuman served you regarding you as his mother

550. **श्रीभूमि-विलया -** भूमि माता में प्रवेश कर के सीता के रूप में अपने जीवन का अन्त किया। सीता की प्रार्थनाओं के प्रतिवाद के रूप में धरती माता खुल गयी और उसने श्रीसीता को अन्दर ले लिया।

Shri Bhoomi vilayaa- The one who ended life as Seeta by entering into the mother earth. In response to Seeta's prayers mother earth opened up and took Her inside.

551. **श्रीत्याग-मूर्तिः -** आप वह है कि जो त्याग की मूर्ति हैं।

Shri Tyaag murtih - The one who is renunciation personified.

552. **श्रीशुद्ध-सत्त्व-स्वरूपा -** स्त्रीत्व तथा मातृत्व की शुद्धता-पवित्रता का सारसत्व आप हैं।

Shri Shuddha Sattwa swaroopaa - You are the quintessence of the purity of womanhood and motherhood.

553. **श्रीराधा -** राधा के रूप में आप दिव्य ऊर्जा की मूर्ति हैं। रा ऊर्जा है और धा - वह है जो उस ऊर्जा को धारण करती है।

Shri Raadhaa - As Radha you are Divine energy personified. Ra is energy and Dha one who holds it.

554. **श्रीरासेश्वरी -** श्रीकृष्ण की रासलीला की आप देवी हैं।

Shri Raase-shwari - You were the Goddess of Shri

Krishna's Rasa leela.

555. **श्रीश्रीकृष्ण-प्राणाधिदेवी -** श्रीकृष्ण की प्राणशक्ति की आप देवता थी।

Shri Krishna praaana-adhi-devi - You were the Goddess of Shri Krishna's Praana Shakti.

556. **श्रीवृन्दावन-निवासिनी -** आप वृन्दावन में निवास करती हैं।

Shri Vrindaavan nivasini - You resided at Vrindaavan.

557. **श्रीश्रीकृष्ण-मानसा -** आप वह है जो श्रीकृष्ण के मन में थी तथा श्रीकृष्ण उनके मन में थे।

Shri Krishna maanasaa - The one who was in Shri Krishna's mind and the vice versa.

558. **श्रीगोपेन्द्र-नन्दिनी -** गोप अर्थात् गायों को पालने वाले। गोपों के मुखिया नंद की कन्या।

Shri Gopendra nandini - The daughter of Nanda, the chief of Gopas meaning cowherds.

559. **श्रीकृपादेवी -** आप जो कृपा की वर्षा करती है वह देवी है।

Shri Krupaa devi - The Goddess who showers grace.

560. **श्रीश्रीकृष्ण-रता -** आप वह है जो श्रीकृष्ण से पूर्णता से एकरूप थी।

Shri Shrikrishna rataa - The one who was in complete unison with Shri Krishna.

561. **श्रीश्रीकृष्ण-शक्तिः -** आप राक्षसों का वध करने के लिये श्रीकृष्ण की शक्ति थी।

Shri Krishna-Shakti - You were Shri Krishna's power to kill demons.

562. **श्रीश्रीकृष्ण-विजय-दायिनी** - आप वह है जिन्होंने श्रीकृष्ण को विजय दिलाये।

Shri Krishna-vijay-daayini - The one who brought victories to Shri Krishna.

563. **श्रीयमुना-चैतन्य-दायिनी** - आप वह थी जिन्होंने यमुना का जल चैतन्यभारित किया।

Shri Yamunaa-chaitanya-daayini - You were the one who vibrated the water of the river Yamuna.

564. **श्रीअमेरिकेश्वरी** - अमेरिका की देवी।

Shri America-Ishwari - The Goddess of America.

565. **श्रीरुक्मिणी** - श्रीकृष्ण की पत्नी और महालक्ष्मी का अवतरण।

Shri Rukmini - Shri Krishna's wife and incarnation of Shri Mahaalakshmi.

566. **श्रीविष्णु-माया** - श्रीविष्णु की माया। महाकाली का अवतरण।

श्रीकृष्ण का जन्म जिस समय हुआ था, उसी समय उसका भी जन्म गोकुल में नन्द की पत्नी यशोदा से हुआ था। श्रीकृष्ण के जन्म के पश्चात्, दैवी सूचनाओं का अनुसरण करते हुए श्रीकृष्ण के पिता उस बालक को गोकुल में नन्द के घर ले गये और बालक श्रीकृष्ण को श्रीविष्णुमाया के स्थान पर यशोदा के बाजू में उन्होंने रख दिया। फिर वे उस शिशु बालिका के साथ वहाँ लौट आये जहाँ कंस ने उन्हें और उनकी पत्नी देवकी को कारावास में रखा था। उस दुष्ट राजा कंस की ऐसी ही धारणा हुई कि देवकी ने कन्या को जन्म दिया था न कि बालक या पुत्र को, जैसी कि भविष्यवाणी की गयी थी।

Shri Vishnumaayaa - Shri Vishnu's Maya. Incarnation of Mahakali. She was born, at the same time as Shri Krishna, to Yashoda Nanda's wife, in Gokul.

After Shri Krishna's birth, his father, following Divine instructions took him to Gokul to Nanda's house and kept Baby Shri Krishna in place of Baby Vishnumaya by Yashoda's side. Then he returned with the baby girl to the place where he and wife Devki were imprisoned by Kansa. The wicked king got the impression that Devki had delivered the girl and not boy, as prophesied.

567. **श्रीश्रीकृष्ण-भगिनी -** श्रीकृष्ण की भगिनी।

Shri Shrikrishna-bhagini - Shri Krishna's sister.

568. **श्रीश्रीकृष्णावतार-घोषिता -** वह कि जिन्होंने श्रीकृष्ण के अवतरण की घोषणा की थी।

Shri Krishna-avatar-ghoshitaa - The one who announced the incarnation of Shri Krishna.

569. **श्रीविद्युत्-स्वरूपा -** यशोदा से जन्म पाकर यशोदा की एक शिशु कन्या के रूप में आयी और बिजली अर्थात् विद्युत के रूप में अन्तर्धान हो गयी।

कंस जिसने देवकी के पहले के सात बच्चों को मार डाला था, उसने श्रीविष्णुमाया का भी वध करने का प्रयास किया। तथापि श्रीविष्णुमाया ने विद्युत का रूप धारण किया और अन्तर्धान हो गयी। उस समय उसने घोषणा की कि श्रीविष्णु का आठवाँ अवतार श्रीकृष्ण का जन्म हो गया है और वह गोकुल में बढ़ रहा है।

Shri Vidyut-swaroopaa - The one who came as baby daughter born to Yashoda, and vanished in the form of lightening.

Kansa, who killed Devki's earlier seven children also attempted to kill baby Vishnumaya. However, She took the form of lightening and vanished announcing that Shri Krishna the 8th incarnation of Shri Vishnu was born and growing in Gokul.

570. **श्रीश्रीकृष्ण-समन्विता -** वह कि जो श्रीकृष्ण वे अंतरतम में थी।

Shri Krishna-samanvitaa - The one who was within Shri Krishna.

571. **श्रीअधर्म-विनाशिनी -** अत्यंत बलवान परन्तु क्रूर अनेक धर्मविरोधी राजाओं का उन्होंने (श्रीविष्णुमाया ने) विनाश किया।

Adharma vinaashini - She destroyed a number of mighty but wicked and anti-dharma kings.

572. **श्रीभगिनी-प्रेम-पावित्र्य-प्रदायिनी -** मनुष्य प्राणियों में उन्होंने भगिनी का पवित्र, शुद्ध प्रेम प्रदान किया है।

Shri Bhagini prema paavitrya pradaayini - She has bestowed in the human being the pure love of sister.

573. **श्रीश्रीकृष्ण-योग-माया -** श्रीकृष्ण के योग की शक्ति जिस के द्वारा उन्होंने बहुत सारे चमत्कार किये।

Shri Shrikrishna Yogamaayaa - Shri Krishna's power of Yoga with which he made a number of miracles.

574. **श्रीसत्य-उद्घोषिणी -** वह जिन्होंने सत्य की घोषणा की।

Shri Satya-udghoshika - The one who announced truth.

575. **श्रीकुरु-कुल-विरोधिनी -** जो देवविरोधी तथा धर्मविरोधी थे ऐसे कौरवों के विरूद्ध वह थी। द्रौपदी के रूप में उन्होंने सदैव अपने पति पाण्डवों को प्रेरणा दी कि कौरवों का पराजय कर के उन्होंने अपना राज्य फिर से जीतना चाहिये।

Kurukul-virodhini - She was opposed to the Kauravas who were anti -God and anti- Dharma. As Draupadi, she always inspired her husbands the Pandavas to win back their kingdom by defeating the Kauravas.

576. **श्रीअमोघा** - वह जो लक्ष्य का वेध करने में कभी निष्फल नहीं होती।

Shri Amoghaa - The one who is unfailing to hit the mark.

577. **श्रीयशोदा** - वह जिन्होंने श्रीकृष्ण का पालन-पोषण किया। यशोदा श्रीमहासरस्वती का अवतरण थी।

Shri Yashodaa- The one who brought up Shri Krishna. She was the incarnation of Shri Mahaasarswati.

578. **श्रीमारिया-महालक्ष्मी** - माता मेरी-श्रीमहालक्ष्मी।

उनका अपना इकलौता पुत्र सूली पर चढ़ाया गया और पुनरुज्जीवित किया गया जिससे उनके अन्य बच्चे संपूर्ण परमानंद का और सर्वशक्तिमान परमात्मा के प्रति कृतज्ञता का जीवन यापन कर सकते हैं।

Shri Maria - Mahalakshmi - Mother Mary, Shri Mahalakshmi.
She had her only son crucifixed and resurrected so that her other children can lead a life of complete bliss and gratitude to God Almighty.

579. वह ऐसी (स्त्री) थी कि जिनके संबंध में जीज़स क्राइस्ट ने कहा, माँ को देखिये।

She was the one for whom Jesus Christ said, "Behold the mother"

580. **श्रीवर्गोवेनेरान्दा** - जिसकी पूजा (होती) है, ऐसी कुमारी आप हैं।

Shri Virgo veneranda - You are the virgin to be worshipped.

581. **श्रीसांक्तामातर** - आप पवित्र माता हैं।

Shri Sancta Mater - You are the Holy Mother.

582. **श्री दी जेनिट्रिक्स -** आप ईश्वर की माता है।

Shri Dei Genitrix - You are the Mother of God.

583. **श्री मातर इनुप्ता -** आप माता और कुमारी हैं।

Shri Mater innupta - You are the Mother and Virgin.

584. **श्री मातर प्युरितातिस -** आप शुद्धता/पवित्रता की माता हैं।

Shri Mater puritatis - You are Mother of purity.

585. **श्री मातर सॅन्कतिसिमा -** आप सबसे पवित्र माता हैं।

Shri Mater sanctissima - You are the most Holy Mother.

586. **श्री मातर ग्रॅशिया प्लेना -** आप अनुकम्पा से परिपूर्ण माता हैं।

Shri Mater gratia plena - You are the Mother full of compassion.

587. **श्री मातर इमॅक्युलाता -** आप माता हैं, श्रीगणेशजी की माता और हजारों सहजयोगियों की माता।

Shri Mater immaculata - You are the mother, the mother of Shri Ganesha and thousands of Sahaja Yogis

588. **श्री मातर प्रिन्सिपिस -** आप आदि तत्वों की माता हैं।

Shri Mater principis - You are the mother of the primordial principle.

589. **श्री मातर व्हेरेफिदेल -** आप सत्य विश्वास की माता हैं।

Shri Mater verae fidel- You are the mother of true faith.

590. **श्री मातर मिझरीकॉर्दीए -** आप दया अर्थात् करूणा की मूर्ति हैं।

Shri Mater misericordiae - You are the Mother of

mercy, the compassion personified.

591. **श्री मातर आएतर्निदी -** आप शाश्वत ईश्वर की माता हैं। जीज़स का जीवन तथा पुनर्जीवित होना इन से आत्मा की अमरता को सिद्ध किया गया।

Shri Mater aeterni Dei- You are the mother of eternal God. The life and resurrection of Jesus proved immortality of spirit.

592. **श्री मातर स्पिरिट्स दयुलसदिनिस -** आत्मा की मधुरता की आप माता हैं।

Shri Mater spiritus dulcedinis - You are the Mother of sweetness of the spirit.

593. **श्री मातर इनोसन्तिए -** आप अबोधिता की माता हैं।

Shri Mater innocentiae - You are the Mother of innocence.

594. **श्री मातर ख्रिस्ति स्पोन्सा -** आप क्राईस्ट की माता और शक्ति हैं।

Shri Mater Christi sponsa- You are the Mother and power of Christ.

595. **श्री मातर क्रिआतॉरिस -** आप सृजनकर्ता की माता हैं।

Shri Mater creatoris - You are the Mother of creator.

596. **श्री मातर अमबिलिस -** आप अत्यंत प्रिय माता हैं।

Shri Mater amabilis - You are the most beloved Mother.

597. **श्री मातर सांक्तएस्पी -** आप पवित्र आशा की माता हैं। आप संसार की मुक्तिदात्री हैं और इसी कारण से मानवता की आशा हैं।

Shri Mater sanctae spei - You are the Mother of holy

hope redeemer of the world and thereby the hope to humanity.

598. **श्री मातर कास्तिसिमा -** आप सबसे अधिक शीलचारित्र्य संपन्न माता हैं।

Shri Mater castissima - You are the Mother most chaste.

599. **श्री फॉन्स कारितातिस -** आप दानशीलता का मूल स्रोत हैं। आप चक्रों को शुद्ध करती हैं और उनके गुण सहजयोगियों में प्रकट करती हैं। उनमें एक उदारता है।

Shri Fons caritatis - You are the fount of charity. You purify the Chakras and manifest their qualities in Sahaja Yogis. One of them is generosity.

600. **श्री फॉन्स व्हरेसापिआन्शिए -** आप सच्चे विवेक का उद्गम स्थान हैं।

Shri Fons verae sapientiae - You are the fount of true wisdom.

601. **श्री फॉन्स पात्रिआर्चम ए प्रॉफेटेरम -** आप धर्म के प्रचारकों का तथा प्रेषितों का प्रारंभ स्थान हैं।

आप के पास सृजन की तथा अवतरण लेने की शक्ति है। उत्क्रान्ति की प्रक्रिया की रक्षा तथा मार्गदर्शन के लिये आप उस शक्ति के द्वारा अवतरणों तथा प्रेषितों को भेजती रही हैं।

Shri Fons partriarchum et prophetarum - You are the fount of patriarchs and prophets.

Through your power of creating and taking incarnations you have been sending incarnations and prophets to protect and guide the evolutionary process.

602. **श्री फॉन्स आम्नियम चॅरिस्मॅटम -** सब आध्यात्मिक उपहार तथा आशीर्वादों का आप मूल स्थान हैं। मानवता को आपका सब से

महान उपहार आत्मसाक्षात्कार और आनन्दमय दिव्य स्पन्दन तथा सर्वज्ञ तथा सर्वसंघटक प्रणव हैं।

Shri Fons omnium charismatum - You are the fount of all spiritual gifts and blessings. Your greatest gift to humanity is Self realisation and blissful Divine vibrations, the all knowing and all organising Pranava.

603. **श्री कोएलोर रेगिना -** आप स्वर्ग की रानी अर्थात् महाराज्ञी हैं।

Shri Coelorum regina- You are the Queen of Heaven, the Mahaaraajni.

604. **श्री ऍनजलोरम रेगिना -** सब देवदूतों की रानी जिनकी आज्ञाओं के पालन के लिये देवदूत सदैव सज्ज रहते हैं।

Shri Angelorum regina - The Queen of angels whose orders all angels are ever ready to obey.

605. **श्री परक्वाम रेनोव्हतुर ऑम्निस क्रीचरा -** आप सारे सृजन का नूतनीकरण करने वाली हैं।

विश्व का निर्माण करना आप की शाश्वत लीला है। सर्वशक्तिमान परमात्मा को प्रसन्न करने के लिये आप ये लीला करती हैं। और जब परमात्मा उसका आनन्द लेना बंद कर देते हैं तो आप इस लीला का उपसंहार करती हैं।

Shri Per quam renovatur-omnis creatura - You are the renewer of all creation.

Creation of universe is your eternal play which you stage to please Almighty God and withdraw when He ceases to enjoy it.

606. **श्री कौन्सोलैट्रिक्स अफ्लिक्टोरम -** आप दुखियों को सान्त्वना देती हैं।

Shri Consolatrix afflictorum - You are the

comforter of the distressed.

607. **श्री रेगिना प्रॉफेटॅरम** - प्रेषितों की रानी।

Shri Regina prophetarum - The Queen of Prophets.

608. **श्री रेगिना सॅक्टोरम अम्नियम** - सब सन्तों की रानी।

Shri Regina sanctorum omnium - The queen of all saints.

609. **श्री इतर नॉस्ट्रम ॲड डॉमिनम** - ईश्वर की ओर हमारा मार्ग। अर्थात् वह हमें सुषुम्ना नाड़ी की शक्ति द्वारा परमेश्वर की ओर ले जाती हैं।

Shri Iter nostrum ad dominum - Our way to Lord i.e. She leads us to Lord through the power of Sushumna Channel.

610. **श्री रेझरोक्शिओ नॉस्ट्रा** - हमारा पुनरुज्जीवन। वह हमें हमारा दूसरा जन्म देती हैं।

Shri Resurrectio nostra - Our resurrection. She gives us our second birth.

611. **श्री ड्युओडसिम स्टेलीस कॉरोनाटा** - वह कि जिसे बारह तारों द्वारा राजमुकुट पहनाया था। (अथवा जिसके मुकुट में बारह तारे हैं।)

Shri Duodecim stellis coronata - The one who was crowned by twelve stars. Also, whose crown had twelve stars.

612. **श्री अएटर्नि रेगिस स्पॉन्सा** - शाश्वत राजा की वधू।

Shri Aeterni Regis Sponsa - The bride of the eternal king.

613. **श्री ल्युमेन सहजए व्हेरिटेट** - सहज सत्य का प्रकाश।

Shri Lumen Sahajae veritate - The light of Sahaja

Truth.

614. **श्रीफातिमा -** गृहलक्ष्मी का अवतरण।

Shri Fatima - Fatima the incarnation of Gruha Lakshmi.

615. **श्रीअझ झाहरा -** प्रकाश की देदीप्यमान स्त्री।

Shri Az-Zahra - The radiant lady of light.

616. **श्री उम इल आईमा -** सब इमामों की माता।

Shri Um-il-Aaeemma - The mother of all Imams.

617. **श्री इल अलिया -** इमाम अली की पत्नी।

Shri Il Aliya- The wife of Imam Ali.

618. **श्री उन्मिया -** आदर्श अनुकरणयोग्य माता।

Shri Unmiyaa - The exemplary mother.

619. **श्री एनसिया -** वह जो स्वर्गीय हैं।

Shri Ensiya - The one who is heavenly.

620. **श्री अफ्दिया -** वह जो सहृदय हैं।

Shri Afdiya - The one who is warm hearted.

621. **श्री अवसिया -** सर्वोत्तम उपदेशिका।

Shri Awseeya - The best advisor.

622. **श्री बतूल -** पवित्र शुद्ध कुमारी।

Shri Batool - The pure virgin.

623. **श्री बसिता** - समृद्धिदायिनी।

Shri Baseeta - The bestower of prosperity.

624. **श्रीताक्किया** - स्वभाव से ही आध्यात्मिक।

Shri Taqqeeya - The one who is innately spiritual.

625. **श्रीजलीला** - वह जो अति उत्कृष्ट तथा विभूतिमान हैं।

Shri Jaleela - The one who is sublime and majestic.

626. **श्रीजमीला** - वह जो सुंदर हैं।

Shri Jameela -The one who is beautiful.

627. **श्रीहसीबा** - अभिजात जन्मयुक्त।

Shri Haseeba - The one of noble birth.

628. **श्रीहलीमा** - सौम्य तथा सहन करने वाली।

Shri Haleema - The gentle and forbearing.

629. **श्रीहुलिया** - वह जो अलंकृत तथा सुंदर हैं।

Shri Huleeya - The one adorned and beautiful.

630. **श्रीहनीया** - वह जो समवेदना तथा सहानुभूति से युक्त हैं।

Shri Haneeya - The one who is sympathetic.

631. **श्रीहाविरा** - जो स्पष्ट और अभिव्यक्ति निपुण हैं।

Shri Haawira - The articulate and expressive.

632. **श्रीखातून-ए-जन्ना** - नंदनवन की स्त्री।

Shri Khaatoon-e-janna - The lady of paradise.

633. **श्रीखाविरा -** वह जो वत्सल और दयालु हैं।

Shri Khaawira - The one who is affectionate and kindly.

634. **श्रीदर अन् नूर -** प्रकाशालय।

Shri Dar an-Noor - The abode of light.

635. **श्रीदाफिया -** गरीब और अन्याय तथा अत्याचार सहने वालों से वह मुक्तरूप से मिलती हैं, उनसे मुक्तरूप से संपर्क करती हैं।

Shri Daafiya - The one who mingles freely with the poor and oppressed.

636. **श्रीदिआमा -** वह जो स्तंभ और आधार हैं।

Shri Diaama - The one who is the pillar and support.

637. **श्रीराफिआ -** वह जो उन्नति को ले जाती हैं।

Shri Rafiaa - The one who is exalting.

638. **श्रीशाफिआ -** अल्लाह के सामने मध्यस्थ।

Shri Shaafiaa - The mediator before Allah.

639. **श्रीशफीका -** दयालु।

Shri Shafeeqa - The merciful.

640. **श्रीसबीहा -** परमकृपालू

Shri Sabeeha - The most graceful.

641. **श्रीसबीरा -** धीरज रखने वाली।

Shri Sabeera - The one who is patient.

642. **श्रीसहीबा -** वह जो मैत्रीपूर्ण हैं।

Shri Saheeba - The one who is friendly.

643. **श्रीसाहिबा -** पवित्र प्रेषित मोहम्मद की साथी।

Shri Saahiba - The companion of the Holy Prophet Mohammed.

644. **श्रीसाहीबत-उल-कॉन -** विश्व की रानी।

Shri Saahibat-ul-kawn - The queen of the universe.

645. **श्रीमुकाबिरा -** वह जो अल्लाह की महत्ता उद्घोषित करती हैं।

Shri Mukabbira - The one who proclaims Allah's greatness.

646. **श्रीमलिका-अल तहीर -** शुद्धता की रानी।

Shri Malika-al-Taheer - The queen of purity.

647. **श्रीवसीला -** दिव्य उपकरण, साधन।

Shri Waseela - The Divine instrument.

648. **श्रीआदिशक्तिः -** आदिम शक्ति

''श्रीआदिशक्ति परमात्मा के ईश्वरीय प्रेम का मूर्त रूप है। इस शुद्ध प्रेम में उन्होंने मनुष्य प्राणियों का निर्माण करने की इच्छा की। प्रेम की इस इच्छा को एक व्यक्तित्व दिया गया अर्थात् अहंकार। इस अहंकार को स्वतंत्रता में कार्य करना होता है। वह एक अत्यंत स्वतंत्र व्यक्तित्व हो गया। उसे जो कुछ करना पसन्द था, उसको वह कर सकता था।'' (आदिशक्ति पूजा, ६.६.१९९३)

Shri Adi Shakti - The primordial power.

"Shri Adi Shakti is the embodiment of God's Divine love. In this pure love, he desired to create human

beings. This desire of love was given a personality, means ego. This ego has to act on its own. It became a sort of a very independents personality which was free to do whatever it liked" (Adi Shakti Puja 6.6.93)

649. **श्रीशालिवाहन-कुलोत्पन्ना** - आप का जन्म विख्यात शालिवाहन वंश में हुआ।

Shri Shaalivaahan-kulotpannaa - You were born in the illustrious Shalivan clan.

650. **श्रीप्रसादराव-दुहिता** - आप प्रसादराव की पुत्री हैं।

Shri Prasada Rao duhitaa - You are the daughter of Prasadrao.

651. **श्रीकॉर्नेलिया-सुता** - आप कार्नेलिया की पुत्री हैं।

Shri Cornelia-sutaa - You are the daughter of Cornelia.

652. **श्रीनिर्मला** - आप वह हैं जिनका नाम तीन शक्तियों के सन्तुलन का प्रतिनिधित्व करता हैं। नि (र्) अर्थात् महासरस्वती, म अर्थात् महालक्ष्मी, ला अर्थात् महाकाली। (संदर्भ-अपने नाम के अर्थ पर श्रीमाताजी का भाषण)

Shri Nirmala - You are the one whose name represents balance of three powers, viz Ni-Mahasaraswati, Ma Mahalakshmi and La-Mahakali. (Ref-Shri Mataji's talk on the meaning of Her name)

653. **श्रीललिता** - आप वह हैं जो लीलाविनोदिनी, सुंदर तथा वत्सल हैं।

पद्मपुराण कहता है, सब भुवनों को पार करने पर उन्हें ललिता कहा जाता हैं। शक्ति और शिव के पार ऊपर पराशक्ति तथा सदाशिव के अनेक भिन्न भिन्न आविष्कार हैं। परंतु महाशक्ति जो कि पराशिव, परमेश्वर हैं, वह सब भुवनों को लांघ कर पार करती हैं। उनका

निवास उस सर्वोत्कृष्ट परम मंडल है जिसे महाकैलास कहा जाता है। वह सर्वोच्च हैं अर्थात् परब्रह्म की मूलप्रतिमा अर्थात् प्रतिमूर्ति। (संदर्भ-ललिता सहस्रनाम भास्कराचार्य की टीकासहित, अड्यार ग्रंथालय)

श्री चक्र के केंद्र में जो त्रिकोण है उसके अन्दर जो बिन्दु है, उस स्थान पर देवी है। वहाँ वह ललिताम्बा तथा महात्रिपुरसुन्दरी (परमेश्वर की सुंदर पत्नी) हैं और बिन्दु सर्वानन्दमयी (बिन्दु-सर्व-आनन्दमयी) अर्थात् (बिन्दु जो आनन्ददायी) हैं। वह प्रत्येक रूप, आकार तथा निर्माण किये गये भुवन का प्रत्येक कण आनन्द से भर देती हैं। और फिर वह परापराअतिरहस्य योगिनी (परा-अपरा-अति-रहस्य योगिनी) अर्थात् भुवन के पार से उस पार के रहस्य जानती हैं।

श्रीचक्र के नौ आवरण चक्र अर्थात् नौ शक्ति पीठ हैं। वहाँ वह उन चक्रों की अधिष्ठात्री देवताओं के रूप में भी हैं। प्रत्येक चक्र की अनेक शक्तियाँ होती हैं। वे इस प्रकार हैं : त्रिपुराम्बा, त्रिपुर-सिद्धा, त्रिपुर- मालिनी, त्रिपुर-श्री, त्रिपुर-वासिनी, त्रिपुर-सुन्दरी, त्रिपुरेश्वरी। इससे जोड़कर कुछ अन्य देवतायें भी हैं जैसे माहेश्वरी, चामुण्डा और महालक्ष्मी। ये पीले क्षेत्र में रहती हैं और अष्टसिद्धियों को प्रदान करती हैं। इन सिद्धियों से साधक अत्यंत छोटा, अतीव बड़ा इ. हो सकता है। (बीज मंत्र, लंदन १९७८)

Shri Lalita - You are the one who is playful, beautiful and loving.

The Padmapuraana says, "Having passed beyond the worlds She is called Lalita." Above Shakti and Shiva, there exist various manifestations of Paraashakti and Sadaashiva, but Mahaashakti which is the same as Paraashiva, -Parameshwara - crossing all worlds, has her residence in that supreme sphere called Mahaa kailaasa. She is the highest, the prototype of Parabrahma."
(Ref Lalita Sahasranaam, with Bhaskaracharya's commentary, Adyar Library).

"She is at the Bindu (the dot) inside the central triangle of the Shri Chakra where she is Shri Lalitaambaa and

Mahaatripura Sundari (i.e. the beautiful spouse of Parameshwara) and Bindu sarva-ananda-mayi (i.e. the dot which is joy giving). She fills every form, every particle of the created world with joy. Also she is Paraa-paraa-ati-rahasya-yogini the one who knows the secrets of the world beyond of the beyond.

She is also in the forms of Goddesses presiding over the nine Avarana Chakras i.e. Shakti Peethas of the Shri Chakra. Each has a number of powers. They are : Tripuraambaa, Tripura siddhaa,Tripurmaalini, Tripurashri, Tripura vaasini, Tripura sundari, Tripureshwari. In addition there are other goddesses viz Maheshwari, Chamunda and Mahaalaxmi who exist in the yellow region and who confer the Ashta Siddhis the eight powers with which one can become extremely small, huge etc. Beej Mantra-London 1978)

654. **श्रीबाई** - इस नाम से सन्त एकनाथ जैसे सन्तों ने देवी को संबोधित किया है। श्रीआदिशक्ति के माता-पिता और बंधु तथा भगिनी उन्हें इस नाम से पुकारते थे।

Shri Baai - With this name saints like Ekanath have addressed Devi. Adi Shakti Shri Mataji's parents and brothers and sisters addressed her with this name.

655. **श्रीनीरा** - यह महाराष्ट्र में एक नदी है। इस का अर्थ शुद्ध, पवित्र जल है। श्रीमाताजी का बचपन का एक नाम।

Shri Neeraa - A river in Maharashtra, which means pure water. One of the childhood names of Shri Mataji.

656. **श्रीमहा-तेजस्विनी** - आप महातेज से युक्त (महातेजस्विनी) हैं।

Shri Mahaateja-swini - You are the one with great splendour.

657. **श्रीसौम्य-तेजाः** - आपने आप का तेज़ (प्रखरता से) कम (मृदु)

किया है जिससे आप के बच्चे आप को देख सकते हैं।

Shri Saumya teja - You have reduced your splendour so that your children can behold you.

658. **श्रीसुहास्य-वदना -** आप वह है जिनका मुख स्मितयुक्त हैं।

Shri Suhaasya vadanaa - You are the one with smiling face.

659. **श्रीमधुर-भाषिणी-** आप की आवाज मीठी तथा वाणी मधुर है।

Shri Madhur Bhaashini - You are the one with sweet voice and speech.

660. **श्रीधर्मिणी-** आप मूर्तिमान धर्म हैं।

Shri Dharmini - You are the embodiment of Dharma.

661. **श्रीद्विजकारिणी-** आप (साधक को) द्विज बनाती हैं अर्थात् दूसरी बार जन्म देती हैं।

Shri Dwija Kaarini - You make the twice born.

662. **श्रीस्वचरण-संलग्न-कारिणी-** आप साधकों को आप के चरण कमलों से जोड़ देती हैं।

Shri Swa charana sanlagna kaarini - You connect the seekers to your lotus feet.

663. **श्री-परा-विज्ञान-दायिनी-** आप पराविज्ञान प्रदान करती हैं।

Shri Paraa vijnyaan dayini - You are the bestower of meta-science.

664. **श्रीमहा-धीरा-** आप साधकों से महा (अति) धीर धारण करती हैं। धीरता (पेशन्स) ऐसी अवस्था है जिस में हर एक बात हो जाती है।

अगर आप उस अवस्था में गये तो किसे भी कुछ बोलने की या बताने की आवश्यकता नहीं होती है। वह घटित होगी। (आदिशक्ति पूजा, दिल्ली, ५.१२.९९)

Shri Mahaa Dheeraa - You have great patience with seekers. "Patience is a state in which every thing happens. If you go into that state then no one needs to speak or to tell any one. It will happen. (Adi Shakti Puja Delhi 5.12.99)

665. **श्रीधीर-समर्चिता-** धीर धारण करने वाले लोगों द्वारा आप की पूजा की जाती है।

Shri Dheer samarchitaa - You are worshipped by those who are in the state of patience.

666. **श्रीचैतन्यार्घ्य-समाराध्या-** चैतन्य का अर्घ्य अर्पण कर के आप का पूजन किया जाता है।

Shri Chaitanya-arghya-samaaraadhyaa - You are worshipped with the offering of the Chaitanya.

667. **श्रीचैतन्य-दीप-प्रज्वलिनी-** आप ने चैतन्य के दीप जलाये हैं।

Shri Chaitanya-deepa-prajwalini - You have lit the lamps of Chaitanya.

668. **श्रीस्वातंत्र्य-दायिनी-** आप ने भारत और अन्य देशों को राजनैतिक स्वतंत्रता प्रदान की है। तत्पश्चात् आप ने सहज योग के द्वारा सारी दुनियाभर के लोगों को आध्यात्मिक स्वतंत्रता देने का जीवित प्रयोजन स्वीकार किया (हाथ में लिया)। आपने आप के प्रयोजन की पूर्ति की है।

Shri Swaatantrya daayini - You have bestowed political freedom on India and other countries. Later you took up the mission of granting spiritual liberation to the peoples from all over the world through Sahaja Yoga.

You have accomplished your mission..

669. **श्रीयोगस्वरूपा-** आपका स्वरूप योग अर्थात् आत्मा-परमात्मा की एकरूपता है।

Shri Yoga Swaroopaa - Your form is the Yoga which is unison of spirit with supreme Spirit.

670. **श्रीयोगस्था -** आप योग में विद्यमान हैं। (योगावस्था में)

Shri Yogasthaa - You are present in the state of Yoga.

671. **श्रीयोगशिखरारूढा-** आप योग के शिखर (अर्थात् सर्वोच्च स्थान) पर बैठी है।

Shri Yoga-shikhara- arudhaa - You are at the peak of Yoga.

672. **श्रीयोगारूढा-** आप का योग पर प्रभुत्व है। योगदर्शन के पूर्व सोपान या स्तरों पर प्रभुत्व न पाये हुए, पर ग्रहण करने की इच्छा करने वाले किसी भी व्यक्ति को भी आप मुक्तरूप से योगावस्था प्रदान कर सकती हैं।

Shri Yoga-arudhaa - You have command on Yoga. You can freely grant the state of Yoga to any receptive person although the person has not mastered the preceding stages of the Yoga system.

673. **श्रीयोगालया-** आप योग का निवास है। आप के चरण-कमलों पर अवधान स्थिर करना ही योग है।

Shri Yogaalayaa - You are the abode of Yoga. Attention at your lotus feet is Yoga.

674. **श्रीयोगारि-नाशिनी -** योग के विरोधकों का (शत्रुओं का) आप विनाश करती हैं।

Shri Yogaari naashini - You destroy those who are antagonistic to Yoga.

675. **श्रीयोग-सुलभ-कारिणी-** प्राचीन अष्टांग योगदर्शन पद्धति को आप ने सुलभ एवम् सरल किया है और सहजयोग को प्रकाशित कर के आप ने उसका विवरण और निरूपण किया है।

Shri Yoga sulabha kaarini - You have simplified the ancient system of the Yoga of the practice of eight stages and expounded Sahaja Yoga.

676. **श्रीयोगानन्दा-** परमात्मा से एकरूप होने पर जो परमानन्द और हर्ष होता है, वह आप का रूप है।

She Yoga-anandaa - You are of the form of bliss and joy of unison with Supreme.

677. **श्रीयोगानन्ददायिनि-** आप योग का आनन्द देती है।

Shri Yoga-ananda daayini - You grant the joy of Yoga.

678. **श्रीयोग-अनुभूति-दायिनी -** आप योग की अनुभूति प्रदान करती हैं।

Shri Yoga-anubhuti-daayini- You bestow the experience of Yoga.

679. **श्रीयोगेशी-** आप योग की ईश्वरी हैं।

Shri Yogeshi - You are the Goddess of Yoga.

680. **श्री योग-ज्ञान-प्रदायिनी-** आप योग का ज्ञान प्रदान करती हैं।

Shri Yoga-jnyaana pradaayini- You bestow the knowledge of Yoga.

681. **श्रीयोगि-योग्याय-धारिणी-** आप योगी को और योग की अवस्था

प्राप्त करने में सुपात्र व्यक्ति को धारण करती हैं, आधार देती हैं।

Shri Yogi-yogyaaya dhaarini - You sustain a Yogi and one who deserves to attain the state of Yoga.

682. **श्रीभक्ति-योग ज्ञान-योग क्रिया-योग-समग्रता-** आप भक्ति योग, ज्ञान योग तथा कर्मयोग का संयोग करती हैं।

Shri Bhakti Yoga Jnyaan Yoga Kriyaa Yoga samagrataa - You are the combination of the Yoga of devotion, the Yoga of knowledge and the Yoga of action.

683. **श्रीसहजयोगकारिणी-** आप सहजयोगी की निर्माती (स्त्री) हैं।

Shri Sahaja Yoga kaarini - You are the creator of Sahaja Yoga.

684. **श्रीसहजयोगवर्धिनी -** आप सहजयोग में वृद्धि लाती हैं।

Shri Sahaja Yoga vardhini - You bring about growth of Sahaja Yoga.

685. **श्रीसहजयोग-प्रसारिणी-** अपा सहजयोग का प्रसार करती हैं।

Shri Sahaja Yoga prasaarini - You propagate Sahaja Yoga.

686. **श्रीसहज-योग-दायिनी -** आप साधकों को सहजयोग की दीक्षा देती हैं।

Shri Sahaja Yoga daayini - You initiate seekers into Sahaja Yoga.

687. **श्री सहजआत्मसाक्षात्कार प्रदायिनी -** आप सहजता से आत्मसाक्षात्कार देती हैं।

Shri Sahaja atma sakshaat-kaar pradaayini - You spontaneously grant self realisation.

688. **श्री सहजयोगि-उद्धारिणी -** आप सहजयोगियों का उद्धार करती हैं।

Shri Sahaja Yogi uddhaarini - You redeem Sahaja Yogis.

689. **श्री पंचकोष शुद्धिकारिणी -** आप अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, ज्ञानमय तथा आनन्दमय इन पाँच कोषों को शुद्ध करती हैं।

Shri Pancha kosh-shuddhi kaarini - You purify the five sheaths, physical, mental, psychic, spiritual, and blissful sheathes.

690. **श्री इच्छा-क्रिया-ज्ञान सन्तुलन दायिनी -** आप इच्छा शक्ति, क्रिया शक्ति तथा ज्ञान शक्ति इन तीनों में सन्तुलन देती हैं।

Shri Icchaa-kriyaa-jnyaan santulan daayini - You are the bestower of balance of the powers of desire, action and knowledge.

691. **श्री इच्छा-क्रिया-ज्ञान शक्ति शुद्धिकारिणी -** आप इच्छा शक्ति, क्रिया शक्ति तथा ज्ञान शक्ति इन तीनों को शुद्ध, पवित्र करती हैं।

Shri Icchha-kriyaa-jnyaana Shakti shuddhi kaarini - You purify the powers of desire, action and knowledge.

692. **श्री आदिचक्र संस्थापिनी -** आदि (नाड़ी) इड़ा, आदि पिंगला और आदि नाड़ी सुषुम्ना इन के परस्पर छेद के बिंदुओं पर आप आदि चक्रों की स्थापना करती हैं।

Shri Adi chakra sansthapini- You establish the primordial chakras at the points of intersection of the primordial Ida, Pingala and Sushuman channels. (The Cration).

693. **श्री कुण्डलिनी -** आदि कुण्डलिनी का जो प्रतिबिम्ब है वह प्रत्येक

मनुष्य में विद्यमान कुण्डलिनी आप हैं।

Shri Kundalini - You are the Kundalini, the reflection of primordial Kundalini in every human being.

694. **श्री बिसतन्तु तनीयसी-** आप वह हैं जिनका रूप अनगिनत धागों का है। $(७ X ३)^{१०८}$ - (संदर्भ - नवरात्रि पूजा, १९९१)

Shri Bisatantu-taneeyasi - You are the one whose form is countless strands, 7 into 3 raised to power 108 (Ref-Navaratri Puja 1991)

695. **श्री कुण्डलिनी जागरिणी -** आप कुण्डलिनी को जगाती हैं।

Shri Kundalini jaagarini - You awaken the Kundalini.

696. **श्री चित्तनिरोध दायिनि-** साधकों के लिये चित्त अर्थात् अवधान को संयत करना आप सुकर (करने में सरल) कर देती हैं।

Shri Chitta nirodh daaayini - You facilitate restraining of the attention for seekers.

697. **श्री आत्मबोधदायिनी -** आप आत्मबोध प्रदान करती हैं।

Shri Atma-bodha-daayini - You bestow the enlightenment of spirit.

698. **श्री सत्यज्ञान प्रकाशिनी-** सत्य के ज्ञान का बोध आप दिलाती हैं।

Shri Satya-jnyaana prakaashini - You bestow the enlightenment of the knowledge of truth.

699. **श्री ज्ञानमार्ग प्रकाशिनी-** आप ज्ञान का मार्ग अर्थात् सुषुम्ना नाड़ी को कुण्डलिनी जागृत कर के प्रकाशित करती है।

Shri Jnyaana Maarga prakaashini - You enlighten the path of knowledge i.e. the Sushumna channel by the Kundalini awakening.

700. **श्री ह्रिंकारी-** आप सृष्टि की संरक्षक है तथा ह्रीम बीज का निर्माण करने वाली हैं। इससे आप के सुरक्षात्मक विशेष का प्रकटीकरण होता है। देवी अथर्वशीर्ष के अुसार वह संस्कृत भाषा के तीन वर्णों का संयोग हैं। ह, र और ईन् इसमें हैं ये तीन तत्त्वों का प्रतिनिधित्व करते हैं और महालक्ष्मी का आविष्कार करते हैं। और फिर इस वर्ण को प्रणव अर्थात् ओम् रूप से भी जाना जाता है।

Shri Hrimkaari - You are the protector of the creation and also the creator of the Beeja Hrim manifesting the protective aspect. According to Devi Atharvasheersha it is the combination three Sanskrit syllables, "H" (as in hand), "R" (as in Ram) and "In" (as in) representing three elements and manifesting Shri Mahalakshmi and also known as the syllable same as the Pranava i.e. Om.

701. **श्री सत्वगुणदायिनी -** आप सत्व गुण का प्रदान करती हैं।

Shri Sattwa Guna Dayini - You bestow the Sattwa Guna.

702. **श्री पिंगला नाडी कार्य संचालिनी -** आप पिंगला नाड़ी के कार्य का संचालन करती हैं।

Shri Pingala nadi karya sanchalini - You govern the functioning of the Pingalaa Nadi.

703. **श्री ऐंकारी-** आप ऐं बीज की निर्मात्री हैं। सृजनशीलता का अंग प्रकट करती हैं।

Shri Aimkaari - You are the creator of the Beeja "Aim" that manifest creative aspect.

704. **श्री रजोगुणदायिनी -** आप सृजनशीलता का घटक प्रदान करती हैं।

Shri Rajo Guna daayini - You bestow the creative aspect.

705. **श्री क्लींकारी-** आप क्लीं (क्लीम्) बीज की निर्मात्री हैं और इच्छा शक्ति हैं (कामरूपिणी)। बीजरूपा इस शक्तिसम्पन्न रूप में आप विद्यमान हैं।

Shri Kleemkaari - You are the creator of the Beeja "Kleem" and the power of desire (Kaamarupinee) and exist in the potent form as Beeja roopaa.

706. **श्री तमोगुणदायिनी -** आप तमोगुण प्रदान करती हैं जो इच्छा करने वाला अंग है।

Shri Tamo Guna Dayini - You bestow the Tamo Guna which is desiring aspect.

707. **श्री चित्त-बुद्धि-प्रकाशिनी -** आत्मा की प्रकाश से आप चित्त और बुद्धि को प्रकाशित करती हैं।

Shri Chittah-buddhih-prakaashini - You enlighten the attention and the intellect with the light of Spirit.

708. **श्री सर्वचक्र शुद्धिकारिणी -** आप सब चक्रों को शुद्ध करती हैं।

Shri Sarva-Chakra-shuddhi kaarini - You purify all the Chakras.

709. **श्री सर्वचक्र स्थिता-** आप सब चक्रों में रहती हैं।

She Sarva-Chakra-sthitaa - You reside in all the Chakra.

710. **श्री सर्वसद्गुण जागरिणी -** आप सब सद्गुणों को जागृत करती हैं।

Shri Sarva sadguna jaagarini - You awaken all virtues.

711. **साक्षात श्री गणेश मूलाधारे चक्रे-** मूलाधार चक्र में आप साक्षात् श्रीगणेश हैं।

Sakshat Shri Ganesha Mulaadhaare chakre - You are verily Shri Ganesha in the Mulaadhaara Chakra.

712. **साक्षात श्री गौरी मूलाधारे -** आप मूलाधार में कुण्डलिनी के रूप में कुमारी गौरी हैं।

Sakshat Shri Gauri Mulaadhare - You are virgin Gauri in the form of the Kundalini in the Mulaadhaara.

713. **श्री लं बीजा -** पृथ्वी तत्व के सार का प्रतिनिधित्व करने वाला लं बीज आप हैं।

Shri Lam beeja - You are the Lam beeja representing the essence of earth element.

714. **श्री भू:स्वामिनी -** आप भू: (लोक) अर्थात् वह स्थिति या स्थान जहाँ श्रीगणेश का निर्माण किया गया था, उस भू: की स्वामिनी हैं।

Shri Bhuh swamini -You are the Swamini of the "Bhu" "the state where Shri Ganesh was created."

715. **साक्षात् श्री सरस्वती ब्रह्मदेवौ स्वाधिष्ठाने -** आप स्वाधिष्ठान में साक्षात् सरस्वती और ब्रह्मदेव हैं।

Sakshat Saraswati-Brahmedevau Swadhishthane You are verily Shri Saraswati and Brahmadeva at the Swadhishthana.

716. **श्री वं बीज -** जल तत्व के सार का प्रतिनिधित्व करने वाला वं बीज आप हैं।

Shri Vam beeja - You are the Vam beeja representing the essence of water element.

717. **श्री भुवः स्वामिनी -** आप भुवः (लोक) की स्वामिनी हैं। भुवः अर्थात् जो हमारे चारों ओर निर्माण किया गया है, अर्थात् अन्तरिक्ष, पृथ्वी के ऊपर की ओर विद्यमान वातावरण।

Shri Bhuva swamini - You are the Swamini of the "Bhuva" which is "all that is created around us i.e.

Antariksha." of the atmosphere above the earth.

718. **साक्षात् श्रीशुद्ध-विद्या वामस्वाधिष्ठाने -** आप (बायें स्वाधिष्ठान में) शुद्ध विद्या के रूप में हैं।

Sakshat Shri Shuddha vidyaa vaama swadhishthane - You are of the form of Shuddha Vidyaa.

719. **साक्षात् श्री लक्ष्मी-नारायणौ मणिपूरे -** आप मणिपूर अर्थात् नाभिचक्र में श्रीलक्ष्मी-नारायण हैं।

Sakshat Shri Laksmhmi-Naaraayanau Manipure - You are verily Shri Lakshmi-Naaraayana at the Manipura (the Nabhi Chakra).

720. **श्री राजराजेश्वरी-** आप राजाओं की ईश्वरी अर्थात् देवी हैं अथवा राजा की प्रभावशाली विभूतियाँ हैं।

Shri Rajarajeshwari - You are the Goddess of kings' or the ruler's majesties.

721. **श्री रं बीजा -** अग्नितत्व के सार का प्रतिनिधित्व करने वाला रं बीज आप हैं।

Shri Ram beeja - You are the Ram beeja representing the essence of fire element.

722. **श्री स्वाहा स्वामिनी -** आप स्वाहा की स्वामिनी हैं। स्वाहा नाभिचक्र में होती हैं और प्रत्यके वस्तु का ग्रहण कर उसे नि:शेष कर देती हैं।

Shri Swah swamini - You are the swamini of the "Swaha" which is in the Nabhi Chakra and consumes every thing."

723. **श्री स्वधा स्वामिनी -** आप स्वधा की स्वामिनी हैं।

''वह ऐसी अवस्था है जिस में हम हमारे अंदर धर्म का धारण करते

हैं। माता-पिता के लिये, देश के लिये, पति का पत्नी के लिये या पत्नी का पति के लिये प्रेम धर्म के कारण होता है। वह हमारा गुण है, यह तो सहज स्वाभाविक बुद्धि या आकलन शक्ति हैं।'' (गणपतिपुले पूजा भाषण, द सेव्हन अवेअरनेस, २५.१२.१९९८)

Shri Swadhaa swamini - You are the Swamini of Swadhaa.

"It is the state in which we sustain Dharmas within us. Love for the parents, the country, for the husband or the wife are due to the Dharmas. It is our quality, an innate understanding." (Ganapatipule Puja talk-The Seven Awarenesses 25.12.98)

724. **साक्षात् श्री दत्तात्रेयः भवसागरे -** आप भवसागर में श्रीदत्तात्रेय अर्थात् गुरुतत्व हैं।

Sakshat Shri Dattatraya Bhavasaagare - You are verily Shri Dattatraya the Guru Principle at the Bhavasaagara (Void).

725. **श्री संसारार्णवसेतुः -** सांसारिक जीवन सागर से उस पार ले जाने वाला सेतु आप हैं।

Shri Sansaara-arnava setu - You are the bridge across the ocean of mundane life.

726. **साक्षात् श्री आदि गुरुः -** आप आदिगुरु हैं। गुरु शब्द का पहला अक्षर 'गु' माया के लिये हैं। माया तीन गुणों को प्रकट करती है। उसी प्रकार अंधःकार के समान होने वाला अज्ञान भी माया है। 'रु' ब्रह्म का प्रतिनिधित्व करता है। भ्रान्ति के अंधःकार का निरास करने वाले प्रकाश के समान ब्रह्म है।

Sakshat Shri Adi Guru - You are the Primordial Guru. The first letter "Gu" in the word Guru stands for Maya that manifests the three Gunas and ignorance

which is like darkness and the second letter "Ru" represents Brahma which is like light removing the darkness of illusion. (Guru Geeta)

727. **साक्षात् श्री जगदम्बा अनाहते-** आप अनाहत चक्र में साक्षात् जगदम्बा हैं।

Sakshat Shri Jagadambaa-Anahate - You are Jagadambaa at the Anahata Chakra.

728. **श्री यं बीजा -** आप वायु तत्व के सार का प्रतिनिधित्व करने वाला यं बीज हैं।

Shri Yam beeja - You are Yam beeja representing the essence of air element.

729. **श्री मनः स्वामिनी -** आप मनः की स्वामिनी हैं। पर मनः मन (माईंड) नहीं है। वह प्रेरणा के रूप में आने वाली भावनिक क्षमता, शक्ति या धारणा है।

Shri Manah Swamini - You are the Swamini of the "Manah" which is not the mind. It is the emotional capacity which comes as an urge".

730. **साक्षात् श्रीशिव-पार्वत्यौ हृदये -** आप हृदय में साक्षात् श्रीपार्वती और श्रीशिव हैं।

Sakshat Shri Parvati-Shiva-Hrudaye - You are Shri Parvati and Shiva in the heart.

731. **साक्षात् श्रीआत्मापरमात्मानौ -** मनुष्य हृदय में आप आत्मा हैं और विराट के हृदय में परमात्म हैं।

Sakshat Shri Aatmaa-Paramaatmaa - You are Spirit in the human heart and Supreme Spirit in the Virata's heart.

732. **साक्षात् श्रीसीता-रामौ दक्षिणहृदये -** आप दक्षिण हृदय में

साक्षात् सीताराम हैं

Sakshat Shri Seeta-Raamau Dakshin Hrudaye- You are Shri Seeta Raam in the right heart.

733. **साक्षात् श्रीराधा-कृष्णौ विशुद्धि चक्रे -** विशुद्धि चक्र में आप साक्षात् श्रीराधाकृष्ण हैं।

Sakshat Shri Radha-Krishnau Vishuddhi Chakre - You are verily Shri Radha-Krishna in the Vishuddhi Chakra.

734. **श्री हं बीजा -** आप आकाश तत्व के सार का प्रतिनिधित्व करने वाला हं बीज हैं।

She Ham beeja - You are Ham beej representing the essence of the ether element.

735. **श्री जनः स्वामिनि-** आप जनः (लोक) की स्वामिनी हैं। जनः संवाद, निवेदन की आन्तरिक प्रेरणा है।

Shri Janah swamini - You are the Swamini of the "Janah which is the inner urge of communication".

736. **साक्षात् श्री विष्णुमाया वाम-विशुद्धि-चक्रे -** आप बायें विशुद्धि चक्र पर साक्षात् श्रीविष्णुमाया हैं।

Sakshat Shri Vishnu-maya vaama Vhishuddhi Chakre - You are Shri Vishnu-maayaa on the left Vishuddhi.

737. **अपराध भावना नाशिनी -** आप वह हैं जो अपराध की भावना को दूर हटाती हैं।

Aparaadh Bhaavanaa naashini - You are the one who removes the guilt feeling.

738. **साक्षात् श्री विठ्ठल-रुक्मिण्यौ दक्षिणविशुद्धि चक्रे -** दाहिने

विशुद्धि चक्र पर आप साक्षात् विठ्ठल-रुक्मिणी हैं।

Shri Vithal-Rukminau dakshin Vishuddhi Chakre
You are Shri Vithal-Rukmini on the right Vishuddhi chakra.

739. **श्री माधुरी-** आप मधुरता हैं।

Shri Maadhuri - You are sweetness.

740. **साक्षात श्रीसर्व-मंत्र-सिद्धिः -** आप सब मंत्रों की सिद्धि हैं।

Sakshst Shri Sarva mantra siddhi - You are the effectiveness of all the mantras.

741. **श्री सर्वसाक्षिणी -** आप सर्वसाक्षिणी हैं।

Shri Sarva saakshini - You are the witness to all.

742. **श्री विराटांगना-** सर्वशक्तिमान परमात्मा के सर्वव्यापी विराट रूप की आप शक्ति हैं। जब कुण्डलिनी मस्तिष्क में प्रवेश करती है तब विराटांगना शक्ति जागृत होती हैं। तब जिसे विज्ञान नाम रूप में जाना जाता है उसका मूल या उत्पत्ति स्थान देखा जा सकता है। विज्ञान तब पराविज्ञान बन जाता है। कला परा-कला बन जाती है। उसका पूरा संदर्शन देखा जा सकता है। मानसिक वृत्ति के अधिक प्रसरणों के कारण सृजनशीलता का ह्रास भी देखा जा सकता है। साधक में प्रेम, अनुकम्पा और सदाचरण सहज उत्स्फूर्तता से आविर्भूत होते हैं। (विराट-विराटांगना पूजा के भाषणों पर आधारित)

Shri Viraataan-ganaa - You are the power of God Almighty's all encompassing Viraataa form. The Virataaganaa power awakens when the Kundalini enters the brain. Then what is known as science its origin can be seen. Science becomes the meta-science. Art becomes the meta-art. The whole vision of it is seen. The decline in the creativity with mental projections is also seen. Love, compassion, and virtuous behaviour

spontaneously manifest in the seeker. (Based on the Viraat-Viraataanganaa puja talks)

743. **श्रीगृहलक्ष्मी-कुबेर-विराट** - आप गृहलक्ष्मी एवं कुबेर का साक्षात् विराट रूप हैं।

Shri Griha Laxmi Kuber Virata - You are verily the cosmic form of the Griha Laxmi.

744. **श्री ब्रह्मदेव-विठ्ठल-विराट-** आप ब्रह्मदेव एवं विठ्ठल का साक्षात् विराट रूप हैं।

Shri Brahmadeva Vitthal Virata - You are verily the cosmic form of Shri Brahmadeva.

745. **श्री विष्णुमाया विराट-** आप विष्णुमाया का साक्षात् विराट रूप हैं।

Shri Vishnumaya Virata - You are verily the cosmic form of Vishnumaya.

746. **श्री विठ्ठल विराट-** आप विठ्ठल, जो विराट हैं, उनका रूप हैं।

Shri Vitthal Virata - You are verily the cosmic form of Shri Vithal who is the Virata.

747. **साक्षात श्रीमेरी-जीजस आज्ञाचक्रे** - आज्ञा चक्र पर साक्षात् मेरी-जीजस् हैं।

Sakshat Shri Mary-Jesus Agya Chakre- You are verily Mary Jesus on the Agya Chakra.

748. **साक्षात श्री हं-क्षम्-** आप साक्षात् हं क्षं बीजवर्ण हैं। क्षं दूसरों को क्षमा करना है। हं स्वयं को क्षमा करना है। आज्ञा चक्र खोलने के लिये इन दो बीजाक्षरों का उपयोग किया जाता है।

Sakshat Shri Ham-Ksham - You are verily the seed letters Ham and Ksham. "Ksham is to forgive others.

Ham is to forgive yourself. These are the two Beejaksharas used for the Agya Chakra opening."

749. **श्री तपः स्वामिनि -** आप तपः अर्थात् छठा केंद्र आज्ञा चक्र की स्वामिनी हैं। इस चक्र पर क्रिस्त हमारे अहंकार और उपाधियों का नियंत्रण करते हैं। क्रिस्त का समय याने तपस्या, बलिदान का युग था। बुद्ध, महावीर और क्रिस्त ने हमारे लिये तपस्वियों का जीवन जिया। हमें स्वच्छ करने के लिये और योग्य मेधा देने के लिये एकादश (रूद्रों) को स्वच्छ (साफ-सुथरा) किया जाना था।

Shri Tapah swamini - You are the Swamini of the "Tapah" which is the sixth centre the Agya Chakra where Christ controls our ego and conditioning. Christ's time was the era of Tapasya, sacrifices,. Buddha, Mahavira and Christ lived the life of Tapasvis for us to cleanse us, to give us proper Medhas, the Ekadashas had to be cleared."

750. **श्री क्षमा रूपा -** आप मूर्तिमान क्षमा हैं।

Shri Kshamaa-roopaa - You are forgiveness personified.

751. **श्री अहंकार नाशिनी -** आप अहंकारों का नाश करती हैं।

Shri Ahankaar naashini - You destroy the egos.

752. **श्री प्रति अहंकार शोषिणी -** आप प्रति-अहंकारों का शोषण करती हैं।

Shri Prati ahankaar shoshini - You suck the super egos.

753. **श्री सुप्त चेतना शुद्धि कारिणी -** आप सुप्त चेतना को शुद्ध करती हैं।

Shri Supta-chetanaa-shuddhi- kaarini - You purify the sub- conscious.

754. **श्रीनिर्विचार-चेतना-दायिनी -** आप निर्विचार-चेतना प्रदान करती हैं।

Shri Nirvichaar-chetanaa daayini - You bestow

thoughtless awareness.

755. **श्री एकादश-रुद्र-शक्ति-जागरिणी** - आप ने एकादश रुद्रों की शक्ति जागृत की है।

Shri Ekadash Rudra Shakti Jaagarini - You have awakened the Ekadasha Rudra power.

756. **श्री कल्कि स्वरूपा-** आप सहस्रार में श्रीकल्कि अर्थात् श्रीविष्णु का दशम अवतार हैं।

'श्रीआदिविष्णु का दसवा अवतरण आदि-मस्तिष्क में अर्थात् सहस्रार में निर्माण किया जायेगा और श्रीकल्कि नाम से जाना जायेगा। यह एक सामूहिक शरीर होगा जो कलियुग के चलते हुए सहजयोगियों के माध्यम से आदिशक्ति अर्थात् महामाया के द्वारा निर्माण किया जायेगा। जिस दिन आदिशक्ति ने मनुष्य-रूप लिया उस दिन से कल्कि का जागरण शुरू हो गया।' (दी क्रिएशन)

Shri Kalki swarupaa - You are Shri Kalki (Shri Vishnu's tenth incarnation) on the Sahasrara.

"The tenth incarnation of Adi Vishnu will be created on the primordial brain (Sahasrara) and will be known as Shri Kalki. This will be a collective being created through Sahaja Yoga during the Kali Yuga, by the incarnation of Adi Shakti as the great illusion "Mahamaya). The awakening of Kalki began the day Adi Shakti took human form." (The Creation)

757. **श्री सर्व वर्णोपशोभिता-** आप सब रंगों (वर्णों) से सुशोभित हैं।

आप सब बीजाक्षरों का अर्थात् अ से ह तक सब वर्णों का भी रूप हैं। उनकी संख्या ५१ है और सहस्रार के दलों पर वे विद्यमान हैं।

Shri Sarva-varnop-shobhitaa - You are brilliant with all colours. You are also of the form of all seed letters i.e. Sanskrit letters from A to Ha that are fifty-one in number and are on the petals of the Sahasrara.

758. **श्री सत्यस्वामिनी -** आप सत्य की स्वामिनी हैं।

''सत्य आपके पास सहजयोग के माध्यम से, मस्तिष्क में लिंबिक क्षेत्र में आता है। जब कुण्डलिनी वहाँ प्रवेश करती है, तो वह उसे प्रकाशित करती है। वह प्रबोधित व्यक्तित्व का निर्माण करती है।'' (क्रिसमस पूजा, गणपतिपुले, २५.१२.१९९५ के भाषण से तथा बीज मंत्रों पर लंदन १४ अक्टूबर १९७८ से उद्धृत)

Shri Satyaswamini - You are the Swamini of the Satya, the truh.

"The truth comes to you through Sahaja Yoga, in the brain, in the limbic area, when the Kundalini enters she puts light there. She creates the enlightened personality" Note - Quotes from Christmas Puja talk, Ganapati Pule, 25.12 95.Also talk on Beeja Mantras 14 Oct 1978. London.

759. **श्री सद्गुण समग्र कारिणी -** कुण्डलिनी के सहस्रार में स्थिर होने से आप सद्गुणों का सम्पूर्ण एकात्म रूप प्रदान करती हैं।

Shri Sadguna Samagra kaarini - You bestow integration of virtues with the Kundalini settled in the Sahasrara.

760. **श्री शिरसा योग-पीठस्था-** ब्रह्मरन्ध्र में जो योग पीठ है वहाँ आप निवास करती हैं।

Shri Shirasaa-yoga-peetha-sthaa - You reside in the Yoga peetha in the Brahmarandhra.

761. **श्री ललिता चक्र स्वामिनी -** आप ललिता चक्र की स्वामिनी है। सहजयोगी के द्वारा आत्मसाक्षात्कार को कार्यान्वित करने के लिये इस चक्र में पूर्व व्यवस्थापन किया गया है।

Shri Lalita Chakra Swamini - You are the Swamini of the Lalita Chakra which is programmed to work out self realisation by a Sahaja Yogi.

762. **श्री श्रीचक्र स्वामिनी -** आप श्रीचक्र की स्वामिनी हैं। सहजयोगी के द्वारा आत्मसाक्षात्कार को कार्यान्वित करने के लिये इस चक्र में पूर्वयोजना की है।

Shri Shrichakra swamini - You are the Swamini of the Shri Chakra which is programmed to work out self realisation by a Sahaja Yogi.

763. **श्री चैतन्य घनरूपा -** आप वह हैं जिनका रूप एकाग्र चैतन्य हैं।

Shri Chaitanya-ghanaa-roopaa - You are the one whose form is concentrated Chaitanya.

764. **श्री आदिशब्द पूर्वा -** आदि शब्द, आदिनाद के अस्तित्व में आने के पहले ही आप विद्यमान, उपस्थित थीं। (शब्द का अर्थ शब्द तथा नाद है।)

Shri Adi-shabda-poorvaa - You are the one who was present even before the primordial sound came into existence. (Shabda means a word and a sound).

765. **श्री तत्वमस्यादि लक्ष्या -** तत्वमसि स्थिति का आदि आविष्कार आप हैं। केवल आप ही तत्वमसि अवस्था प्रदान कर सकती हैं।

Shri Tat-twamasy-aadilakshyaa - You are the primordial manifestation of the state of Tattwamasi. Only you can bestow the state of Tattwamasi.

766. **श्री प्रमाण रहिता -** आप की कोई भी तुलना नहीं है।

Shri Pramaana rahitaa - You have no comparison.

767. **श्री द्वंद्वातीता -** आप द्वंद्व के पार हैं। द्वंद्वों का आप पर कुछ भी प्रभाव नहीं होता।

Shri Dwandwaa-teetaa - You are beyond (unaffected by) all dualities.

768. **श्री त्रिगुण रहिता -** आप त्रिगुणविहीन है।

Shri Triguna-rahitaa - You are devoid of the three Gunas.

769. **श्री स्वच्छंदा -** आप केवल परिपूर्ण है और आप के छंद के अनुसार जो चाहे वह कर सकती हैं।

Shri Swachhandaa - You are absolute and can do anything you feel pleased with.

770. **श्री चिद्विलास प्रतीता -** आप वह हैं जिसके चित्त आनंद सर्वत्र प्रकट होता है।

Shri Chid-vilaasa Prateeta - You are the one whose joy of attention is expressed everywhere.

771. **श्री आत्मेच्छया जगत कारिणी -** अपनी स्वयं की इच्छा से आप भुवनों का सृजन करती हैं।

Shri Atmechhayaa-jagat kaarini - You create worlds at your will.

772. **श्री परमेश्वर लीला शक्तिभूता -** आप सर्वशक्तिमान परमेश्वर की दिव्य लीला की शक्ति है।

Shri Parameshwar-leela Shakti bhutaa - You are the power in God Almighty's play of Divine.

773. **श्री सदाशिव इच्छा संयुता -** आप श्रीसदाशिव की इच्छा से एकरूप हैं।

Shri Sadashiva-icchaa-sanyutaa - You are one with the desire of Shri Sadashiva.

774. **श्री सदाशिव-श्वास-युता -** श्रीसदाशिव के श्वास में आप एकरूप हैं।

Shri Sadashiva-shwaasaa-yutaa - You are one with

the breath of Shri Sadashiva.

775. **श्री सदाशिव आनन्ददायिनी परम चैतन्य शक्तिः -** आप श्रीसदाशिव को आनन्द देने वाली परम चैतन्य की शक्ति हैं।

Shri Sadashiva-ananda-daayini Param chaitany shakti - You are the Paramchaitanya Shakti that gives joy to Shri Sadashiva.

776. **श्री सर्वव्यापिनी ईश्वर प्रेम-शक्ति-प्रदायिनी -** ईश्वर के प्रेम की सर्वव्यापी शक्ति आप प्रदान करती हैं।

Shri Sarva-vyaapini Ishwar-premashakti pradaayini - You bestow all pervading power of God's love.

777. **श्री मुमुक्षुत्व दायिनी -** आप संसार के लोगों को साधकपद (मुक्ति की इच्छा) देती हैं।

''सब से पहले श्रीआदिशक्ति ने पश्चिम के लोगों में साधकता जागृत की।'' (श्रीआदिशक्ति पूजा भाषण)

Shri Mumukshatwa daayini - You give seeking to peoples of the world.
"The first of all Adi Shakti awakened seeking in the western people" (Shri Adi Shakti Puja talk)

778. **श्री निरानन्दा -** आप सहजयोगियों को अनुभूति देने वाला शुद्ध आनन्द हैं।

Shri Neera nandaa - You are pure joy which Sahaja Yogis feel.

779. **श्री अमृत वर्षिणी -** आप अमृत की वर्षा करती हैं।

Shri Amruta varshini - You shower ambrosia.

780. **श्री योगेन्द्र-ईड्या -** योगियों के राजा द्वारा आप की पूजा की जाती है।

Shri Yogendra meedyaa - You are worshipped by the lord of Yogis.

781. **श्री गगन-सदृशी -** आप आकाश के समान हैं, शुद्ध पवित्र और असीम।

Shri Gagana sadrushaa - You are like the sky, pure and without any limitaions.

782. **श्री अनन्तकृपा-निधिः -** आप कृपा का अगाध महासागर हैं।

Shri Anant krupaa nidhi- You are the fathomless ocean of grace.

783. **श्री आत्मज्ञान दायिनी -** आप आत्मा का ज्ञान देती हैं अर्थात् आत्मा का ज्ञान और चक्रों का तथा नाड़ियों का ज्ञान।

Shri Atma-jnyaan daayini - You give the knowledge of self i.e the knowledge of spirit and the knowledge of one's Chakras and Nadis.

784. **श्री सामूहिक चेतना विकासिनी -** आप सामूहिक चेतना को उत्क्रान्त करती हैं।

Shri Saamuhik Chetanaa vikaasini - You evolve the collective consciousness.

785. **श्री ज्ञान विज्ञान दायिनी -** आप आध्यात्मिक ज्ञान तथा भौतिक अर्थात् संसार (जगत्) का ज्ञान देती हैं।

Shri Jnyaana-vijnyaana daayini - You give the spiritual knowledge and worldly knowledge.

786. **श्री परा कला दायिनी -** आप परा-कला देने वाली हैं।

Shri Paraa-kalaa dayini - You are the giver of meta arts.

787. **श्री भवरोगि भिषजा -** सांसारिक जीवन के व्याधियों से ग्रस्त रोगियों को आप व्याधिमुक्त करने वाली औषध हैं।

Shri Bhava-rogi-bhishjaa - You are the medicine which cures those afflicted by worldly life.

788. **श्री सहजचिकित्सा-प्रणाली-दायिनी -** आप ने सहजयोग की, रोगमुक्त कर आरोग्यदायिनी पद्धति और चिकित्सा प्रणाली दी हैं।

Shri Sahaja chikitsaa pranaali daayini - You have given the system of Sahaja healing and curative system.

789. **श्री योगक्षेम-दायिनी -** आप योग और क्षेम देती हैं जो हितकारक है वह देती है।

Shri Yoga-kshema daayini - You bestow the Yoga and the Kshema i.e. benevolence.

790. **श्रीयशोदायिनी -** आप यश देती हैं।

Shri Yashodaayini- You bestow success.

791. **श्रीजयदायिनी -** आप विजय देती हैं।

Shri Jaya daayini - You bestow victory.

792. **दुर्भाग्य-निवारिणी -** आप दुर्भाग्य का निवारण करती हैं।

Durbhaagya nivaarini - You take away misfortunes.

793. **वर्णभेद-नाशिनी -** रंग पर आधारित भेद-भाव का आप नाश करती हैं।

Varna-bheda naashini - You are the destroyer of colour based discrimination.

794. **वंश-भेद-नाशिनी -** वंश पर आधारित भेद-भाव तथा पृथकता का आप नाश करती हैं।

Vaunsh-bheda-naashini - You are the destroyer of racial discrimination.

795. **जाति-भेद-नाशिनी -** जाति पर आधारित भेद-भाव का आप नाश करती हैं।

Jaati bheda naashini - You are the destroyer of caste based discrimination .

796. **अगुरु नाशिनी -** आप अगुरु अर्थात् झूठे गुरुओं का नाश करती हैं।

Aguru naashini- You are the destroyer of false gurus.

797. **भ्रष्टाचार निवारिणी -** आप भ्रष्टाचार का नाश करती हैं।

Bhrashtaa-chaar - nivarini - You are the destroyer of corruption.

798. **श्रीगुरु-तत्त्व-जागरिणी -** वह गुरुतत्त्व को जागृत करती हैं।

Shri Guru-tattwa jaagarini - You awaken the Guru principle.

799. **श्रीपाखण्ड नाशिनी -** आप पाखण्ड का नाश करती हैं।

Paakhanda naashini - You are the disroyer of hypocrisy.

800. **श्री सद्गुरु माता -** आप सब गुरुओं की माता हैं।

Shri Sat Guru maataa - You are the Mother of all Gurus.

801. **श्री परम सद्गुरु -** आप सर्वोच्च अर्थात् परम सद्गुरु हैं।

Shri Param-Satguru - You are the Supreme Sat Guru.

802. **श्रीगुरु-पद-दायिनी -** आप सहजयोगियों के पहले उनका स्वयं का गुरु बनाती हैं और बाद में दूसरों का।

Shri Guru Pada daayini - You make Sahaja Yogis Masters of themselves and later of others.

803. **श्रीप्रज्ञान-घन-रुपिणी -** आप ईश्वर के ज्ञान की एकाग्रता तथा साक्षात् मूर्ति हैं। जिसमें आत्मसाक्षात्कार होने पर उत्क्रान्ति होती है। ईश्वर के संबंध में पतंजलि कहते हैं, अन्य लोगों में जो ज्ञान बीज के रूप में होता है, वह ईश्वर में परिपूर्ण रूप में होता है। प्रणव ईश्वर का ही आविर्भाव है।

Shri Prajnyaana-ghana roopini - You are concentrated and personification of Divine knowledge in which one evolves after the enlightenment of spirit. Patanajli says about Ishwara, "Knowledge which exists in the seed form in others is complete in him. His manifestation is Pranava."

804. **श्रीसंसार-सारा -** आप पारिवारिक जीवन का सार हैं। पारिवारिक जीवन का सार परस्पर प्रेम तथा आदर है।

Shri Sansaara-saaraa - You are the essence of family life. The essence of family life is mutual love and respect.

805. **श्रीसंकल्प-दुःख-दलना -** संदेह के कारण जो संभ्रम होता है, उसका आप निरास करती हैं। इच्छा तथा अपेक्षायें पूरी नहीं होने पर जो दुःख होता है, उसे भी आप दूर हटाती हैं।

Shri Sankalpa dukkha dalanaa - You are the remover of confusion due to doubts. You are also the destroyer of sorrow of non-fulfilment of desires and expectations.

806. **श्रीदेहात्म-भाव-निवारिणी -** देह को भूल से सत्य, वास्तविक मानने से देह को ही आत्मा समझना यह जो देह-आत्मा की समानता की गलत धारणा है, उसे आप दूर करती हैं।

Shri Dehaatma-bhaava nivaarini- You take away

identification with body mistaking the body as real.

807. **श्रीजाड्य निवारिणी -** आप जाड्य अर्थात् आलस्य को दूर हटाती हैं।

Jaadya nivaarini - You take away lethargy.

808. **श्रीशास्त्रार्थ-निरूपिणी -** वेद तथा धार्मिक ग्रंथों के वास्तविक अर्थ को आप स्पष्ट करती हैं।

Shri Shaastraartha nirupini - You explain the true meaning of scriptures.

809. **कुसंस्कार-निवारिणी -** आप अशुद्ध संस्कारों का निवारण करती हैं।

Ku-sanskaara-nivaarini - You eradicate impure conditionings.

810. **श्रीसुसंस्कार-कारिणी -** आप पहले अच्छे संस्कारों को ग्रहण करवाती हैं। बाद में आप अपने बच्चों के संस्कारों, उपाधियों के उस पार ले जाती हैं।

Shri Su-saunskaara kaarini - You imbibe first the good conditionings then take your children beyond all conditionings.

811. **श्रीबलप्रदा -** आप बल प्रदान करती हैं।

Shri Balapradaa - You give strength.

812. **श्रीवीरमाता -** आप वीरों की माता हैं।
''मेरे बच्चे वीर और पराक्रमी हैं। उन्हें शूर, अनुकम्पाशील, ऊर्जस्वल होना ही हैं, यह तो कम से कम (आवश्यकता) है।'' (नवरात्रि पूजा)

Shri Veera maataa - You are the mother of the valiant.
"My children are Veeras the chivalrous. They have to be brave, compassionate, dynamic , that is the minimum" (Navaratri Puja)

813. **स्वैराचार-नाशिनी** - आप स्वैर आचरण का नाश करती हैं।

Swairaachaar naashini - You are the destroyer of permissiveness.

814. **कलिकल्मष नाशिनी** - आप कलियुग के पाप, कलंक का नाश करती हैं।

Kali kalmasha naashini - You are the destroyer of blemishes of the Kali Yuga.

815. **श्रीशम-दम-वैराग्य-तितिक्षा-प्रदायिनी** - आप शम, आत्मसंयम, आनसक्ति तथा सहिष्णुता देती हैं।

Shri Shama-dama-vairaagya-titikshaa pradaayini - You bestow contentment, self-restraint, detachment, and patience.

816. **श्रीसंकट-निवारिणी** - आप वह हैं जा संकटों, आपत्तियों का निवारण करती हैं।

Shri Sankat nivaarini - You are the one who wards off calamities.

817. **श्रीमनोऽहंकार-बन्ध-मोचनी** - मन और अहंकार बन्धनों से आप मुक्त करती हैं।

Shri Mano-hankaar-bandha-mochani - You liberate from the bondages of mind and ego.

818. **असत्य-खण्डन-कारिणी** - आप असत्य का विनाश करती हैं।

Asatya-khandanaa-kaarini - You destroy falsehood.

819. **आतंकवाद-नाशिनी** - आप आतंकवाद का नाश करती हैं।

Aatanka-waad-nashini - You are the destroyer of terrorism.

820. **भौतिक-वाद-नाशिनी -** आप भौतिकवाद का नाश करती हैं।

Bhautik-waad-nashini - You are the destroyer of materialism.

821. **श्रीसामर्थ्य-दात्री -** आप 'समर्थ' अर्थात् बलवान तथा स्वयं को आधार देने वाला - इस अवस्था को देने वाली हैं। इस का और भी एक अर्थ है - 'सम' अर्थात् समान, 'अर्थ' अर्थात् समर्थ बनना याने अपने जीवन के उद्देश्य की परिपूर्ति करना।

Shri Saamarthya daatri - You are the bestower of state of being "Samartha" meaning strong and self-supporting. It also means that one becomes "Sama" i.e. equal and "artha" i.e. the meaning i.e. fulfilment of one's life's purpose.

822. **श्रीनिर्मल-अन्तःकरणा -** आप शुद्ध, पवित्र ज्ञान हैं। यह ज्ञान बुद्धि से परे है। आप की कृपा से ध्यान की अवस्था में यह ज्ञान साधक के अंतरतम में जागृत होता है।

Shri Nirmal-antah-karana - You are the purity of inner beings.

823. **श्रीनिर्मल-सच्चिदानंद -** आप निर्मल सत्य, चेतना और परमानंद हैं।

Shri Nirmal-sachchida-ananda- You are pure truth, consciousness and bliss.

824. **श्रीनिर्मल-प्राणा -** आप पवित्र प्राण अर्थात् ईश्वरी चैतन्य की शीतल लहरें हैं।

ShriNirmal-praana - You are the pure Praanas i.e. Divine Cool Breeze.

825. **श्रीनिर्मल-ज्ञान-शक्तिः -** आप शुद्ध ज्ञान हैं। यह ज्ञान बुद्धि से परे है।

आप की कृपा से ध्यान की अवस्था में यह ज्ञान साधक के अंतरतम में जागृत होता है।

Shri Nirmal-jnyaan-shakti - You are the pure knowledge which is beyond one's intellect, and which emerges within a seeker by your grace in the state of meditation.

826. **श्री-निर्मल-इच्छा-शक्ति: -** आप निर्मल इच्छा की शक्ति हैं

Shri Nirmal ichhaa shakti- You are the pure power of desire.

827. **श्रीनिर्मल-कार्य-शक्ति: -** आप अनासक्त कृति की निर्मल शक्ति हैं।

Shri Nirmal kaarya shakti - You are the pure power of detached action.

828. **श्रीनिर्मल-चक्र -** आप निर्मल चक्रों की अवस्था हैं।

Shri Nirmal chakra - You are the state of purified Chakras.

829. **श्रीनिर्मल-तंत्रा -** आप सहजयोग का निर्मल तंत्र हैं।

Shri Nirmal tantra - You are the pure technique of Sahaja Yoga.

830. **श्रीनिर्मल-मंत्रा -** आप निर्मल मंत्र अर्थात् ऐसे मंत्र हैं जिनसे स्पंदनों का नि:सारण होता है।

Shri Nirmal mantra - You are the pure mantras i.e. mantras that emit vibrations.

831. **श्रीनिर्मल-सुज्ञता -** आप निर्मल और परिपूर्ण सुज्ञता हैं।

Shri Nirmal sujnyataa - You are pure and absolute wisdom.

832. **श्रीनिर्मल-निरागसता** - आप निर्मल और परिपूर्ण अबोधिता हैं।

Shri Nirmal Niraagastaa - You are pure and absolute innocence.

833. **श्रीनिर्मल-विद्या** - आप आत्मा का और श्रीआदिशक्ति का निर्मल ज्ञान हैं।

Shri Nirmal vidyaa - You are pure knowledge of spirit and Shri Adi Shakti.

834. **श्रीनिर्मल-सृजनशीलता** - आप निर्मल सृजनशीलता हैं।

Shri Nirmal srujansheeltaa - You are pure creativity.

835. **श्रीनिर्मल-ईश्वरीय-कला** - आप निर्मल कलायें हैं। इन कलाओं को दैवी संयोगिता हैं और उससे स्पन्दन बाहर निकलते हैं।

Shri Nirmal Ishwariya kalaa - You are pure arts that have Divine coefficient and that emit vibrations.

836. **श्रीनिर्मल-ईश्वरीय-संगीत** - आप पवित्र दिव्य संगीत हैं।

Shri Nirmal Ishwariyaa sangeet - You are pure Divine music.

837. **श्रीनिर्मल-सौंदर्य-दृष्टिः** - आप निर्मल सौंदर्य का ज्ञान हैं।

Shri Nirmal saundarya-drushti - You are pure aesthetics.

838. **श्रीनिर्मल-चित्ता** - आप निर्मल चित्त हैं।

Shri Nirmal chitta - You are pure attention.

839. **श्रीनिर्मल-औदार्या** - आप निर्मल उदारता हैं।

Shri Nirmal audaarya - You are pure generosity.

840. **श्रीनिर्मल-सद्-असद्-विवेका** - आप निर्मल सद्-असद्-विवेक (बुद्धि) हैं।

Shri Nirmal sat-asat vivek - You are pure conscience.

841. **श्रीआदर्श-गृहलक्ष्मी:** - आप आदर्श गृहिणी हैं।

Shri Adarsh Griha-Lakshmi - You are ideal house wife.

842. **श्रीनिर्मल-ईश्वरीय-व्यवस्थापना** - आप ईश्वरीय व्यवस्थापना हैं

Shri Nirmal Ishwariya vyavasthaapana - You are Divine management.

843. **श्रीनिर्मल-निर्व्याज-वात्सल्या** - आप अपेक्षारहित निर्मल वत्सलता-प्रेम हैं।

इस प्रकार से समर्पित, अबोध तथा पूर्णतया शक्तिमान बालक (श्रीगणेश) का क्षणमात्र दर्शन भी आदिशक्ति का हृदय अपने बच्चे के लिए प्रेम के मधुर भावों से (वात्सल्य से) भर जाता है। (दी क्रिएशन)

Shri Nirmal nirvaajya vaatsalya- You are pure love, without expectations.

"Even a glimpse of such a dedicated, innocent and absolutely powerful child (Shri Ganesha) fills the heart of Adi Shakti with the sweetest feeling of love for her child (Vaatsalya)". (The Creation)

844. **श्रीनिर्मल-भक्ति:** - आप निर्मल भक्ति हैं।

Shri Nirmal bhakti - You are the pure devotion..

845. **श्रीनिर्मल-ईश्वरीय-चातुर्या** - आप निर्मल ईश्वरी चातुर्य हैं।

Shri Nirmal Ishwariya Chaaturya - You are pure divine diplomacy.

846. **श्रीनिर्मल-सामूहिक-चेतना -** आप निर्मल सामूहिक चेतना हैं।

Shri Nirmal saamuhika chetanaa - You are pure collective consciousness.

847. **श्रीनिर्मल-कार्य-कारणा -** आप किसी भी कार्य का निर्मल कारण हैं।

Shri Nirmal Kaarya Kaaranaa - You are the pure cause of any action.

848. **श्रीनिर्मल-प्रज्ञा -** आत्मा या चैतन्य से आने वाली निर्मल प्रज्ञा आप हैं।

Shri Nirmal prajnyaa - You are the pure talents which emerges from the spirit.

849. **श्रीनिर्मल-प्रेरणा -** आत्मसाक्षात्कार के बाद आने वाली निर्मल प्रेरणा आप हैं।

Shri Nirmal preranaa - You are the pure inspiration, which comes after self- realisation.

850. **श्रीनिर्मल-सौजन्या -** आप निर्मल नम्रता तथा मृदुता हैं।

Shri Nirmal saujanya - You are pure humility and gentleness.

851. **श्रीनिर्मल-ईश्वरीय-संकेता -** आप निर्मल दिव्य अन्तर्ज्ञान हैं।

Shri Nirmal Ishwariya sanketa - You are pure Divine intuition.

852. **श्रीनिर्मल-ईश्वरीय-सारासार-विवेका -** आप निर्मल दिव्य विवेक हैं।

Shri Nirmal Ishwariya saar-asaar viveka - You are pure Divine discretion.

853. **श्रीनिर्मल-विश्व-शांतिः -** आप निर्मल विश्व शान्ति हैं।

Shri Nirmal vishwa Shaantih - You are pure cosmic peace.

854. **श्रीनिर्मल-ईश्वरीय-शक्तिः -** आप निर्मल ईश्वरीय शक्ति हैं।

Shri Nirmal Ishwariya Shakti - You are pure Divine powers.

855. **श्रीनिर्मल-ईश्वरीय-न्याय -** आप निर्मल ईश्वरीय न्याय हैं।

Shri Nirmal Ishwariya Nyaaya - You are pure Divine justice.

856. **श्रीसर्व-क्षमा-तत्व -** सब को क्षमा करने के लिये आप आदि क्षमा तत्व हैं।

Shri Sarva-kshamaa-tattwa - You are primordial principle of forgiveness to all.

857. **श्रीसर्वव्यापि-निर्मल-चित्ता -** आप सर्वव्यापी निर्मल चित्त हैं।

Shri Sarvavyapi-Nirmal-chitta - You are ever present as all pervading pure attention.

858. **श्रीचित्त-निर्मल-कारिणी -** आप चित्त को निर्मल करती हैं।

Shri Chitta nirmal kaarnini - You purify the attention.

859. **श्रीचित्त-स्थिर-कारिणी -** आप चित्त को स्थिर करती हैं।

Shri Chitta sthir kaarini - You stabilise the attention.

860. **श्रीसर्वमर्यादा-स्थापिनी -** आप मर्यादायें स्थापित की हैं।

Shri Sarva maryaadaa sthaapini - You have laid down the Maryadas, limits.

861. **श्रीचरणामृतदायिनी -** जिस जल से आपके चरणकमल धोये गये हैं वह अमृत आप देती हैं।

Shri Charana-amruta daayini - You give the ambrosia of water which has washed your lotus feet.

862. **श्रीदेवत्व-दायिनी -** आप ने सहजयोगियों को देवों की प्रतिष्ठा दी हैं।

''सोमरस ही चरणामृत हैं, जो जल माता के चरणों को धोता है। उसे पीने की अनुज्ञा केवल आप ही को है, केवल देवों को! आप उसी श्रेणी में बैठे हैं। तो आप माँग कैसी कर सकते हो?

Shri Devatwa daayini - You have bestowed the status of Gods on Sahaja Yogis.

"The Somaras, which is the Charanamruta the water that washes the Mother, only you are allowed to drink, only the Devas. You are sitting in that category and how can you be demanding?"

863. **श्रीसत्यविष्कार-प्रसादा -** सत्य का आविष्कार ही आप का प्रसाद है।

Shri Satya-avishkaar-prasaadini - Your Prasad (grace) is revealation of truth.

864. **श्रीविश्व-विनाश-निवारिणी -** विराट का सहस्रार खोल कर आपने विश्व के विनाश का निवारण किया है।

Shri Vishwa-vinaash-nivaarini - You averted dooms day by opening the Virata's Sahasrara.

865. **श्रीविश्व-शुभ-भाग्य-प्रदायिनी -** आप ने संसार को शुभ भाग्य प्रदान किया है।

Shri Vishwa-shubha-bhaagya pradaayini- You have bestowed auspicious destiny to the world.

866. **श्रीविश्व-निर्मल-धर्म-सूर्य-रश्मिः** - आप विश्व-निर्मल-धर्म सूर्य के उदय की रश्मि हैं।

Shri Vishwa Nirmal Dharma Surya Rashmih - You are the ray of the Sun rise of the Vishwa Nirmal Dharma.

867. **श्रीभूमि-रक्षिका -** आप धरतीमाता की प्रदूषण से रक्षा करती हैं।

Shri Bhoomi rakshika - You are the protector of the mother earth from pollution.

868. **श्रीकार्यकारणातीता -** आप कारण-कार्य के परे हैं।

Shri Kaarya kaaranaa teetaa - You are beyond cause and effect.

869. **श्रीसर्व-शुभ-कार्य-प्रवर्तिनी -** आप शुभ कार्यों का प्रवर्तन करती हैं।

Shri Sarva shubha kaarya pravartini - You promote all auspicious actions.

870. **श्रीमनोन्मनी-स्थिति-दायिनी -** आप तुर्या अवस्था प्रदान करती हैं जो अवकाश, काल और व्यक्ति वस्तु संबंध के बोध या संवेदना से परे हैं।

Shri Manonmani sthiti daayini - You bestow the Turya state which is above the sense of space, time and subject -object relationship.

871. **श्रीधृतिः -** आप धैर्य हैं।

Shri Dhrutih - You are courage.

872. **श्रीमनस्विनी -** आप मन पर नियंत्रण करती हैं।

Shri Manaswini - You control the Manas.

873. **श्रीकैवल्य-ज्ञान-लक्षिता -** आत्मा की कैवल्य स्थिति प्राप्त

करने के लिये आपका ध्यान किया जाता है।

Shri Kaivalya-gyaana lakshitaa - You are meditated upon for attaining the Kaivalya the state of Spirit.

874. **श्रीमानव-आंतरिक-सौंदर्य-वर्धिनी -** आप मनुष्यों के आंतरिक सौंदर्य की वृद्धि करती हैं।

Shri Maanava-antarik saundarya vardhini - You enhance the inner beauty of human beings.

875. **श्रीजगत्सुंदर-कारिणी -** आपने जगत् को सुन्दर बनाया हैं। लोगों को उनके हृदय में प्रेम मिलेगा और हम प्रेम, आनन्द और आध्यात्मिकता का एक नया जगत् स्थापित करेंगे। (क्रिसमस पूजा भाषण, गणपतिपुले, २५.१२.१९९५)

Shri Jagat-sundar kaarini - You have made the world beautiful. "The people will find love in their hearts and we shall establish a new world of love, joy and spirituality" (Christmas Puja talk Ganapati Pule 25.12.1995)

876. **श्रीसर्वेश्वरस्य शान्ति-धारिणी -** आप सर्वशक्तिमान् परमात्मा की शान्ति धारण करती हैं।

Shri Sarveshwarasya shaanti dhaarini - You sustain the peace of God Almighty.

877. **श्रीईश्वरीय-जगत्-उत्क्रान्त-जगत्कारिणी -** आप ईश्वर का जगत् तथा उत्क्रान्त होने वाले जगत् का निर्माण करने वाली हैं।

Shri Ishwariya jagat evam utkraant jagat kaarini - You are the creator of Divine as well as the evolving worlds.

878. **श्रीअविश्रान्त-कार्यरता -** आप विश्राम न लेते हुए कार्य करती हैं।

Shri Avishraant kaarya-rataa - You work without taking rest.

879. **श्रीनवयेरुसलमेश्वरी -** आप नये येरूसलम की देवी हैं।

Shri Nava-yerusalameshwari - You are the Goddess of New Jeruslem.

880. **श्रीसर्व-दैवी-शक्ति-परिसेविता -** सब दैवी शक्तियाँ आप की सेवा करती हैं।

Shri Sarva daivi shakti parisevitaa - You are served by all Divine powers.

881. **श्रीपरम-चैतन्य-स्वरूपा -** आप परम चैतन्य का रूप हैं।

Shri Param Chaitanya swaroopaa - You are of the form of Param Chaitanya.

882. **श्रीपरम-चैतन्य-वर्षिणी -** आप परम चैतन्य की वर्षा करती हैं।

Shri Param Chaitanya varshini - You shower the Param Chaitanya.

883. **श्रीऋतम्भरा-प्रज्ञा-प्रदायिनी -** आप ऋतंभरा प्रज्ञा प्रदान करती हैं।

Shri Rutambharaa prajnyaa pradaayini - You are the giver of Rutambharaa Prajnyaa.

884. **श्रीजीवित-कार्य-शक्ति-दायिनी -** जीवित कार्य करने के लिये आप शक्ति देती हैं।

Shri Jeevit kaarya Shakti daayini - You give the power for living work.

885. **श्रीभूमिस्थ-कुण्डलिनी-शक्तिः -** धरती माता में निवास करने वाली कुण्डलिनी शक्ति आप हैं।

Shri Bhoomistha Kundalini Shakti - You are the Kundalini Shakti residing in the mother earth.

886. **श्रीसर्वसाक्षिणी -** आप सब की साक्षिणी हैं।

Shri Sarvasaakshini - You are witness to all.

887. **श्रीदण्ड-नीतिस्था -** आप विधि (Law) की वह शक्ति हैं जिससे नैतिक वर्तन प्रवर्तित होता है।

Shri Danda neetisthaa - You are the power in the laws that promote moral conduct.

888. **श्री सर्वशासिनी -** आप सब पर शासन करती हैं।

Shri Sarva shaasini - You are the ruler of all.

889. **श्रीनियन्त्री -** आप सब देवता, गण, देवदूतों को उन के अपने अपने काम पर नियुक्त करती हैं।

Shri Niyantri - You appoint all Deities, Ganas, angels for their respective duties.

890. **श्रीअपराजिता -** आप सदैव विजयी होतीहैं। श्रीमाताजी ने जिस उद्देश्य से अवतार लिया वह जीवित-कार्य उन्होंने पूर्णतया सम्पन्न किया।

Shri Aparaajitaa - You are ever victorious. Shri Mataji has accomplished the mission for which she has incarnated.

891. **श्रीअनियमा -** आप सब नियमों से परे हैं क्योंकि आप हर चीज़ पर नियंत्रण रखती हैं।

Shri Aniyma - You are above all laws as you control every thing.

892. **श्रीअयमा -** आप वह हैं जिन पर यमराज-मृत्यु की देवता का कोई वश नहीं हैं।

Shri Ayamaa - You are the one on whom Yama, God of death has no control.

893. **श्रीसत्य-धर्म-परायणा -** आप सत्य और सदाचरण में विद्यमान हैं और धर्मनिष्ठ जीवन शैली का प्रवर्तन करती हैं।

Shri Satya-dharma-paraayanaa - You are present in the truth and righteousness and promote the way of life abiding by Dharma.

894. **श्रीउत्तारणा -** आप मनुष्यों को माया के सागर के पार ले जाती हैं।

Shri Uttaranaa - You take human beings across the ocean of illusion.

895. **श्रीअक्षोभ्या -** आप क्षुब्ध नहीं होती।

Shri Akshobhyaa - You are unperturbed.

896. **श्रीपूतात्मा -** आप पवित्र शुद्ध हैं और प्रत्येक वस्तु का सत्त्व सार हैं।

Shri Pootaatmaa - You are pure and the essence of every thing.

897. **श्रीआनन्द-श्रवण-कीर्तना -** आप वह हैं जिनको सुनना और जिनकी स्तुति गाना आनन्दपूर्ण हैं।

Shri Aananda-shravana keertanaa - You are the one listening to whom and singing whose praise is joyful.

898. **श्रीशुचिः -** आप शुचिता की मूर्ति है और जो आप की अर्चना तथा स्तुति करते हैं उनको आप शुद्ध पवित्र करती हैं।

Shri Shuchi - You are purity personified and you purify those who adore and praise you.

899. **श्रीमुक्तानां परमा गतिः -** मुक्त आत्माओं के द्वारा प्राप्त की गयी सर्वोच्च अवस्था आप हैं।

Shri Muktaa-naam paramaa gati - You are the highest state attained by liberated souls.

900. **श्रीऊर्जिता** - आप के पास अनंत ऊर्जा हैं।

Shri Urjitaa - You have infinite strength.

901. **श्रीसर्वा** - आप सर्व अस्तित्व का सर्वज्ञ उद्‌गम हैं।

Shri Sarvaa - You are the omniscient source of all existence.

902. **श्रीस्वयम्भूः** - आप बिना कोई कारण के, स्वयं ही अस्तित्व में हैं।

Shri Swayambhooh - You exist by yourself, uncaused.

903. **श्रीगर्भित-शास्त्रार्थ-निरुपिणी** - आप वेद तथा धर्मग्रंथों के सूक्ष्म अर्थों का विवरण तथा स्पष्टीकरण देती हैं।

Shri Garbhit shaastraartha nirupani - You reveal and explain the subtle meanings of scriptures.

904. **असत्य-प्रकाशिनी** - आप असत्य का आच्छादन निकाल कर उसका असली रूप बताती हैं।

Asatya prakaashini - You expose falsehood.

905. **श्रीमधुरामृत-वर्षिणी** - आप अमृत के मधुर सत्त्व की वर्षा करती हैं।

Shri Madhura-amruta-varshini - You shower the sweet essence of nectar.

906. **श्रीसमीरणा** - सब सजीव प्राणियों का कार्यनिर्वाह करने वाला श्वास आपका रूप हैं।

Shri Sameeranaa - You are of the form of the breath which keeps all living beings functioning.

907. **श्रीसर्वतश्चक्षुः** - आप शुद्ध अन्तश्चेतना, अन्तर्बोध होने के कारण सब दिशाओं में सब कुछ देख सकती हैं।

Shri Sarvatas-chakshuh - You can see everything in

all directions, being pure consciouness.

908. **श्रीपरम-भूषणा** - भिन्न-भिन्न अवतरण लेने के कारण आपने धरती को सुशोभित किया है।

Shri Param-bhushanaa - You have adorned the earth by taking various incarnations.

909. **श्रीप्रीति-वर्धिनी** - आप मानवों में परस्पर प्रेम बढ़ाती हैं।

Shri Preeti-vardhinai - You enhance mutual love among human beings.

910. **श्रीसदामर्षिणी** - आप सज्जनों के लिये सहिष्णु तथा धीरज रखने वाली हैं।

Shri Sadamarshini - You are patient towards good persons.

911. **श्रीस्वस्ति** - आपके शुभ एवं पवित्र रूप का विशेष परमानंद हैं।

Shri Swasti - Your auspicious form is characterised by Supreme Bliss.

912. **श्रीस्वस्ति-दक्षिणा** - शुभ तथा पवित्रता के रूप में आप की वृद्धि होती है।

Shri Swasti-dakshinaa - You are the one who augments as Swasti (auspiciousness).

913. **श्रीशब्दातिगा** - आप वह हैं जिनका निदर्शन किसी भी ध्वनि से या शब्द से नहीं किया जा सकता।

Shri Shabdaatigaah - You are the one who cannot be denoted by any sound or word.

914. **श्रीप्रजागरा** - आप शाश्वत चेतना से युक्त हैं।

Shri Prajaagaraa - You are the one with eternal awareness.

915. **श्रीसनातनतमा -** सृष्टि को अस्तित्व में आने के लिये आप नित्य कारण हैं।

Shri Sanaatan-tamaa - You are eternal cause of creation to come into existence.

916. **श्रीक्षमिणां वरा -** क्षमा करने वाले लोगों मेंआप सर्वश्रेष्ठ हैं।

Shri Kshaminaam varaa - You are the most superior among those who forgive.

917. **श्रीविश्वदक्षिणा -** आप सभी बातों में व्युत्पन्न-निष्णात हैं।

Shri Vishwa-dakshinaa - You are the one who is proficient in every thing.

918. **श्रीसत्यसंकल्पा -** आप वह हैं जिनका संकल्प अर्थात् निश्चय सत्य हो जाता है। (छान्दोग्य उपनिषद्)

Shri Satya sankalpaa - You are the one whose sankalpa i.e. resolve comes true. (Chhandogya Upanishad).

919. **श्रीगभीरा -** आप वह हैं जिनके प्रचुर ऐश्वर्य हैं।

Shri Gabhiraa - You are the one who has profound majesty.

920. **श्रीपुष्कराक्षी -** हृदय के कमल में जब आप पर ध्यान किया जाता है, तब आप चेतना के प्रकाश के रूप में चमकती हैं। (विष्णुसहस्रनाम पर आदिशंकराचार्य) आपके कमल के समान नेत्र है।

Shri Pushkara-akshee - You shine as the light of consciousness when meditated upon in the lotus of heart. (Adi Shankaraachaarya's comments on the Vishnu Saharanaam). Also, the one whose eyes resemble Pushkar meaning a lotus.

921. **श्रीवृषप्रिया -** आप वह हैं जिन्हें वृष अर्थात् धर्म प्रिय हैं।

Shri Vrushapriyaa - You are the one to whom Vrusha i.e. Dharma is dear.

922. **श्रीप्रवरा -** आप सर्वोत्तम से भी परे (उत्तम) हैं।

Shri Pravaraa - You are par excellence.

923. **श्रीवरारोहा -** जिनका पूजन किया जाता हैं उनमें आप सबसे उच्चतम हैं।

Shri Varaa-rohaa - You are the highest among those who are worshipped.

924. **श्रीसर्वविख्याता -** जो प्रत्येक वस्तु अस्तित्व में है उनका सत्त्व या सार के रूप में आप प्रसिद्ध हैं।

Shri Sarva vikhyaataa - You are renowned as the essence of every thing which exists.

925. **श्रीअनघा -** आप पापरहित हैं।

Shri Anaghaa - You are sinless.

926. **श्रीस्वयं-श्रेष्ठा -** आप सहज स्वभाव से परिपूर्ण हैं।

Shri Swayam Sreshthaa - You are innately perfect.

927. **श्रीविनता -** आप विनम्र, विनयशील हैं।

Shri Vinataa - You are modest.

928. **श्रीहरिकेशा -** आप संसार की ज्ञानी हैं और वह शक्ति हैं जो भौतिक जगत् का ज्ञान का संवेदनाओं (ज्ञानेंद्रियों) द्वारा बोध दिलाती हैं।

Shri Harikeshaa - You are the cogniser of the world and the power which enables perceiving the mundane

world through cognitive senses.

929. **श्रीकर्मकलावित्** - किसी भी कृति के लिये उचित समय आप जानती हैं।

Shri Karma kalaa-vit - You know the proper time for any action.

930. **श्रीशुद्ध-कामदा** - आप वह हैं जो शुद्ध इच्छा पूरी करती है।

Shri Shuddha kaamadaa - You are the one who grants pure desire.

931. **श्रीअध्यात्मानुगता** - आप आत्मज्ञान का अनुसरण करती हैं। आत्मा के ज्ञान के पश्चात् ही ईश्वर का साक्षात्कार होता हैं।

Shri Adhyaatmaa-nugataa - You are the follower of self knowledge. God realisation is possible only after knowing the spirit.

932. **श्रीपवित्र-मंत्र-कारिणी** - आप पवित्र मंत्रों को बनाती हैं।

Shri Pavitra Mantra-kaarini - You are the maker of holy mantras.

933. **श्रीनित्य-वर्चस्विनी** - आप सदैव शक्तिशाली हैं।

Shri Nitya-varchaswini - You are ever energetic.

934. **श्रीअजिता** - आप अजेय हैं।

Shri Ajitaa - You are invincible.

935. **श्रीकाल-पूजिता** - आप की पूजा काल अर्थात् मृत्युद्वारा की जाती हैं।

Shri Kaala-pujitaa - You are worshipped by the Kaala, i.e.death.

936. **श्रीगुणौषधिः** - आप सद्गुणों का पोषण करती हैं।

Shri Gunaushadhi - You are nurturer of virtues.

937. **श्रीगुह्यतमा** - आप सूक्ष्मतम हैं।

Shri Guhyatamaa - You are most subtle.

938. **श्रीअमोघार्था** - आप से की गयी प्रार्थनायें सदैव सफल होती हैं।

Shri Amoghaarthaa - Prayers to you are ever fruitful.

939. **श्रीनित्यम् आत्मज्ञ-सहाया** - आप वह हैं जो साक्षात्कारी आत्माओं को नित्य सहायता करती हैं।

Shri Nityam atmajnya-sahaayaa - You are the one who is eternal help to realised souls.

940. **श्रीसुयुक्ता** - आप सदैव दक्ष, सावधान रहती हैं।

Shri Suyuktaa - You are ever attentive.

941. **श्रीसर्व-पावना** - आप सभी को शुद्ध, पवित्र करती हैं।

Shri Sarva-paavanaa - You purify all.

942. **श्रीभूत-भावना** - सजीव प्राणियों के कल्याण की निर्मात्री आप हैं।

Shri Bhoota-bhaavanaa - You are the creator of the welfare of living beings.

943. **श्रीशत्रु-प्रमाथिनी** - आप शत्रुओं का दमन करती हैं।

Shri Shatru pramithini - You are the suppressor of enemies.

944. **श्रीसर्वाचार्या** - आप सभी की महान् आचार्या हैं।

Shri Sarvaa-chaaryaa - You are the great preceptor

to all.

945. **श्रीसमाना -** आप समवृत्ति, समचित्त हैं।

गीता में वर्णित आत्मा की एक विशेषता यह है, 'सर्वत्र सम तिष्ठति।' अर्थात् वह सर्वत्र समरूप में हैं। इससे प्रत्येक वस्तु सन्तुलित की जाती हैं।

Shri Samaanaa - You are equal everywhere.
One of the attributes of Spirit as described in the Geeta is "Sarvatra sama tishthati, meaning, it exists equally everywhere", whereby every thing is balanced.

946. **श्रीआत्म-प्रसन्ना -** आप वह है जो अपने अन्तरतम् में परमानंदमय हैं।

Shri Atma prasanna - You are the one who is blissful within herself.

947. **श्रीनर-नारायण-प्रिया -** आप नर अर्थात् मानव और नारायण अर्थात् ईश्वर की प्रिय हैं।

Shri Nara Narayana priyaa - You are the beloved of the Nara i.e. human being and Narayana i.e. God.

948. **श्रीरसज्ञा -** आप वह हैं जिन्हें नौ रसों का (शृंगार, वीर, करुण, रौद्र, बीभत्स, अद्भुत, भयानक, हास्य, शान्त) ज्ञान हैं।

Shri Rasajnyaa - You are the one who knows the nine aesthetic moods.

949. **श्रीचिरन्तना -** आप चिरन्तन (शाश्वत) हैं।

Shri Chirantanaa - You are eternal.

950. **श्रीनवात्मा -** आप आत्मा होने से चिर तरूण हैं।

Shri Navaatmaa - You are ever youthful being Spirit.

951. **श्रीविश्वंभरेश्वरी -** विश्व के परम स्वामी विश्वंभरेश्वर की आप शक्ति हैं।

Shri Vishwam-bhareshwari - You are the power of Vishwambhareshwara, the supreme lord of the universe.

952. **श्रीभव-संताप-नाशिनी -** आप सांसारिक जीवन की पीड़ाओं को नष्ट करती हैं।

Shri Bhava-santaapa-naashini - You destroy troubles of worldly life.

953. **श्रीत्याग-कारणा -** आप वह हैं जो त्याग का कारण हैं।

Shri Tyaaga kaaranaa - You are the one who is the cause of renunciation.

954. **श्रीत्यागात्मा -** आप वह हैं जो त्याग का सत्त्वांश हैं।

Shri Tyaaga-atma - You are the one who is the essence of renunciation.

955. **श्रीअक्षरमुक्ता -** आप प्रत्येक वस्तु के अन्दर गहन में आत्मा के रूप में निवास करती हैं, पर आप मुक्त भी हैं।

Shri Akshara muktaa - You reside deep within every thing as Spirit but are also liberated.

956. **श्रीदेवानां परमागतिः -** देवों की उत्क्रान्ति की अवस्था आप हैं।

Shri Devaanaam paramaagatih - You are the highest state of evolution of Gods.

957. **श्रीत्यागार्थ-संपन्ना -** आप वह हैं जो सच्चे त्याग में परिपूर्ण हैं।

Shri Tyaagaartha sampannaa - You are the one who is perfect in the true renunciation.

958. **श्रीजीव-संजीवनी -** आप जीव को जीवन (संजीवनी) देती हैं।

Shri Jeeva sanjeevani - You are the one who gives life to a soul.

959. **श्रीअमरार्चिता -** अमर लोगों (देवों) द्वारा आपका पूजन किया जाता है।

Shri Amara-architaa - You are worshipped by immortals. ie.Gods.

960. **श्रीविशुद्धोत्तम-गौरवा -** आप वह हैं, जो विशुद्धता की सर्वोच्च अवस्था के लिये गौरव हैं।

Shri Vishuddhottma gauravaa - You are the one who is honoured for the highest state of purity.

961. **श्रीनित्य-बोधा -** आप वह हैं जो शाश्वत प्रबुद्धता की स्थिति हैं।

Shri Nitya bodhaa - You are the one who is the state of eternal enlightenment.

962. **श्रीअन्तःपूर्णा -** आप अन्दर से परिपूर्ण हैं।

Shri Antah-poornaa - You are complete within.

963. **श्रीबहिःपूर्णा -** आप बाहर में भी परिपूर्ण हैं अर्थात् सर्वव्यापी।

Shri Bahirpoornaa - You are complete without, meaning all pervadfing.

964. **श्रीपरमार्थ-दर्शिनी -** आप परम को प्रकट करती हैं। और फिर ईश्वर-साक्षात्कार का मार्ग भी आप दिखाती हैं।

Shri Paramaartha-darshini - You manifest the Param. Also, you show the path to God realisation.

965. **श्रीअनन्त-गुण-सम्पन्ना -** आप वह हैं जो अनन्त सद्गुणों से समृद्ध हैं।

Shri Anant guna sampanna - You are the one who is rich with unending virtues.

966. **श्रीगुणगर्भा-** आप सद्गुणों में समाई हुई हैं।

Shri Guna garbhaa - You are the one who is embodied in virtues.

967. **श्रीबोधात्मा -** आप बोध का सार हैं।

Shri Bodhatma - You are the essence of enlightenment.

968. **श्रीबोध-समाश्रया -** आप बोध का आश्रय हैं, एवं आप बोध का मूल स्रोत भी हैं।

Shri Bodh samaashrayaa - You are the shelter to enlightenment, hence the source of enlightenment.

969. **श्रीअव्यक्त-समाश्रया -** आप अव्यक्त का आश्रय हैं अर्थात् जब आप प्रसन्न होती हैं तब आप साधक को अव्यक्त की अनुभूति से आशीवादित करती हैं।

Shri Avyakta samaashrayaa - You are the shelter to the unmanifest, meaning, when pleased you bless a seeker with an experience of the unmanifest.

970. **श्रीगुणदोष-निवारिणी -** आप साधक को सद्गुण और दुर्गुणों से परे ले जाती हैं।

Shri Guna-dosh nivarini - You take a seeker beyond virtues and vices.

971. **श्रीब्रह्मविद्या-प्रकाशिनी -** आप ने सर्व शक्तिमान् परमात्मा का दिव्य ज्ञान सब के लिये प्रकट किया है।

Shri Brahma-vidyaa prakaashini - You have opened the Divine knowledge of God Almighty, for all.

972. **श्री अप्रौढा -** आप वह हैं जो कभी भी वृद्ध नहीं हो सकती।

Shri Apraudhhaa - You are the one who can never be old.

973. **श्री प्रौढा -** आप सब से वृद्ध स्त्री हैं क्योंकि सृजन (सृष्टि) से पहले ही आप परमेश्वर के साथ में थी। 'मैं हजारों वर्षों की सब से वृद्ध स्त्री हूँ।' (संदर्भ-प्रश्नोत्तर सत्र की स्मरणिका में ७० के दशक में प्रकाशित प्रतिलिपि-लाईफ इटर्नल ट्रस्ट) 'अब मैंने सुना है पूना में कम लोग ध्यान के लिये आ रहे हैं क्योंकि महाभारत (महाभारत महाकाव्य पर आधारित मालिका) दूरदर्शन पर प्रारंभ हो गयी है। एक जो मैंने (महाभारत उस काल में प्रत्यनक्ष) देखा वह पर्याप्त है। और उसे देखने का उपयोग भी क्या है?' (नवरात्रि पूजा, हिंदी, १६ अक्टूबर १९८८)

Shri Praudhaa - You are the oldest woman, being the companion of Parameshwara before the creation. "I am the oldest woman of thousands of years" (Ref. Transcript of question answer session printed in a souvenir published by The Life Eternal Trust in the seventies.) "Now I have heard that in Poona less people are coming for meditation because Mahabharat (serial based on the epic Mahabharata) has started on TV. Now I have not seen this Mahabharata till now. One I have seen is enough and what is the use of seeing it" (Navaratri Puja (Hindi) 16 Oct 88)

974. **श्रीवृद्धमाता -** आप सृष्टि की सबसे वृद्ध माता हैं।

Shri Vruddha-maataa - You are the oldest mother of the creation.

975. **श्रीऋक-साम-अथर्व-निलया -** आप वेदों में हैं।

Shri Ruk-saam-atharva-nilayaa - You are in the Vedas.

976. **श्रीचित्तेश्वरी -** आप चित्त की देवता हैं।

Shri Chitteshwari - You are the Goddess of attention.

977. **श्रीविगत-ज्वरा -** आप वह हैं जो ज्वर को दूर हटाती हैं।

Shri Vigatjwaraa - You are the one who takes away fever.

978. **श्रीसामान्यस्य-असामान्यत्व-जागरिणी -** आप सामान्य व्यक्ति के असामान्यता को जागृत करती हैं।

Shri Saamaanyasya asamanyatwa jagarini - You awaken the extraordinary of the ordinary person.

979. **श्रीक्षिप्र-प्रसादा -** आप शीघ्रता से प्रसन्न होती हैं।

Shri Kshipra-prasaadaa - You are the one who is easily pleased.

980. **श्रीचतुःषष्टि-कला-मयी -** आप वह हैं जो चौंसठ (६४) कलाओं में विराजमान हैं।

Shri Chatush-shashti-kalaamayi - You are the one who is in the sixty-four arts.

981. **श्रीकला-प्रावीण्य-दायिनी -** आप वह हैं जो कला में निपुणता प्रदान करती हैं।

Shri Kalaa-praavinya-daayini - You are the one who bestows proficiency in arts.

982. **श्रीसर्वभावना -** आप सब का आविष्कार व धारणा करती हैं।

Shri Sarva-bhaavanaa - You are the one who manifests and sustains all.

983. **श्रीअभिवाद्या -** आप वह हैं जिन्हें आदरपूर्वक प्रणाम किया जाता है।

Shri Abhivaadyaa - You are the one who is reverentially offered obeisance.

984. **श्रीआदि-कर्ती-** आप वह हैं जिन्होंने श्रीगणेश का सृजन किया। श्रीगणेश आदि अर्थात् विश्व का प्रथम सृजन है।

Shri Aadi-karti - You are the one who is the creator of Shri Ganesha the "Adi"the first creation in the universe.

985. **श्रीआदिधर्ती -** आप वह हैं जो विश्व का आदि आधार हैं।

Shri Aadi dharti - You are the one who is the primordial support of the universe.

986. **श्रीदीन-साधकाधि -** आप वह हैं जिनकी कृपा अतिक्षुद्र का रूपान्तरण महान में करती हैं।

Shri Deena-saadhakadhi - You are the one whose grace transforms the insignificant into the great.

987. **श्रीयोज्या -** आप वह हैं जिनसे योग घटित होना चाहिये।

Shri Yojya - You are the one who is to be in unison with.

988. **श्रीमहीचारी -** आप वह हैं जो पृथ्वी पर यात्रा करती हैं।

Shri Mahichaari - You are the one who travels on the earth.

989. **श्रीसर्वकालप्रसन्ना -** आप वह हैं जो सदैव प्रसन्न वृत्ति में होती हैं।

Shri Sarvakaal-prasannaa - You are the one who is always in the pleasant mood.

990. **श्रीशत्रु-चमू-स्तंभना -** आप शत्रु के सैन्य को स्तंभित कर देती हैं।

Shri Shatru chamu stambhanaana - You are the stupifier of the enemy forces.

991. **श्रीदंभ-दर्प-मद-हारिणी -** आप दंभ, गर्व और मद का नाश करती है।

Shri Dambha darpa mada haarini - You are the

destroyer of hypocrisy, and pride.

992. **श्रीगंभीरा -** आप वह हैं जिनके शब्द गंभीरता से आचरण में लाना चाहिये।

Shri Gambhiraa - You the one whose words should never be taken lightly.

993. **श्रीश्रेयस्करी -** जो कुछ शुभ और सर्वोत्कृष्ट हैं उस सब को आप प्रदान करती हैं।

Shri Shreyaskari - You are the bestower of all that is auspicious and most excellent.

994. **श्रीगुणांतका -** आप वह हैं जो गुणों से परे हैं और साधक को भी गुणविशेषों के पार ले जाती हैं।

Shri Gunaantakaa - You are the one who is beyond the Gunas (attributes) and takes a seeker beyond the Gunas.

995. **श्रीअनन्त-विक्रमा -** आप अनन्त पराक्रम करती हैं।

Shri Ananta-vikramaa - You are the one of unending valour.

996. **श्रीमहानुभाव-भाविता -** आप वह हैं जिनके पास महान शक्ति और अधिकार हैं और आप वह दूसरों को प्रदान करती हैं।

Shri Maha-anubhaav-bhaavitaa - You are the one who has great power and authority and bestows it on others.

997. **श्रीप्रभूता -** आप वह है जो महान हैं क्योंकि आप के सर्वज्ञता, सर्वशक्तिसंपन्नता इ.अलौकिक गुण हैं।

Shri Prabhoota - You are the one who is great because of unique qualities of omniscience, omnipotence etc.

998. **श्रीसर्व-प्रत्यया** - आप वह है जिसकी प्रचीति प्रत्येक वस्तु में होती है।

Shri Sarva-pratyayaa - You are the one who is felt in every thing.

999. **श्रीसर्वनिर्णया** - आप वह है जो सब का ईश्वरदत्त अंतिम निर्णय है।

Shri Sarva nirnayaa - You are the last judgement of all.

1000. **श्रीएकाकिनी** - आप वह है जो सबसे ऊपर, परे और उत्कृष्ट होने से एकाकिनी है।

Shri Ekaakini - You are the one who is alone transcending every thing.

1001. **श्रीशंकरात्मा** - आप वह है जो पवित्रता, मंगलता तथा समृद्धि का सत्त्व है और वह है जो श्रीशिव की आत्मा हैं।

Shri Shankaraatmaa - You are the essence of auspiciousness and prosperity and also the one who is Shri Shiva's spirit.

1002. **श्रीहनुमत्सेविता** - आप वह है जिस की श्री हनुमान् द्वारा सेवा की जाती है।

Shri Hanumat sevitaa - You are the one who is served by Shri Hanumaana.

1003. **श्रीभोगज्ञान प्रकाशिनी** - आपने भौतिक संसार के ज्ञान को प्रकाशित किया है।

उन्होंने पराविज्ञान को प्रकटित कर के उसका विवरण किया है और लोगों द्वारा बनायी गयी चीज़ों की सुंदरता की अनुभूत से निर्विचार बोध अवस्था में कैसा आनन्द लेना है, इसका भी उपदेश किया है। १९९१ में शिवरात्रि पूजा (दिल्ली) भाषण में उन्होंने उपदेश

(सूचि) किया है कि ''चित्त को चैतन्य में लीन करना चाहिये। हमने सुन्दर वस्तुओं की इच्छा करनी चाहिये, जो हमारी भौतिक इच्छाओं को सौंदर्याभूति में परिवर्तित करती हैं। अपनी अपनी इच्छाओं को चैतन्य लहरों में विलीन करना है। तब थोडे समय के बाद आप केवल चैतन्य लहरी की ही इच्छा करते हैं, और कुछ नहीं। आपने ऐसी कोई भी चीज़ नहीं खरीदनी है जिसमें चैतन्य नहीं है। सारी इच्छाओं का अन्त चैतन्य में ही होता है।''

Shri Bhoga jnyaana prakaashini - You have enlightened the knowledge of material world.

She has revealed the meta science and advised us to enjoy the aesthetics of artefacts in thoughtless awareness. In the Shivaratri Puja talk of 1991 (Delhi) she has advised that Chitta (attention) should be dissolved into Chaitanya (consciousness). In the subsequent Shiva, Puja at Rome, She has advised " We should desire beautiful things which shift our material desires into aesthetics. You have to dissolve your desires into vibrations. You start desiring nothing but vibrations, after some time. You will not buy anything that does not have vibrations. All desires end up into Chaitanya."

1004. **श्रीसमुपदेशिका -** आप समुपदेशिका अर्थात् उचित सलाह देने वाली है।

Shri Samupadeshikaa - You are the counsellor.

1005. **श्रीविरक्ति-भक्ति-पुण्यदा -** आप वह है जो वैराग्य, भक्ति और पुण्य देती हैं।

Shri Virakti bhakti punyadaa - You are the one who bestows detachment, devotion and the punya (merits).

1006. **श्रीवेद-पुराण-वर्णिता -** आप वह है जिनका वर्णन वेद और

पुराणों द्वारा किया गया है।

Shri Veda purana varnitaa - You are the one who has been described by the Vedas and the Puraanas.

1007. **श्रीजरा-जन्म-विनाशिनी -** आप वह है जो पुनर्जन्मों और वृद्धावस्था का विनाश करती है।

Shri Jaraa-janma-vinaashini - you are the one who destroys repeated births and oldage.

1008. **श्रीदेह-शुद्धि-करी -** आप वह है जो जीवों को कुण्डलिनी जागृती द्वारा शुद्ध करती हैं।

Shri Dehashuddhi kari - You are the one who purifies the beings (through the Kundalinis)

1009. **श्रीपंच-भूतैक-दीप्ता -** आप वह है जिन्होंने साधकों की कुण्डलिनी जागृती द्वारा पंच महाभूतों को प्रकाशित किया है।

Shri Pancha bhootaika deeptaa - You are the one who has enlightened the five elements (through the Kundalini of the seeker.)

1010. **श्रीभेदान्तका -** आप वह है जो पृथक्ता, विभाजन और विवाद का अन्त करती है।

Shri Bhedaantakaa - You are the one who ends discriminations, divisions and arguments.

1011. **श्रीआधार-निलया -** जो विश्व को आधार देते हैं उन सब का निवास आप हैं।

Shri Aadhaar-nilayaa - You are the abode to all those who support the universe.

सर्वाधिकार सुरक्षित

बिना पूर्व आज्ञा के इस पुस्तक के किसी भी भाग की प्रतिलिपि या किसी भी रूप में प्रसारण वर्जित है। कोई भी व्यक्ति अनधिकृत रूप से यदि इसका प्रकाशन करता है तो उस पर हानिपूर्ति का दावा किया जाएगा।

visit us at www.sahajayoga.org to know more about Sahaja Yoga.